डाक पंजीयन नं. 99/2021-23

E-mail:-aadhuniksamachar2014@gmail.com

website:www.aadhuniksamachar.com

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

हिन्दी साप्ताहिक संस्थापकः- श्री महेन्द्र अरोरा

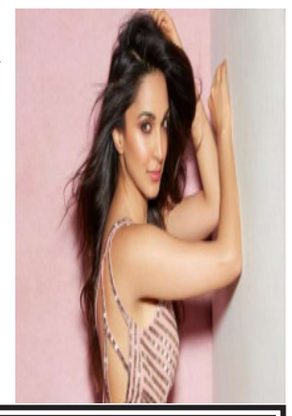

वर्ष-11 अंक-09 | प्रयागराज, रविवार 27 फरवरी 2022 से शनिवार 05 मार्चा 2022 तक | पृष्ठ- 8 | मूल्य: 3 रूपये

सिनेमा :शाहिद कपूर की बर्थडे पार्टी में इतनी महंगी सैंडल पहनकर पहुंची -पे०8

ब्रीफ न्यूज

भारतीयों के पहले जत्थे की वापसी में बड़ी कामयाबी, विदेश मंत्रालय ने कहा- सभी सीमा पार कर रोमानिया के सुशिवा पहुंचे

नई दिल्ली। यूक्रेन में फंसे भारतीयों के पहले जत्थे की स्वदेश वापसी में बड़ी कामयाबी मिली है। यूक्रेन से भारतीय नागरिकों का पहला जत्था सीमा पार कर रोमानिया पहुंच गया है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने बताया कि यूक्रेन से भारतीय नागरिकों का पहला जत्था सीमा पार कर रोमानिया के सुशिवा पहुंचा है। अब सुशिवा से भारतीय विदेश मंत्रालय की टीम अब आगे की यात्रा के लिए उन्हें बुखारेस्ट की यात्रा की सुविधा प्रदान करेगी। वहीं, पोलैंड के रास्ते यूक्रेन से निकलने की मंशा रखने वाले भारतीयों के लिए सरकार के तरफ से एडवाइजरी जारी की है। इसमें संबंधित दूतावास कार्यालयों के फोन नंबर जारी कर, निकसी के लिए उनसे संपर्क करने के लिए कहा गया है। एडवाइजरी में पूर्व जारी किए निर्देशों को दोहराते हुए कहा गया है कि 'पोलैंड-यूक्रेन सीमा पर सार्वजनिक वाहन यानी बस या टैक्सी से पहुंचने वाले भारतीय नागरिकों को सलाह दी जाती है कि वे शेहिनी-मेड्यका सीमा क्रांसिग पर जाएं। पोलैंड सरकार लोगों को केवल शेहिनी-मेड्यका सीमा बिंदु के माध्यम से पैदल सीमा पार करने की अनुमति दे रही है।

दिल्ली-एनसीआर समेत देश के कई हिस्सों में बिगड़ा मौसम

नई दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर समेत देश के कई हिस्सों में मौसम बदल गया है। शनिवार सुबह तेज हवाओं के कारण तापमान कम हो गया है। पश्चिमी विक्षोभ के असर से शुक्रवार शाम दिल्ली में मौसम का मिजाज बदल गया। कई इलाकों में तेज हवा के साथ बादल गरजे और हल्की बारिश हुई। हालांकि, इससे ठंडक में कोई खास इजाफा नहीं हुआ। शनिवार को भी कमोबेश ऐसा ही मौसम बने रहने की संभावना हैं। शुक्रवार को दिनभर मौसम साफ रहा और धूप भी खिली। अधिकतम तापमान 27.9 डिग्री सेल्सियस (इस सीजन का सर्वाधिक), जबकि न्यूनतम तापमान 12.5 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। हवा में नमी का स्तर 44 से 95 फीसदी दर्ज हुआ। बारिश शाम साढ़े पांच से रात साढ़े आठ बजे तक सफदरजंग में 1.6 मिमी और पालम में 3.2 मिमी बारिश दर्ज की गई। भारतीय मौसम विभाग के मुताबिक बरवाला, हांसी, महम, जींद, चरखी दादरी, मट्टनहेल, झज्जर, फारुखनगर, कोसली, महेंद्रगढ़, सोहाना, रेवाड़ी, बावल, नूंह (हरियाणा), भिवाड़ी (राजस्थान) में हल्की से मध्यम तीव्रता के साथ बारिश होने की संभावना है।

पीएम मोदी ने रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता पर दिया जोर, कहा- हथियारों की लंबी खरीद प्रक्रिया की चुनौती और भ्रष्टाचार बंद करने के लिए मेक इन इंडिया जरूरी

नई दिल्ली। वैश्विक सुरक्षा परिदृश्य में हो रहे बदलावों के मद्देनजर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल करने का आह्वान करते हुए कहा कि इसके जरिये ही हमारी रक्षा प्रणाली में विशिष्टता और अनोखापन लाया जा सकता है। इसे सुरक्षा का मूल सिद्धांत बताते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि 10 देशों के पास एक ही तरह की रक्षा प्रणाली और उपकरण होंगे तो सेनाओं की अपनी विशिष्टता नहीं होगी। देश में रक्षा उत्पादन की तस्वीर बदलने पर जोर देते हुए पीएम ने कहा कि सुरक्षा के मूल सिद्धांत के लक्ष्य को हासिल करने के लिए जरूरी है कि रक्षा उपकरणों को देश में ही विकसित किया जाए। विशिष्ट और अनोखी रक्षा प्रणाली में ही दुश्मन को सहसा चौंका देने वाले तत्व होते हैं। रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के लिए आम बजट में तय रूपरेखा पर अमल को लेकर बुलाए गए वेबिनार को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि बजट देश में ही रक्षा अनुसंधान, डिजाइन और विकास से लेकर उत्पादन का जीवंत इको-सिस्टम विकसित करने का ब्लू प्रिंट है। इसीलिए रक्षा बजट के लगभग 70 फीसदी हिस्से को केवल स्वदेशी रक्षा उद्योग के लिए रखा गया है। रक्षा मंत्रालय ने अब तक 200 से अधिक रक्षा उपकरणों की सूची जारी की है, जिन्हें अब विदेश से नहीं खरीदा जाएगा। स्वदेशी कंपनियों से रक्षा खरीद के लिए 54 हजार करोड़ रुपये के अनुबंध हो चुके हैं। करीब साढ़े चार लाख करोड़ रुपये से अधिक के उपकरणों की खरीद विभिन्न चरणों में होगी।।' दने की लंबी प्रक्रिया से होने वाले नुकसान को रेखांकित करते हुए मोदी ने आत्मनिर्भर भारत और मेक इन इंडिया को ही इसका समाधान करार दिया। बताया जा रहा है कि हथियार खरीद की प्रक्रिया इतनी लंबी होती है कि जब तक वह आता है, तब तक पुराना पड़ जाता है। रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के महत्व को समझते हुए अहम निणय लेने की सेनाओं की पहल की मोदी ने प्रशंसा की। कहा कि हथियार व उपकरण हासिल करने में जवानों के गौरव और उनकी भावना को ध्यान में रखने की जरूरत है। यह तभी संभव होगा, जब हम इन क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनेंगे। साइबर सुरक्षा की बढ़ती चुनौती पर प्रधानमंत्री ने कहा कि साइबर सुरक्षा

अब सिर्फ डिजिटल दुनिया तक सीमित नहीं है, बल्कि राष्ट्र की सुरक्षा का विषय बन चुका है। अपनी अदम्य आइटी शक्ति को हम अपने रक्षा क्षेत्र में जितना ज्यादा इस्तेमाल करेंगे, सुरक्षा को लेकर उतने ही ज्यादा आश्वस्त होंगे। विदेश से रक्षा खरीद टेंडर में रक्षा निर्माताओं के बीच होड़ का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि पहले जो सामान खरीदा जाता था, उसमें अक्सर तरह-तरह के आरोप लगते थे। कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्धा से आशंकाएं भी पैदा होती है और भ्रष्टाचार के दरवाजे भी खुलते है। आत्मनिर्भर भारत अभियान से हमें इस तरह की अनेक समस्याओं का समाधान मिलेगा। प्रधानमंत्री ने इस दिशा में आर्डनेंस फैक्ट्रियों की सराहना करते हुए कहा कि हमने पिछले पांच-छह वर्षो में रक्षा निर्यात छह गुना बढ़ाया है। 75 से अधिक देशों को मेक इन इंडिया रक्षा उपकरण और सेवा प्रदान की जा रही है।रक्षा निर्माण के लिए 350 से भी अधिक नए औद्योगिक लाइसेंस जारी किए जा चुके है। बजटीय प्रविधानों को समयबद्ध तरीके से कार्यान्वित करने के लिए पीएम ने नए विचारों के साथ सभी संबंधित पक्षों से आगे आने का आग्रह किया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शुक्रवार को कहा कि रक्षा मंत्रालय अपने बजट खर्च की निगरानी के लिए एक पैनल बनाएगा। इसमें तीनों सेनाओं के प्रतिनिधियों को शामिल किया जाएगा, ताकि बजट का सही तरीके से उपयोग किया जा सके। उन्होंने एक वेबिनार के दौरान कहा कि इस बार बजट में आयात को कम करने और सशस्त्र बलों को स्वदेशी तकनीक से आधुनिक बनाने की प्रतिबद्धता पर और बल दिया गया है।

यूक्रेन में फंसे भारतीय छात्रों को लेकर रोमानिया से रवाना हुअ एअर इंडिया का पहला विमान

नई दिल्ली। यूक्रेन से रोमानिया पहुंचे भारतीय छात्रों की वतन वापसी शुरू हो गई है। यूक्रेन से निकाले गए 219 भारतीयों के साथ एअर इंडिया की मुंबई के लिए पहली उड़ान रोमानिया से रवाना हो गई है। बता

दें कि ये फ्लाइट शनिवार सुबह ही मुंबई से बुखारेस्ट शहर गई थी और इस फ्लाइट के रात 9 बजे तक मुंबई वापिस आने का अंदेशा है। दूसरी तरफ विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि यूक्रेन से निकाले गए 219 भारतीयों के साथ मुंबई के लिए पहली उड़ान रोमानिया से रवाना हुई है। उन्होंने कहा कि हमारी टीमें चौबीसों घंटे काम कर रही हैं और मैं व्यक्तिगत रूप से निगरानी कर रहा हूं। इससे पहले रोमानिया एयरपोर्ट पर एक छात्र ने कहा कि यूक्रेन और रोमानिया में भारतीय दूतावास हमें वापस भारत लाने के लिए यूक्रेन से हमें निकाल रहे हैं। जब से हम यहां पहुंचे हैं, रोमानिया में भारतीय दूतावास हर चीज का ध्यान रख रहा है। इधर विदेश राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी ने कहा कि भारत अपने नागरिकों की सुरक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता पर कायम है। जैसा कि यूक्रेन का हवाई क्षेत्र बंद है, हम अपने नागरिकों को निकालने के लिए भूमि मार्गी से लाने का उपयोग भी कर रहे हैं और अन्य देशों के साथ काम कर रहे है। पीएम इस मुद्दे पर स्पष्ट है कि मंत्रालयों को जन-केंद्रित होना चाहिए।

स्वास्थ्य क्षेत्र में बजट घोषणाओं पर वेबिनार के दौरान पीएम मोदी ने कहा सरकार 'एक भारत, एक स्वास्थ्य' की भावना से काम कर रही है

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी केन्द्रीय बजट में स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए आज एक वेबिनार को संबोधित कर रहे हैं। यह आम बजट-2022 में स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए किए गए प्रावधानों पर आधारित है। पीएम मोदी ने आज सुबह 10 बजे वेबिनार किया। वेबिनार में स्वास्थ्य मंत्रालय के प्रख्यात वक्ताओं और

विशेषज्ञों के साथ पैनल चर्चा की जा रही है, जिसमें स्वास्थ्य क्षेत्र के विभिन्न कार्यक्रमों और योजनाओं में विभिन्न हितधारकों को शामिल किए जाने पर भी बातचीत होगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए वेबीनार को संबोधित करते हुए कहा, 'हम भारत में एक ऐसा स्वास्थ्य ढांचा बनाना चाहते हैं जो बड़े शहरों से परे हो। 'एक भारत, एक स्वास्थ्य' की भावना के साथ ब्लाक, जिला स्तर पर गांवों में आवश्यक स्वास्थ्य सुविधाएं लाई जाएंगी। निजी क्षेत्र उनके रखरखाव और उनन्यन के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।' पीएम मोदी ने आगे कहा, हमारा फोकस हेल्थ के साथ-साथ वेलनेस पर भी है। तीन कारकों को ध्यान में रखा गया (बजट में) जिसमें आधुनिक बुनियादी ढांचे और मानव संसाधन विस्तार, अनुसंधान को प्रोत्साहित करना और आधुनिक और भविष्य की तकनीक को अपनाना शामिल है।' केंद्रीय स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्रालय ने एक बयान जारी कर बताया प्रधानमंत्री द्वारा संबोधित किए जाने वाले इस वेबिनार में तीन सत्र रखे गए है। इनमें आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन, ई संजीवनी और टेलीमेंटल स्वास्थ्य कार्यक्रम शामिल हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय ने बयान में बताया कि इस वेबिनार का उद्देश्य स्वास्थ्य क्षेत्र के विभिन्न कार्यक्रमों व योजनाओं में विभिन्न हितधारकों को शामिल करना है। केन्द्रीय बजट में स्वास्थ्य क्षेत्र के प्रावधानों पर आज होने वाले वेबिनार में विभिन्न हितधारकों के साथ-साथ स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, नीति आयोग, स्टार्टअप्स, उद्योग मंचों, शिक्षाविदों आदि के प्रख्यात वक्ताओं और विशेषज्ञों के साथ यह पैनल चर्चा होगी। बता दें कि समापन सत्र की अध्यक्षता केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री डा मनसुख मंडाविया और केंद्रीय आयुष मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल द्वारा संयुक्त रुप से की जाएगी।

भारत का संचयी कोविड 19 टीकाकरण कवरेज 177.17 करोड़ से अधिक, जानें क्या है रिकवरी रेट का हाल

नई दिल्ली। भारत वैश्विक महामारी कोरोना वायरस की तीसरी लहर में, सुधार के पड़ाव में है। देश में लगातार कोरोना वायरस के मामले कम हो रहे हैं। वहीं टीकाकरण अभियान तेजी से आगे बढ़ रहा है। आज सुबह 7 बजे तक की अनंतिम

रिपोर्टों के अनुसार, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि पिछले 24 घंटों में 28.29 लाख (28,29,582) से अधिक वैक्सीन खुराक के प्रशासन के साथ, भारत में अब तक 177.17 (1,77,17) करोड़ से अधिक लोगों को टीका लगाया जा चुका है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि देश में 177.17 करोड़ से अधिक लोगों को 2,02,74,848 सत्रों के माध्यम से टीकाकरण दिया गया है। वहीं मंत्रालय ने कहा कि वायरस से 23 हजार 598 मरीज ठीक हुए हैं और ठीक होने वाले रोगियों की संचयी संख्या (महामारी की शुरुआत के बाद से) अब 4,22,70,482 है। वहीं भारत में रिकवरी रेट का दर 98.52 फीसद पर पहुंच गया है। लगातार 20 दिनों से कोरोना वायरस के मामलों में कमी देखने को मिल रही है। पिछले 24 घंटे में 11,499 नए मामले सामने आए। भारत का सक्रिय केसलोड वर्तमान में 1,21,881 पर है। देश में कुछ सक्रिय मामलों की सकारात्मक 0.28 फीसद है।स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा बताया गया कि राष्ट्रीय कोविड 19 के कुल सक्रिय मामलों की संख्या 1,21,881 यानी कि 0.28 फीसद दर है। वहीं देश भर में परीक्षण क्षमता का विस्तार जारी है। पिछले 24 घंटों में कुल 11,36,133 परीक्षण किए गए। भारत ने अब तक 76.57 करोड़ (76,57,35,314) संचयी परीक्षण किया जा चुका है। जबकि देश भर में परीक्षण क्षमता को बढ़ाया गया है, देश में साप्ताहिक सकारात्मकता दर वर्तमान में 1.36 फीसद है और दैनिक सकारात्मकता दर 1.01 फीसद बताया गया है।

यूक्रेन संकट के बीच फंसे भारतीय छात्रों से केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा- घबराने की जरूरत नहीं

नई दिल्ली। रूस यूक्रेन पर हमला बोल चुका है, रूसी सेना यूक्रेन पर लगातार ताबड़तोड़ हमले कर रही है, इस भयंकर युद्ध का आज तीसरा दिन है। अब तक रूसी सेना ने यूक्रेन

के कई ठिकानों पर अपना कब्जा कर लिया है। वहीं यूक्रेन की सेना के कई ठिकानों को रूसी सैनिकों ने बर्बाद कर दिया है। इन सबके बीच हजारों भारतीय छात्र यूक्रेन में फंसे हुए है। जिन्हें स्वदेश वापस लाने के लिए भारत सरकार पूरी तरह से लगी हुई है। देशभर के अलग-अलग शहरों से यूक्रेन में फंसे ढेरों छात्र और उनके परिजन बेहद चिंतित है, जिस संदर्भ में केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने छात्रों और परिजनों को आश्वासन देते हुए कहा कि घबराने की जरूरत नहीं है, सभी छात्र दूतावास के संपर्क में बने रहे। केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने यूक्रेन संकट के बीच, फंसे भारत के हजारों छात्रों के जल्द से जल्द भारत वापस आने पर छात्रों और परिजनों को आश्वासन देते हुए कहा, 'यूक्रेन में छात्रों से उनके माता-पिताओं से और विशेष रूप से जम्मू-कश्मीर से काल प्राप्त हो रही है। विदेश मंत्रालय लगातार आवश्यक व्यवस्था कर रहा है। किसी को घबराने की ज़रुरत नहीं है। छात्र दूतावास के संपर्क में रहें और हर एडवाइजरी का पालन करें।

भारत में पिछले 24 घंटों में कोरोना वायरस के 11,499 नए मामले आए सामने, 255 मरीजों की मौत

नई दिल्ली। भारत में कोरोना वायरस महामारी की तीसरी लहर सुधार के पड़ाव में है। वायरस के नए मामले दिन-ब-दिन कम दर्ज किए

जा रहे है। देश में पिछले 24 घंटों में कोरोना वायरस संक्रमण के 11 हजार 499 (11,499) नए मामले सामने आए है। वहीं वायरस से 23 हजार 598 मरीज ठीक हुए हैं। इस दौरान 255 मरीजों की मौत हो गई है। इसी के साथ देशभर में नए मामलों की संख्या बढ़कर 4 करोड़ 29 लाख 5 हजार 844 (42,905,844) हो गई है। देशभर में बीते 24 घंटों में कोरोना वायरस के ताजा आंकड़े आज सुबह 8:00 बजे अपडेट किए गए है, जिसमें बताया गया है कि कोरोना वायरस के 11,499 के नए मामले सामने आए हैं। जबकि इस घातक वायरस से 255 लोगों की मौत हो गई है, जिसके साथ ही अब तक मरने वालों की संख्या बढ़कर 5,13,481 हो गई है। स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा बताया गया कि राष्ट्रीय कोविड-19 के कुल सक्रिय मामलों की संख्या 1,21,881 यानी कि 0.28 फीसद दर है। वहीं बात यदि दैनिक सकारात्मक दर की करें तो यह 1.01 फीसद पर है, जबकि साप्ताहिक सकारात्मकता दर 1.48 फीसद दर्ज किया गया है। जबकि देशभर में कोरोना वायरस से ठीक होने वाले मरीजों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। ताजा आंकड़ों के अनुसार, 4,22,70,482 मरीज अब तक ठीक हुए हैं। वहीं राष्ट्रव्यापी कोविड-19 टीकाकरण अभियान के तहत अब तक देश में प्रशासित खुराक 1,77,17,68,379 करोड़ से अधिक हो गई है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सरकार से अपील, यूक्रेन के खिलाफ सैन्य हमला रोकने के लिए रूस पर बनाएं दबाव

नई दिल्ली। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) ने केंद्र सरकार से कहा है कि वह यूक्रेन में सैन्य हमला रोकने के लिए रूस पर दबाव बनाए। संघ ने वैश्विक नेताओं, राजनयिकों और समाज के अन्य

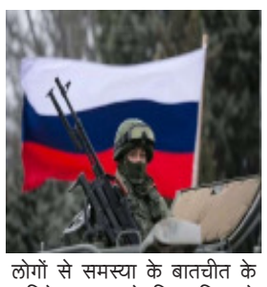

लोगों से समस्या के बातचीत के जरिये समाधान के लिए पुतिन को मनाने की अपील की। शुक्रवार को आरएसएस की राष्ट्रीय कार्यकारणी के सदस्य इंद्रेश कुमार ने यूक्रेन के खिलाफ सैन्य हमला तुरंत रोकने के लिए रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन पर दबाव बनाने को लेकर सरकार से अन्य देशों से हाथ मिलाने की भी अपील की। संघ के वरिष्ठ प्रचारक ने एक संदेश में कहा कि युद्ध से किसी समस्या का समाधान नहीं निकलता। इससे मानवता को नुकसान पहुंचता है। भारत शांति चाहता है। ऐसी कोई स्थिति नहीं बननी चाहिए जो युद्ध को बढ़ावा देती हो। युद्ध की विभीषिका काफी भयावह, दर्दनाक और असहनीय होती है। राष्ट्रीय क्रिश्चन मंच और राष्ट्रीय मुस्लिम मंच के संस्थापक इंद्रेश कुमार ने मुस्लिम और ईसाई समुदाय के नेताओं से भी अपील की कि वे रूस को शांति, सौहार्द और भाइचारे का मार्ग अपनाने की अपील करें। युद्ध किसी समस्या का हल नहीं है। इसमें हजारों निदीष लोग मारे जाते है और लाखों लोग बेघर हो जाते है। करोड़ों का आर्थिक नुकसान होता है। बता दें कि गुरुवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी यूक्रेन मसले पर रूसी राष्ट्रपति से बातचीत कर रूस और उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) समूह के बीच मतभेदों को सिर्फ ईमानदार और गंभीर वार्ता से सुलझाने पर जोर दिया था।

सपा ने अंतिम दिन चुनाव प्रचार में झोंकी ताकत नगर सचिव मोहम्मद तहजीब के नेतृत्व में करेली के पहलवान चौराहे पर सपाइयों का उमड़ा जनसैलाब

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

प्रयागराज । समाजवादी पार्टी के शहर दक्षिणी प्रत्याशी रईस चन्द्र शुक्ला के समर्थन मे चुनाव प्रचार के अन्तिम दिन हज़ारों संख्या मे मोटरसाइकिल सवार लाल टोपी और

सपाई झण्डे मे लैस सपा नेता और समर्थकों ने सड़कों व गलियों मे भ्रमण कर अन्तिम समय पर ताकत का ऐहसास कराया।वहीं करैली के करामत चौकी तीराहे पर महानगर सचिव मो0तहज़ीब अली के संयोजन मे विशाल जनसभा मे पूर्व सासंद सलीम शेरवानी ,पूर्व विधायक हाजी परवेज़ अहमद ,महानगर अध्यक्ष सै0इफ्तेखार हुसैन ,पूर्व नगर अध्यक्ष अब्दुल सलमान ,वरिष्ठ सपा नेता विनोद चन्द्र द्वबे ,पूर्व नगर अध्यक्ष मुश्ताक़ काज़मी ,बब्बन द्वबे ,हाजी सलामत उल्ला ,वरिष्ठ सपा नेत्रि सबीहा मोहानी आदि नेताओं ने भाजपा पर प्रहार करते हुए प्रधानमंत्री मोदी और मुख्यमंत्री योगी की बखिया उधेड़ी।हाजी परवेज़ ने मंच साझा करते हुए टिकट न मिलने की नाराज़गी दूर करते हुए अखिलेश यादव के रथ यात्रा के दौरान दिए गए सम्मान से गदगद होते हुए कहा की अब दक्षिणी से रईस चन्द्र शुक्ला की ऐतिहासिक जीत का सेहरा बंधने से कोई रोक नहीं सकता।शहर दक्षिणी प्रत्याशी रईस चन्द्र शुक्ला ने वायदों की झड़ी लगाते हुए कहा की अखिलेश यादव ने अपने घोष्णा पत्र मे जो वायदे किए हैं उसका पालन तो सपा सरकार बनने पर होगा ही लेकिन मेरे द्वारा स्वयं से शहर दक्षिणी की जनता के लिए रोज़गार के अवसर मुहय्या कराए जायँगे। फैक्ट्रियों और शिक्षा के लिए उच्चकृत स्कूल कालेज की स्थापना अपने संसाधन से करुँगा।शहर दक्षिणी की खस्ताहाल सड़कों को दुरुस्त कराना मेरी पहली प्राथमित्ता होगी।जनसभा की अध्यक्षता मुश्ताक़ अहमद काज़मी व संचालन महानगर उपाध्यक्ष मोइन हबीबी ने किया।जनसभा मे कोई स्टार प्रचारक न होने के बाद भी हज़ारों लोगों का जमावड़ा सभा स्थल पर जुटा रहा।बाईक रैली और जनसभा के माध्यम से रइस चन्द्र शुक्ला के हक़ मे माहौल बनाने को सपा के तमाम दिग्गज नेताओं के साथ सभी चौदह प्रकोष्ठ के पदाधिकारीयों ने जनता के बीच मज़बूती का प्रदर्शन किया।जनसभा व बाईक रैली में महानगर अध्यक्ष सै0इफ्तेखार हुसैन पूर्व सांसद सलीम इक़बाल शेरवानीपूर्व विधायक हाजी परवेज़ अहमद पूर्व नगर अध्यक्ष अब्दुल सलमान पूर्व नगर अध्यक्ष मुश्ताक़ काज़मी वरिष नेता विनोद चन्द्र द्वबे ,क़मरुल हसन सिद्दीकी ,बब्बन द्वबे ,तारिक सईद अज्जू ,महबूब उसमानी ,तहज़ीब अली ,मो0शारिक़ ,नाटे चौधरी ,नगर उपाध्यक्ष महेन्द्र निषाद ,मोइन हबीबी ,मो0ग़ौस ,हाजी सलामत उल्ला ,सबीहा मोहानी ,मंजू यादव ,अब्बास नक़वी ,पार्षद फज़ल खान ,पार्षद अब्दुल समद ,पार्षद आज़ाद अहमद ,सैफ फरीदी ,शाहिद प्रधान ,शारिक़ उमर ,सुशील कुशवाहा ,सन्दीप शुक्ला ,आशीष शुक्ला ,मनोज पाण्डेय ,फैसल जार्डन ,ज़ामिन हसन ,मधुकर मिश्रा ,शिव कुमार तिवारी ,मो0ज़ैद ,लालजी यादव ,सिबतैन बब्लू ,अकबर खान ,सवीता कैथवास ,इशरत जहाँ ,वंदना राय ,हुमा कमाल ,ज्योती देवी ,सुनील कुमार कुशवाहा ,अब्दुल्ला तेहामी समेत अन्य सपा नेता उपस्थित रहे।

रैली मैं जनसैलाब देख गदगद दिखे मुजतबा

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। फूलपुर के लंका मैदान में सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव की रैली में अप्रत्याशित भीड़ से गदगद फूलपुर के सपा प्रत्याशी

हाजी मोहम्मद मुजतबा सिद्दीकी ने बताया। कि राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए मनोबल ऊंचा रखने का मंत्र दिया। मीडिया के समक्ष राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा मिले सम्मान से गदगद दिखे। मुजतबा सिद्दीकी ने कार्यकर्ताओं से 2 दिन हिम्मत से डटकर पार्टी के पक्ष में मेहनत करने की हिदायत दी। आत्मविश्वास से लबरेज उन्होंने कहा। कि फूलपुर की जनता ने जो प्यार व सम्मान थोड़े समय में मुझे दिया है। उसका मैं कर्जदार रहूंगा और समय आया तो उस कर्ज को उतारने का भरपूर प्रयास करूंगा। मौके पर अतीकुर रहमान, सपा जिला अध्यक्ष नसीर उद्दीन राईन, जियाउद्दीन अहमद, परवेज भाई, लाल पति भारतीया, अर्शद उल्ला, शहजादे पहलवान, कुमार मंगल, सै0 सुहैल अहमद अरकान उर रहमान आदि लोग मौजूद रहे।

विधानसभावार टेलीफोन नम्बरों पर दर्ज करें शिकायतें -जिला निर्वाचन अधिकारी

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ0 नितिन बंसल ने बताया कि विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 को सकुशल,निष्पक्ष, शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने के लिये डिस्ट्रिक्ट कॉन्टेक्ट सेन्टर कन्ट्रोल रूम की स्थापना जिला सेवायोजन कार्यालय में की गई है। उन्होंने बताया कि विधानसभावार टेलीफोन नम्बरों निर्वाचन सम्बन्धी शिकायत दर्ज करा सकते है। उन्होने बताया है कि विधानसभा प्रतापगढ़ के लिये 05342-220431, विश्वनाथगंज के लिये 05342-220361, रामपुर संग्रामगढ़ के लिये 05342 -220371,कुण्डा के लिये 05342-220391, बाबागंज के लिये 05342- 220375, रानीगंज विधानसभा के लिये 05342-220376 एवं पट्टी विधानसभा के लिये 05342 -297679 नम्बर प्रदान किये गये है, इन नम्बरों पर अपने-अपने विधानसभा के किसी भी प्रकार के चुनाव सम्बन्धित शिकायत दर्ज करा सकते है, कन्ट्रोल रूम में प्राप्त शिकायतों का निस्तारण तत्काल कराया जायेगा। जनपद प्रतापगढ़ में कहीं से भी टोल फ्री नम्बर 1950 पर कॉल करके चुनाव सम्बन्धी सभी समस्यायें दर्ज करायी जा सकती है जिसका निस्तारण कन्ट्रोल रूम से तत्काल कराया जायेगा।

दिव्य कुंभ और भव्य कुंभ से भाजपा ने प्रयागराज को दिलाई उसकी खोई हुई पहचान योगी आदित्यनाथ

दमदार सरकार के लिए पहले करें, मतदान फिर जलपानः योगी आदित्यनाथ

(आधुनिक समाचार सेवा)
अनुराग केसरवानी

प्रयागराज। उत्तर प्रदेष के सभी विधानसभा सीटों पर एक बार फिर से कमल खिलाने के लिए चुनाव प्रचार की खुद कमान संभाल रहे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ प्रयागराज की सड़कों पर भव्य रोड षो करने के बाद प्रयागराज के ऐतिहासिक लोकनाथ चैराहे पर पहुंचे। जहां उन्होंने गुंडों, माफियाओं को संरक्षण देने वाली पाटियों को जड़ से उखाड़ते हुए प्रयागराज शहर दक्षिणी विधानसभा सीट से भाजपा के प्रत्याषी नन्द गोपाल गुप्ता नन्दी को विजयी बनाने की अपील की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि विकास कार्य कराने के साथ ही गुंडों माफियाओं पर बुल्डोजर चलाने वाली दमदार सरकार चाहिए तो फिर प्रयागराज षहर दक्षिणी विधानसभा सीट से भाजपा प्रत्याषी नन्द गोपाल गुप्ता नन्दी को जीताना जरूरी है। ऐतिहासिक लोकनाथ चैराहे पर आयोजित जनसभा में प्रयागराज की जनता ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का भव्य स्वागत एवं अभिनन्दन किया। भाजपा प्रत्याषी व कैबिनेट मंत्री नन्द गोपाल गुप्ता नन्दी व महापौर श्रीमती अभिलाशा गुप्ता नन्दी के साथ ही अन्य नेताओं ने मुख्यमंत्री का स्वागत व अभिनन्दन किया। लोकनाथ चैराहे पर स्थिति ऐतिहासिक नीम के पेड़ के नीचे आयोजित जनसभा में उत्तर प्रदेष के कर्मयोगी मुख्यमंत्री आदरणीय योगी आदित्यनाथ जी ने कहा कि नन्द गोपाल गुप्ता नन्दी जी के समर्थन में अपील करने के लिए आज आप सब के बीच में उपस्थित हुआ हूं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रयागराज को उसकी पहचान भव्य कुंभ और दिव्य कुंभ से भारतीय जनता पार्टी की डबल इंजन की सरकार ने दिया है। जबकि सपा, बसपा, कांग्रेस ने प्रयागराज की ऐतिहासिक भूमि को माफियाओं और अपराधियों के हवाले कर दिया था। और माफियाओं ने नन्दी जी को भी नहीं बक्षा था। माफिया सत्ता में हावी होकर किस कदर कहर बरपाते थे। माफियाओं के लिए हम लोगों ने एक नया यंत्र विकसित किया है, जो प्रयागराज की सड़कों को भी बनाता है और अपराधियों की सम्पत्ति को धराषायी भी करता है। एक्सप्रेस वे बना कर दिल्ली और प्रयागराज को सीधे जोड़ने का काम कर रहे हैं। नन्दी जी जिस विभाग के मंत्री हैं, एयर कनेक्टिविटी में प्रयागराज से इतनी हवाई सवाएं कभी नहीं थी, जो आज के समय आपको मिल रही है। हर प्रमुख षहर से प्रयागराज जुड़ा हुआ है। कोरोना में फ्री टेस्ट, फ्री में

उपचार और फ्री में वैक्सीन लोगों को दिया गया। अगर सपा, बसपा की सरकार होती तो क्या होता, वैक्सीन भी ब्लैक हो जाती। फ्री वैक्सीन है, तो डबल इंजन की सरकार में डबल डोज राषन भी हर गरीब को मिल रहा है न। सुना है कि 10 मार्च के बाद सपा, बसपा के कई नेताओं ने विदेष भागने के लिए टिकट बुक करा लिया है। लेकिन आपको आष्वत करने के लिए आया हूं कि दस मार्च के बाद डबल इंजन की सरकार को आने दीजिए, अभी तो डबल डोज राषन का, माताओं को उज्जवला योजना के लाभाथिर्यों को होली और दीपावली पर रसोई गैस का सिलेंडर भी फ्री में मिलेगा। 60 वर्श से अधिक उम्र के हर माता बहन को परिवहन निगम की हर बस में फ्री में यात्रा कराया जाएगा। युवा जो प्रदेष की उर्जा का श्रोत है, हर परिवार के एक नौजवान को नौकरी रोजगार से जोड़ने का काम किया जाएगा। मुख्यमंत्री सुमंगला योजना के तहत बेटियों को 15000 से 30 हजार रूपए दिया जाएगा। सपा बसपा की सरकार जनता को लूटती थी, अराजकता फैलाती थी, पेषेवर गुंडों और माफियाओं को अपना षागिर्द बना कर के अत्याचार फैलाती थी। आज सुरक्षा, विकास और सुषासन का जो माहौल मिला है, वह डबल इंजन की सरकार के कारण ही सम्भव हुआ है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में जब हमारे विधायक जीतते हैं तो वह दमदार सरकार बनती है और दमदार सरकार विकास भी कराती है और बुल्डोजर भी चलवाती है। अब विधानसभा चुनाव के दौरान उत्तर प्रदेष की जनता को तय करना है कि उसे भारतीय जनता पार्टी की दमदार सरकार चाहिए या अराजकता फेलाने वाली गुंडों की सरकार। दमदार सरकार के लिए प्रयागराज षहर दक्षिणी विधानसभा क्षेत्र से नन्दी जी का जितना जरूरी है। इसलिए 27 फरवरी को कमल के फूल पर बटन दबा कर नन्दी जी को भारी मतों से विजयी बनाएं और विधानसभा भेजें। जिसके लिए पहली पहली षर्त बस यही है कि 27 फरवरी को सुबह सात बजे से, पहले मतदान, फिर जलपान के इस नारे को अपनाएंगे। महापौर श्रीमती अभिलाशा गुप्ता नन्दी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर पूर्व मंत्री नरेंद्र कुमार गौड़, महानगर अध्यक्ष गणेष केसरवानी, मंडल अध्यक्ष दिनेष विष्वकर्मा, व्यापारी नेता विजय अरोरा, अरूण केसरवानी आदि मौजूद रहे। इस अवसर पर सचिव लोहिया वाहिनी समाजवादी पार्टी कृश्ण बहादुर सिंह ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की।

समाजवाद की सोच ब्राह्मणों की देनः प्रो.अभिषेक मिश्र

(आधुनिक समाचार सेवा)
राकेश मिश्रा

बारा (प्रयागराज)। विधानसभा चुनाव के पांचवे चरण के अंतिम दिन अजय भारती मुनन के समर्थन में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता

प्रो.अभिषेक मिश्रा ने लालापुर चौराहे पर नुक्कड़ सभा की। सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि समाजवाद की सोच सर्वे भवन्तु सुखिनः पर आधारित है। समाजवादी लोग बिना भेदभाव के समस्त जनता को विकास के पथ पर ले चलने का भाव रखने वाले हैं। भाजपा पर हमला करते हुए कहा कि सत्ता के नशे में चूर लोगों ने रंगों को बांट दिया, लाल रंग से नफरत करने लगे। जबकि माताओं बहनों के मांग का सिंदूर लाल, ब्राह्मण के माथे का टीका लाल, मानव के रगों में दौड़ रहा खून लाल एवम बजरंगबली का रंग भी लाल होता है। भाजपा वालों ने समाज मे नफरत फैलाने का काम किया है। ब्राह्मणों को परशुराम का वंशज बताते हुए कहा कि ताकत होने के साथ विवेक का होना भी जरूरी है। क्षेत्र के लोगों को भरोसा दिया कि बारा में सपा की जीत के बाद पुनः आऊंगा और आपके दुख दर्द के साथ ही क्षेत्र के सर्वागीण विकास करने का प्रयास करूंगा। खुशी दुबे का जिक्र करते हुए भाजपा द्वारा किये गए ब्राह्मणों पर अत्याचार को न भूलने की नसीहत दी। सपा के घोषणा पत्र के बारे में भी बताया। इस मौके पर क्षेत्र के लालमणि पाण्डेय, इन्द्रनाथ मिश्रा, शिवनारायण मिश्रा, राघवेन्द्र शुक्ला, अरविन्द मिश्रा, भोलानाथ गर्ग, मुनन पांडेय, अखिलेश द्विवेदी, दिनेश द्विवेदी,नरेंद्र शुक्ल, सत्यभामा मिश्रा, धर्मेन्द्र शुक्ल, माताबदल मिश्रा, द्वारिका सिंह, सूर्यनिधान पांडेय, आत्मा सिंह, रतन केसरवानी, विकास सिंह प्रधान, उमाकांत तिवारी, काशी बलुआ, सिद्धमनी दुबे, विराट त्रिपाठी प्रधान, दिनेश भीटा, दिनेश चौकठा, मनोज द्विवेदी, शुभम मिश्र, राधेश्याम तिवारी, वीरेंद्र दुबे पूर्व प्रधान दुबहा, अनूप तिवारी पारुल, घनश्याम कोटार, आशीष शुक्ला, नंदन द्विवेदी, मुकेश मिश्रा, सुरेन्द्र केसरवानी, बलबीर सिंह, आशीष त्रिपाठी, गौरव मिश्रा, पप्पू तिवारी बारा, नारी शक्ति की चंद्रावती सहित सैकड़ों लोग उपस्थित रहे। सभा की अध्यक्षता लल्लू मिश्रा एवम संचालन अर्जुन तिवारी ने किया।

साइकिल वाली बटन मिलकर दबाया जायेः शायर मुस्ताक खान

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। चुनावी प्रचार के अंतिम दिन मैलहन इस्लामिया स्कूल पर सपा प्रत्याशी प्रतापपुर विधानसभा के

समर्थन में एक सभा में शायर मुस्ताक यावर अपनी नज्म पढ़ कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। आओ अखिलेश को सब मिलकर जिताया जाए। साइकिल वाली बटन मिलकर दबाया जाये। इस अवसर पर विजमा यादव ने कहा। कि हमारी पार्टी के घोषणा पत्र में प्रदेशवासियों को 300 यूनिट मुफ्त बिजली, बीपीएल परिवारों को मुफ्त दो रसोई गैस सिलेंडर, लघु सीमांत किसानों को दो बोरी डीएपी तथा 5 बोरी यूरिया देने का वादा किसानों को साल भर में कर्ज मुक्त बताया जाए मौके पर प्रधान नंद लाल यादव, सदर अब्दुल, मजीद, पुट्टी लाल गुप्ता, मसूद अहमद, मोहम्मद एजाज खां, शुयेब खां, राकेश यादव, जंगी लाल यादव, रामप्यारे यादव, मास्टर अयूब आदि उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल ने प्रतापपुर में किया चुनावी जनसभा

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

प्रतापपुर। विधानसभा चुनाव के पांचवे चरण में चुनाव प्रचार के अंतिम दिन प्रतापपुर से अपना दल के प्रत्याशी पूर्व मन्त्री राकेशधर त्रिपाठी और

हंडिया से निषाद पार्टी से गठबंधन के उम्मीदवार प्रशांत सिंह के समर्थन में शुक्रवार को प्रतापपुर में मुख्यमंत्री आदित्यनाथ और केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल ने जनसभा कर दोनों गठबंधन के प्रत्याशियों को जीत दिलाने की अपील किया।कार्यक्रम का संचालन काशी प्रान्त के उपाध्यक्ष अमरनाथ यादव ने किया।इस मौके पे भाजपा के जिलाध्यक्ष अश्वनी दूबेदी,अपना दल के जिलाध्यक्ष भानुप्रताप पटेल,आईटी सेल संयोजक प्रमोद यादव,श्रीकांत शुक्ला,युवा मोर्चा के मंडल अध्यक्ष उदयवीर प्रजापति सहित हजारों की संख्या में लोग जनसभा सुनने को उमड़े।

प्रतापगढ़ में सबसे अधिक व सबसे कम मतों से जीत का रिकार्ड इनके नाम है दर्ज

प्रतापगढ़। चुनाव विधानसभा का हो या लोकसभा का, जीत-हार के अंतर को लेकर लोगों में उत्सुकता बनी रहती है। हर मतदाता की नजर प्रत्याशियों के जीत-हार के अंतर पर लगी रहती है। प्रत्येक चुनाव में कुछ न कुछ रिकार्ड बनता रहता है। अब तक हुए सूबे में 17 चुनावों में प्रतापगढ़ जिले में कांग्रेस नेता प्रमोद तिवारी की जीत का रिकार्ड अब तक कोई नहीं तोड़ सका है। दूसरे नंबर पर यह रिकार्ड कुंडा के निर्दलीय विधायक रघुराज प्रताप सिंह राजा भैया के नाम है। उन्होंने पिछले चुनाव में भाजपा प्रत्याशी को एक लाख से अधिक मतों के अंतर से शिकस्त दी थी। अब तक हुए 17 चुनावों के नतीजों पर नजर दौड़ाएं तो सबसे अधिक मतों से जीत का रिकार्ड कांग्रेस नेता प्रमोद तिवारी के नाम है। उन्होंने रामपुर खास सीट पर वर्ष 1996 के चुनाव में भाजपा प्रत्याशी केके सिंह को एक लाख 16 हजार 172 मतों से शिकस्त दी थी।

मतदाता के सिवा मतदान केंद्र के सौ मीटर के दायरे में प्रवेश वर्जित

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़। विधानसभा चुनाव को निष्पक्ष ढंग से संपन्न कराने हेतु जिला निर्वाचन अधिकारी ने सभी संबंधित अधिकारियों के साथ बैठक कर रणनीति तैयार किया। पुलिस एवं सिविल, सेक्टर मजिस्ट्रेट, जोनल मजिस्ट्रेट तथा अर्द्ध सुरक्षाबल के नोडल अधिकारियों के साथ पुलिस लाइन परिसर में यह बैठक की गयी।बैठक में जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ0 नितिन बंसल ने कहा कि निर्वाचन में पुलिस बल एवं से0मजिस्ट्रेट का प्रथम दायित्व मतदान दल एवं ईवीएम की सुरक्षा है। मतदान पार्टी सुरक्षा बलों के साथ बूथ पर निर्धारित वाहन से प्रस्थान करेगी। सभी मतदान केन्द्रों पर अर्द्ध सुरक्षाबल के जवान तैनात किये गये है।से0मजिस्ट्रेट अपने पुलिस आफिसर के साथ ही क्षेत्र में निरन्तर भ्रमणशील रहकर निर्धारित मतदान केन्द्रों पर सकुशल मतदान सम्पन्न करायेगें। सेक्टर मजिस्ट्रेट एवं पीठासीन अधिकारी का यह दायित्व होगा कि किसी भी मतदान केन्द्र में कोई भी वोटर या अभिकर्ता मोबाइल फोन लेकर प्रवेश नही करेगा, यदि ऐसा किसी केन्द्र में पाया गया तो सम्बन्धित के विरूद्ध प्राथमिकी दर्ज कराते हुये जेल भेजा जायेगा। मतदान के दिन पोलिंग एजेन्ट बूथ के बाहर रहकर अपना कार्य करेगें। उन्होंने सेक्टर मजिस्ट्रेट को निर्देशित किया कि जनपद के संवेदनशील बूथों पर वेबकास्टिंग की व्यवस्था की गयी है जहां हो रही मतदान प्रक्रिया को जनपद के डिस्ट्रिक्ट कन्ट्रोल रूम एवं भारत निर्वाचन आयोग द्वारा भी लाइव देखा जा सकेगा। सेक्टर मजिस्ट्रेटों का यह दायित्व है कि दिनांक 26 फरवरी को ऐसे बूथों का भ्रमण कर यह सुनिश्चित कर लें कि वेबकास्टिंग हेतु लगाये गये कैमरे की लोकेशन चेक कर लें, किसी भी दशा में कैमरें के माध्यम से मतदान की गोपनीयता भंग न होने पाये। मतदान केन्द्रों पर दिव्यांगजनों की सुविधा हेतु व्हील चेयर की व्यवस्था की गयी है यदि किसी दिव्यांग को आवश्यकता है तो उसे व्हील चेयर उपलब्ध कराते हुये सकुशल मतदान कराया जाये। जिलाधिकारी ने बताया कि दिनांक 27 फरवरी मतदान दिवस के अवसर पर मतदाता सूची में जिन मतदाताओं नाम दर्ज है ऐसे मतदाता ही एपिक के अलावा भारत निर्वाचन आयोग के अनुमन्य12 वैकल्पिक पहचान पत्रों के माध्यम से मतदान कर सकते है।सभी मतदान केन्द्र पर बीएलओ भी अल्फावेटिकल लोकेटर के साथ मतदाता सूची एवं पहचान पत्र हेतु उपस्थित रहेगें। सभी मतदान केन्द्रों पर कोविड-19 के प्रोटोकॉल के तहत हेल्पडेस्क लगायी गयी है जो थर्मल स्कैनर एवं सेनेटाइजर उपलब्ध रहेगा। जिलाधिकारी ने लॉ एण्ड आर्डर की चर्चा करते हुये बताया कि सेक्टर पुलिस आफिसर एवं सेक्टर मजिस्ट्रेट सभी मतदान केन्द्रों पर यह सुनिश्चित करेगें कि मतदान करने के बाद मतदाता सीधे घर जाये, बाहर भीड़ कदापि इकट्ठी न होने पाये। मतदान केन्द्र के 100 मीटर दायरें में कोई भी पार्टी या प्रत्याशी अपना बस्ता नही लगायेगा। 100 मीटर के बाहर वह अपना बस्ता रख सकते है किन्तु उस पर अनुमन्य 02 व्यक्ति ही उपस्थित रहेगें। ईवीएम के रख-रखाव के सम्बन्ध में जिलाधिकारी ने बताया अफीम कोठी में ईवीएम का कन्ट्रोल रूम बनाया गया है जहां से सेक्टर मजिस्ट्रेट अपनी ईवीएम से सम्बन्धित रिकार्ड दर्ज करायेगें। उन्होने सेक्टर मजिस्ट्रेट को विशेष रूप से हिदायत दी कि वह अपने पीठासीन अधिकारियों से यह सुनिश्चित कर लेगें कि वीवीपैट की बैटरी निकालकर ही उसे सील करेगें। पाटिर्यों का प्रस्थान एटीएल स्थित ग्राउण्ड से किया जायेगा तथा सभी पार्टियां मतदान सामग्री ईवीएम के साथ महुली मण्डी स्थित अपनी विधानसभाओं के लगे काउण्टर पर जमा करायेगें। जिलाधिकारी ने बताया कि निष्पक्ष एवं शान्तिपूर्ण मतदान सम्पन्न कराने हेतु जनपद को 31 जोन और 217 सेक्टर जोन में विभाजित करते हुये जोनल एवं सेक्टर मजिस्ट्रेट की नियुक्त की गयी है। मतदान केन्द्रों के निष्पक्ष निर्वाचन के पर्यवेक्षण हेतु माइक्रो आब्जर्वर, स्टैटिक मजिस्ट्रेट, वेबकास्टिंग एवं वीडियो रिकार्डिंग की व्यवस्था की गयी है, 24 घंटे डिस्ट्रिक्ट कन्टैक्ट सेन्टर में विधानसभावार शिकायतें निस्तारण हेतु टेलीफोन लाइन एवं 1950 टोल फ्री नम्बर उपलब्ध है जिस पर शिकायतें दर्ज करायी जा सकती है। पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल ने कहा जनपद के 03 क्षेत्र रामपुरखास, पट्टी एवं कुण्डा में विशेष संवेदनशील है जिन पर सतर्क निगरानी रखी जा रही है। उन्होने पुलिस आफिसर एवं सेक्टर मजिस्ट्रेट से अपेक्षा करते हुये कहा कि बूथों पर छोटो सी छोटी प्राप्त होने वाली शिकायत का त्वरित निस्तारण किया जाये और यदि कोई विशेष बात होती है तो उसे सेक्टर, जोनल एवं उच्चाधिकारियों को तुरन्त अवगत कराया जाये। मतदान के शुरू के दो घंटे और अंतिम दो घंटे विशेष महत्वपूर्ण होते है। इस अवसर पर अधिकारी विशेष सतर्कता बरते। 179 क्लस्टर मोबाइल, थाने की फोर्स के अतिरिक्त जोनल, सेक्टर पुलिस आफिसर एवं अर्द्ध सुरक्षाबल के जवान निरन्तर भ्रमणशील रहकर जनपद के चुनाव को निष्पक्ष, शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न करायेगें। इस अवसर पर उपस्थित पुलिस प्रेक्षक अनूप कुरूविल्ला जॉन ने उम्मीद किया कि जनपद में पुलिस प्रशासन एवं जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा महीनों से निर्वाचन की तैयारियाँ की जा रही है किन्तु आगामी 02 दिवस अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इस अवधि में सेक्टर पुलिस आफिसर एवं सेक्टर मजिस्ट्रेट को मेहनत से काम करना है, मतदान में लगे हुये सभी कार्मिक यह सुनिश्चित करेगें कि वह किसी भी पार्टी या प्रत्याशी का आतिथ्य कदापि स्वीकार नहीं करेगें। उन्होंने जनपद के निष्पक्ष, शान्तिपूर्ण एवं पारदर्शी निर्वाचन कराये जाने के लिये सभी को शुभकामनायें दी। बैठक में अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) मुकेश चन्द्र, मुख्य राजस्व अधिकारी इन्द्र भूषण वर्मा, अपर पुलिस अधीक्षक रोहित मिश्रा, जिला सूचना अधिकारी विजय कुमार, अर्द्धसुरक्षा बल के बीएसएफ, सीआरपीएफ, एस0एस0बी0, सी0आई0एस0एफ0, होमगार्ड कमाण्डेन्ट सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।समस्त ईट भट्ठों में कार्यरत कर्मचारियों के मतदान हेतु ईट-भट्ठों पर कार्य बन्द रहेगा।श्रम प्रर्वतन अधिकारी डॉ0महेन्द्र प्रताप सिंह ने बताया कि जनपद प्रतापगढ़ में पंचम चरण में दिनांक 27 फरवरी 2022 दिन रविवार को मतदान हेतु उपयुक्त अवसर प्रदान करने के आशय से दिनांक 27 फरवरी 2022 को मतदान दिवस के अवसर पर सभी ईट भट्ठों पर कार्य बन्द रहेगा तथा इस एवज में उनसे अगले साप्ताहिक अवकाश पर कार्य नही लिया जायेगा।

दबंग महिला की दबंगई, जबरन रात में निर्माण किया ध्वस्त, दी गयी तहरीर

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर प्रयागराज । बहरिया थाना अंतर्गत पतुलकी गांव में दबंग महिला राबिया बानो पत्नी सज्जन

अली की दबंगई इस कदर बढ़ गई है कि पुलिस प्रशासन तक का ख़ौफ़ नहीं रहा। सिर्फ ऊंची पकड़ होने के कारण। पड़ोसी मोहम्मद जावेद के द्वारा आराजी संख्या 248 रकबा 0.0570 हेक्टेयर में से 0.0203 हेक्टेयर भूमिधरी ज़मीन पर मकान बनवाने हेतु निर्माण करवा रहा था। जिसे रात के समय मे पड़ोस की दबंग महिला राबिया बानों के द्वारा निर्माण क्षतिग्रस्त किया गया। जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। दबंग महिला के अलावा चार अन्य गुफरान पुत्र सज्जन अली व लुकमान पुत्र नन्हे अली व आफरीन पुत्री नन्हे अली तथा दो अज्ञात के द्वारा रात के अंधेरों में चोरी से निर्माण ध्वस्त किया जा रहा था। जिसका वीडियो किसी ने बना कर वायरल कर दिया। वीडियो वायरल होने पर दबंग महिला राबिया बानो ने अपनी बचाव के लिए निर्माण करा रहें भूमिधर खातेदार मोहम्मद जावेद के द्वारा मारपीट व छेड़ छाड़ का फर्जी सूचना पी आर वी 112 तथा थाना बहरिया में तहरीर दी। जब की दबंग महिला राबिया बानों के खिलाफ पहले ही निर्माण में बाधा डालने की शिकायत चौकी सिकंदरा में दी गयी थी। उसके बाद निर्माण ध्वस्त करने का वीडियो वायरल होने पर 25 फरवरी 2022 को पीड़ित जावेद के द्वारा पुलिस चौकी सिकंदरा में तहरीर दी गयी। जिसका निष्पक्ष जाँच कर विधिक कार्यवाही करने की बात चौकी इंचार्ज सिकंदरा हीरा लाल के द्वारा कही गयी। इस दबंग महिला से बस्ती के लोग त्रस्त है। जिसके ऊपर कानूनी कार्यवाही होना अति आवश्यक है।

सुनो बलिया वालो,दयाशंकर को जिताना हेमा मालिनी की इज्जत की बात है

(आधुनिक समाचार सेवा)
शीतल प्रसाद गुप्त

बलिया।चल धनने तेरी बसंती के इज्जत का सवाल है,नामक अपनी शोले फ़िल्म का डायलॉग बोलते हुए प्रसिद्ध हिंदी फिल्म की अभिनेत्री व बीजेपी सांसद हेमा मालिनी ने कहा

कि बलिया वालो ,दयाशंकर को जीता देना, यह हेमा मालिनी के इज्जत का सवाल है । इस बागी धरती पर आज शुक्रवार को कई चुनावी जनसभा मे उपरोक्त बाते सिनेस्टार एवं सांसद हेमा मालिनी ने भाजपा प्रत्याशी दयाशंकर सिंह के जनसमर्थन में बलिया के सतीश चन्द्र कालेज के मैदान में आयोजित जनसभा को सम्बोधित करते हुए कही।उन्होंने बलिया की जनता को सम्बोधन में आगे कहा कि बलिया महादानी बलि की धरती, और भगवान बामन की पवित्र धरतीहै।भृगु बाबा जैसे महान संत की तपो स्थली है,तो मंगल पाण्डेय जैसे वीर योद्धा जिन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम का बिगुल फुका था उनकी जन्मस्थली भी है । मै उन सबको नमन एवं वंदन करती हूँ । अभिनेत्री हेमा मालिनी ने कहा कि मैं बलिया के लोगो से निवेदन करती हूँ कि भाजपा और योगी जी के पक्ष में मतदान करे । मोदी जी और योगी इस देश को आगे ले जाने के लिए दिन रात इतना काम कर रहे है । हमे इनके पक्ष में मतदान करना है, यही छोटा सा काम करना है । मोदी जी देश को आगे ले जाने का काम कर रहे है , किसी के बहकावे में नहीं आना है ,भाजपा को वोट करना है । मोदी जी और योगी जी ही सुशासन दे सकते है, लोगो को अधिकार दे सकते है भाजपा के शासन में लोगो के मकान बने , मुफ्त सिलेंडर का कनेक्शन मिला, राशन लोगो के घर तक गया, कोई बीच का आदमी इन चीजो को हडप नही पाया है । योगी जी ने उत्तर प्रदेश से डर,भय,और गुण्डागर्दी को खत्म किया है । जिसके कारण उत्तर में औद्योगिक निवेश बढ़ा है । एयरपोर्ट बन रहे है ,सड़क बनी, उत्तर प्रदेश में विकास हुआ है । अब फिल्मे केवल बाम्बे में ही नहीं, यूपी में भी बनेगी क्योंकि हमारी सरकार उत्तर प्रदेश में भी फिल्म सिटी बना रही है । अब उत्तर प्रदेश में महिलाये सुरक्षित है क्योंकि उत्तर प्रदेश में योगी है , योगी जी की सरकार ने दो हजार से अधिक थानों का निर्माण करवाया है और उनमे हजारो महिला पुलिस कर्मियों की भर्ती सरकार ने की है।उत्तर-प्रदेश प्रदेश से डर भागकर जेल में चल गया है

दबंगो ने ढाया कहर,व्यापारी को किया लहूलुहान,हल्ला गुहार के बाद बची जान

(आधुनिक समाचार सेवा)

सुल्तानपु।निमंत्रण खाकर घर वापस लौट रहे व्यापारी को दंबगो ने जमकर पीटा।व्यपारी के हल्ला गुहार बाद मोहल्लेवासियों की हस्तांक्षेप बाद

जान बची।मामला बीते 24 फरवरी का है,जहां लक्ष्मणपुर इलाके में विजय कुमार सिंह उर्फ बबलू सिंह तेरवी का निमंत्रण खाकर घर वापस लौट ही रहे थे कि पूर्व विधायक अनिल पाण्डेय के घर समीप उपेन्द्र विक्रम सिंह,अंकित सिंह ने रोक लिया और जानलेवा हमला करते हुए सर पर वार कर दिया,जिससे विजय सिंह के सर में गहरा घाव हो गया और खून से लतपत हो गए दबंगो के हौसले इतने बुलन्द थे कि विजय सिंह शोर मचाने के बाद आई आम पब्लिक के सामने जान से मारने की धमकी देते हुए निकल गए।पीड़ित ने अपनी आप बीती पुलिस को सुनाई तो पुलिस मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच पड़ताल कर रही है।वही पुलिस ने आईपीसी की धारा 307 के तहत मुकदमा दर्ज तो कर लिया है लेकिन अभी तक दबंगो की गिरफ्तारी ना होने पीड़ित के चेहरे पर मायूसी साफ झलक रही है।

दिव्यांगजन और 80 प्लस वोटरों को घर पर मतदान कराने के लिए पोलिंग पार्टियां रवाना

वाराणसी। विधानसभा चुनाव में भारत निर्वाचन आयोग की ओर से इस बार दिव्यांगजन व अस्सी वर्ष ऊपर के वोटरों को घर पर मतदान की सुविधा मुहैया कराया गया है। जिले के आठों विधानसभा क्षेत्र से फार्म डी भरकर 405 दिव्यांग व 1209 बुजुर्ग ने घर पर वोटिंग की सुविधा मांगी है। आयोग के निर्देश के क्रम में जिला प्रशासन की ओर से 26 व 27 फरवरी को इन वोटरों की वोटिंग के लिए तिथि तय की गई है। इसी क्रम में कलेक्ट्रेट के आठों विधानसभा के आरओ कक्ष से पोलिंग पाटिर्यां आज रवाना हुई हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी कौशल राज शर्मा ने 52 पोलिंग पार्टियां गठित की है । इस पार्टी में सेक्टर व जोनल मजिस्ट्रेट के अलावा मतदान कार्मिक, स्थानीय पुलिस फोर्स की टीम भी रहेगी। यह मतदान की गोपनीयता के लिए अपने साथ मोबाइल वोटिंग कंपार्टमेंट भी लेकर जाएंगे। मतदाता इसी की आड़ में अपने मतदान का प्रयोग करेगा।मतदान के बाद यह बैलेट बॉक्स कोषागार के डबल लॉक में आरओ की मौजूदगी में सुरक्षित रखा जाएगा। यह दस मार्च को स्पेशल वाहन से पुलिस की निगरानी में पहड़िया मंडी भेजा जाएगा। इसके बाद इसकी गिनती होगी। विधानसभावार वोटरों की बात करे तो घर से वोटिंग की सुविधा मांगने वालों में सर्वाधिक उत्तरी विधासभा के वोटर है। उतरी में अस्सी प्लस 239 व दिव्यांगजन 19 है। इसी क्रम में पिडरा में 101 व 13, अजगरा में 184 व 42, शिवपुर में 102 व 13, रोहनिया में 165 व 24, दक्षिणी में 196 व आठ, केंटोमेन्ट में 207 व 39 तथा सेवापुरी में 66 व अस्सी वोटर है ।

फोटो : दैनिक जागरण

जिला जेल में बंदी की मौत के बाद ४१ नामजद और कई अज्ञात बंदियों के खिलाफ एफआइआर दर्ज

वाराणसी। जिला कारागार में निरुद्ध बंदी की मौत के बाद हुए बवाल मामले में जेलर की तहरीर पर 41 नामजद सहित दर्जनों अज्ञात बंदियों के खिलाफ लालपुर पांडेयपुर थाने में मुकदमा दर्ज। कारापाल वीरेंद्र कुमार त्रिपाठी की तहरीर पर आपराधिक साजिश,बलवा,सरकारी कार्य मे बाधा 7 क्रिमिनल लॉ एमेंडमेंट व 45 कारागार अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज। वाराणसी जिला कारागार में निरुद्ध बंदी की मौत के बाद हुए बवाल मामले में जेलर की तहरीर पर 41 नामजद सहित दर्जनों अज्ञात बंदियों के खिलाफ लालपुर पांडेयपुर थाने में मुकदमा दर्ज। आपराधिक साजिशबलवासरकारी कार्य मे बाधा क्रिमिनल लॉ एमेंडमेंट व 45 कारागार अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज। जिला जेल में शुक्रवार की सुबह एक बंदी की मौत के बाद आक्रोशित बंदियों ने जमकर उपद्रव किया। सुबह करीब नौ से 11 बजे तक जेल बंदियों के कब्जे में रहा। बैरक के गेट तोडे के साथ ही एंबुलेंस क्षतिग्रस्त कर दी। वीडियो कांफ्रेंसिंग हाल, कंट्रोल रूम में भी तोडफ़ोड़ की। पत्थरबाजी के साथ ही तीन बंदीरक्षक को बंधक बना लिया। बंदी राजेश जायसवाल (54) को दो दिन पहले हार्ट अटैक आया था। गुरुवार रात फिर से उसकी तबीयत बिगड़ी। उसे मंडलीय अस्पताल ले जाया गया। वहां से रात एक बजे वापस लाया गया। भोर में फिर से तबीयत बिगड़ी। उसे फिर अस्पताल ले जाया गया। वहां उसकी मौत हो गई। बंदियों का कहना था कि जेल प्रशासन की अनदेखी और लापरवाही से राजेश जायसवाल की मौत हुई है। पुलिस व प्रशासनिक अधिकारी बंदियों को

समझाते हुए कड़ी मशक्कत के बाद स्थिति पर काबू पाया। फिलहाल, बंदियों को बैरक के अंदर कर दिया गया है। जेल के सीसीटीवी कैमरों की फुटेज की मदद से उपद्रव के लिए उकसाने वाले बंदियों को चिह्नित किया जा रहा है। सिगरा थाना क्षेत्र के बड़ी गैबी के रहने वाले राजेश जायसवाल पर धोखाधड़ी का मुकदमा चेतगंज थाने में दर्ज है। पिछले छह माह से इस आरोप में वह जिला जेल में बंद था। बंदियों का आरोप था कि जेल प्रशासन की लापरवाही और समय से उपचार नहीं होने के चलते राजेश जायसवाल की मौत हो गई। इस बात को लेकर बंदियों ने हंगामा शुरू किया तो बंदी रक्षकों ने एक बंदी की पिटाई कर दी। राजेश जायसवाल की पतने और बच्चों का करुण क्रंदन देख लोगों की भी आंखे नम हो गईं। उन्होंने जेल के मुख्य द्वार पर नारेबाजी की और विरोध जताया। स्वजन का आरोप रहा कि जेल में हत्या कराई गई है। राजेश जायसवाल के स्वजन का आरोप था कि राजेश की मौत की सूचना उन्हें जिला कारागार के द्वारा नहीं दी गई। अस्पताल में मौजूद कुछ परिचितों ने उन्हें राजेश के मौत की सूचना दी। इसके बाद वे मौके पर पहुंचे। इसके अलावा हंगामा कर रहे स्वजन ने बताया कि जेल के अंदर बैरक बदलने के लिए भी राजेश से पैसे की मांग की जा रही थी। दो दिन पहले राजेश ने जिला कारागार में बंदियों के लिए लगाए गए टेलीफोन से काल कर बातचीत भी की थी। तब उन्होंने तबीयत खराब होने के संबंध में कोई भी बात नहीं बताई थी। राजेश जायसवाल को एक लड़की गुल्लू 20 वर्षीय, एक लड़का लकी 18 साल जो अभी पढ़ाई कर रहे हैं। पतने रेखा जायसवाल का रो रो कर बुरा हाल है पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और अग्रिम कार्रवाई कर रही है।गाडिय़ों की हेराफेरी में गया था जेल स्वजन ने बताया कि राजेश जायसवाल नदेसर स्थित पीसीएफ प्लाजा में ट्रेवल्स का काम करते थे। इसमें काफी गाड़ी फाइनेंस पर चल रही थी। लाकडाउन होने के बाद व्यापार खत्म हो चुका था। इसी के चलते कुछ गाड़ी अपने परिचित व्यक्ति को लिखित समझौते पर दिए। गाड़ी ट्रांसफर भी नहीं किया गया और फर्जी कागज बनवा कर परिचित व्यक्ति गाड़ी मालिक बन बैठा। रिकवरी का नोटिस बार-बार राजेश जायसवाल को मिल रहा था। इस पर बैंक द्वारा कार्रवाई करने पर पुलिस ने गिरफ्तार कर छह माह पहले जेल में डाल दिया। वही जेल जाने के बाद परिवार वालों से अक्सर बात होती थी, जिसमें हमेशा राजेश जायसवाल बताया करते थे कि यहां बैरक चेंज करने के नाम पर पैसा मांगा जा रहा है।

पर्यावरण से ही जीवन सुरक्षित

चकिया (चंदौली)। सावित्रीबाई फुले राजकीय सनतकोत्तर महाविद्यालय से जुड़े स्वयंसेवकों ने मुहम्मदाबाद में आयोजित विशेष शिविर के पांचवें दिन शुक्रवार को पौधारोपण किया। साथ ही स्कूल के बच्चों के साथ एक पारस्परिक विचार

विमर्श कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बच्चों के विचार जानने के साथ बेहतर शिक्षा ग्रहण करने को प्रेरित किया। वन क्षेत्राधिकारी तारा शंकर सिंह व कार्यक्रम अधिकारी शमशेर बहादुर सिंह ने स्वयंसेवकों के साथ गांव स्थित काली जी मंदिर परिसर में पौधरोपण किया। परिसर में बरगद, जामुन के पौधे रोपित किए गए। पर्यावरण संरक्षण में युवाओं की भूमिका विषयक संगोष्ठी को संबोधित करते हुए वन क्षेत्राधिकारी ने कहा कि अति उपभोग को त्याग कर पर्यावरण अनुकूल व्यवहार करना होगा। छोटे-छोटे प्रयासों से ही पर्यावरण को संरक्षण प्राप्त हो सकता है इसलिए हमें निरंतर यह प्रयास करना चाहिए कि जब पर्यावरण रहेगा तभी हमारा जीवन सुरक्षित रहेगा। पर्यावरण का क्षरण होगा तो प्रकृति हमसे बदला जरूर लेंगी।

यात्री सुविधाएं का रखें ख्याल : एजीएम

सिधौना (गाजीपुर) । रेलवे के अपर महाप्रबंधक अमित कुमार अग्रवाल ने शुक्रवार को औड़िहार जंक्शन व डेमू शेड का निरीक्षण किया। औड़िहार यार्ड रिमाडलिग मास्टर प्लान, विभिन्न चरणों में कराए जा रहे कार्यो को देखा एवं दिए गए लक्ष्यों के सापेक्ष ड्राइंग व एसआइपी की स्थिति की समीक्षा की एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिया। अपर महाप्रबंधक टावर वैगन से करीब पौने 11 बजे अन्य अधिकारियों के साथ औड़िहार जंक्शन पहुंचे। फुट ओवरब्रिज का निरीक्षण करने के बाद निर्माणाधीन प्लेटफार्म व माहपुर डबल लाइन के कार्य को परखा। टिकट काउंटर पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया, इसके बाद डेमू शेड में पहुंचे और वहां उपलब्ध उपकरणों का अवलोकन किया। उपकरण में अलार्म, एफआईबीए, फ्लैशर, टाक बैक, कैमरा, व्हील प्रोफाइल की रिकार्ड कीपिग, स्पीड रिकार्डर, सस्पेंशन गियर चेंजिग, ट्रैक्शन मोटर माउंटिग, फ्यूज और एमसीबी व अनुकरण सामग्रियों के उपलब्धता की जानकारी ली। डेमू शेड में सुरक्षा के इंतजाम को देखा और लापरवाही न बतरने पर कार्रवाई की हिदायत दी। औड़िहार जंक्शन के पूरब तरफ स्थित कर्षण विद्युत उपकेंद्र में पहुंचकर पावर फेल्योर अथवा शार्ट-सर्किट होने की स्थितियों में परिचालन सुचारु रखने की कार्यविधियों का संज्ञान लिया। अपर महाप्रबंधक ने कहा कि नियमानुसार सारे कार्य किए जाएं, इस बात का भी ध्यान रखा जाए कि यात्रियों को किसी तरह की परेशानी

नहो। करीब पांच घंटे तक अपनी टीम के साथ वह यहां निरीक्षण करने के बाद पौने चार बजे वाराणसी के लिए रवाना हुए। उनके साथ अपर मंडल रेल प्रबंधक (प्रशासन) राहुल श्रीवास्तव, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (समन्वय) राकेश रंजन, वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर (कर्षण) पंकज केशरवानी, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (तृतीय) अनुज वर्मा, वरिष्ठ मंडल सिगन्ल एवं दूरसंचार इंजीनियर त्रयम्बकम, वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर (सी एंड डब्लूय) सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर (सी एंड एफ) आलोक केशरवानी आदि थे।

अराजक तत्वों ने पद्मश्री वैज्ञानिक लालजी सिंह के नाम का शिलापट्ट तोड़ा

सिकरारा (जौनपुर) । चौराहा स्थित बरईपार मार्ग पर कलवारी गांव निवासी डीएनए फिंगरप्रिंट के जनक पद्मश्री अलंकृत वैज्ञानिक डा. लालजी सिंह के नाम का शिलापट्ट गुरुवार की रात शरारती तत्वों ने क्षतिग्रस्त

कर दिया। इस करतूत से स्वजन व ग्रामीण आक्रोशित हैं। मालूम हो कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सिकारा-बरईपार मार्ग का नामकरण डा. लालजी सिंह के नाम पर किया था। इनदिनों 3.75 करोड़ की हालत से बजट के चौड़ीकरण व उच्चीकरण का कार्य चल रहा है। पिछले महीने उनके नाम का शिलापट्ट लगा था। शुक्रवार की सुबह शिलापट्ट क्षतिग्रस्त देखकर ग्रामीण आक्रोशित हो गए। गांव की प्रधान के पति मोहम्मद असलम ने आशंका जताई है कि किसी शरारती तत्वों ने ऐसी करतूत की है। ग्रामीणों का कहना है कि महज छह इंच गहरी नींव के प्लेटफार्म मानक का अनुरूप न बनवाए जाने के कारण क्षतिग्रस्त करना आसान हो गया। उन्होंने कमिश्नों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की मांग की है। स्व. लालजी सिंह के भतीजे व जीनोम फाउंडेशन कलवारी के को-आर्डीनेटर अरुण कुमार सिंह ने क्षोभ जताते हुए दोषियों को सख्त सजा देने की मांग की है। लोक निर्माण विभाग के अधिशासी अभियंता जैनू राम से पूछने पर कहा कि उन्हें मामले की जानकारी नहीं है। आज ही कर्मचारी भेज कर उसे ठीक करा दिया जाएगा। थानाध्यक्ष संतोष कुमार राय ने कहा कि उन्हें जानकारी नहीं है। तहरीर मिलने पर छानबीन कर कार्रवाई की जाएगी।

ट्रैक्टर खड्ड में पलटने से किशोर की मौत, तीन घायल

खुटहन (जौनपुर) । नगवां गांव में नहर पुलिया के पास शुक्रवार को अचानक सामने आ गए कुत्ते को बचाने में अनियंत्रित हुआ ट्रैक्टर नहर पटरी के बगल करीब 15 फीट गहरे खड्ड में पलट गया। किशोरवय चालक की हादसे में मौत हो गई। सवार तीन अन्य बालक घायल हो गए। घायलों को सीएचसी से प्राथमिक उपचार के बाद जिला चिकित्सालय रेफर कर दिया गया। इसी थाना क्षेत्र के दरना गांव निवासी 16 वर्षीय शुभम यादव पुत्र अमरदेव नहर पर सिचाई के लिए लगा इंजन ट्रैक्टर के फार पर रख खुद चलाते हुए घर ले जा रहा था। ट्रैक्टर पर उसका 12 वर्षीय भाई शिवम, पड़ोस का दस वर्षीय साहिल पुत्र सूर्यदेव व सात वर्षीय अंश पुत्र मुनन बैठे थे। ट्रैक्टर नहर के ऊंचे मार्ग पर चढ़ने लगा तभी अचानक दौड़ते हुए कुत्ता आ गया। उसे बचाने के फेर में अनियंत्रित हो खड्ड में पलट गया। मौके पर जुटे ग्रामीणों ने हादसे की सूचना पुलिस को दी। ट्रैक्टर के नीचे दबे किशोर व बालकों को बांस-बल्ली के सहारे बाहर निकाला गया।

दो से पांच मार्च तक वाराणसी में रहकर आसपास के जिलों के लिए प्रचार करेंगी प्रियंका गांधी

वाराणसी। यूपी चुनाव के सातवें और अंतिम चरण के मतदान के लिए कांग्रेस की ओर से दांव लगाया जा रहा है। इसके तहत कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा दो से पांच मार्च तक वाराणसी में ही कैंप करेंगी। इस दौरान वाराणसी और आसपास के जिलों का दौरा करेंगी।

तीन मार्च को छठे चरण में बलिया में होने वाले चुनाव के लिए प्रियंका का इस इलाके में होना महत्वपूर्ण चुनावी रणनीति मानी जा रही है। सभी कांग्रेस प्रत्याशियों के साथ चुनावी जनसंपर्क और सभा करेंगी। इस बारे में छत्तीसगढ़ के मंत्री और कांग्रेस के सचिव राजेश तिवारी को वाराणसी कांग्रेस की ओर से एक रूपरेखा भेजी गई। राजेश तिवारी ने कार्यक्रमों को फाइनल करके प्रियंका गांधी के निजी सचिव को भेज दिया। राजेश तिवारी एक मार्च को वाराणसी आकर अन्य पक्षों का भी जायजा लेगे। प्रियंका गांधी के कार्यक्रम में कांग्रेस के सभी प्रमुख नेता शामिल होंगे। इसमें छत्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल, राजस्थान के सीएम अशोक गहलोत, सचिन पायलट, सलमान खुर्शीद और अन्य वरिष्ठ नेता शामिल रहेंगे। दो से पांच मार्च के बीच रोड शो के लिए भी जिला प्रशासन से अनुमति मांगी गई है। अगर अनुमति मिल जाए तो प्रियंका गांधी का रोड शो भी होगा। वाराणसी प्रवास के दौरान प्रियंका वाराणसी के सभी विधानसभा सीट के प्रत्याशियों के साथ उस क्षेत्र के स्थलों पर बैठक करेंगी। इसके तहत अस्सी में पप्पू की चाय की अड़ी, लंका पर चाची की दुकान, नदेसर में राम भंडार जैसे प्रमुख प्रतिष्ठानों के नाम शामिल है। पिंडरा इलाके में दोपहर का भोजन की भी तैयारी की गई है। प्रियंका गांधी चुनाव प्रचार के दौरान धार्मिक स्थलों पर जा सकतीं हैं और वरिष्ठ, सम्मानिजनों से खास तौर से मुलाकात करेंगे। वाराणसी कैंट विधानसभा के लिए टिकट के बाद रामनगर पालिका परिषद की रेखा शर्मा के नराज होने की बात सामने आई तो अब प्रियंका उनको साथ लेकर क्षेत्र में चुनाव प्रचार करेंगी। इसी तरह अन्य नाराज नेता और कार्यकर्ताओं को खास तौर से साथ लेकर प्रियंका चलेंगी। कांग्रेस पदाधिकारियों की और से चुनावी प्रचार के दौरान कोई कमी न रह जाए इस दिशा में लगातार रणनीति बन रही है। तय कार्यक्रमों को फाइनल किया जा रहा है।

यूपी बोर्ड : विद्याथिर्यों का तनाव दूर करेगा हेल्प डेस्क, वाराणसी में अध्यापकों की एक पूल भी किया गठित

वाराणसी । यूपी बोर्ड के हाईस्कूल व इंटर की परीक्षाएं अप्रैल के प्रथम सप्ताह से शुरू होने की संभावना है। ऐसे में परीक्षा की तैयारी के लिए विद्यार्थियों के पास अब भी एक माह से अधिक का मौका है। वहीं दूसरी ओर शासन के निर्देश पर विद्यार्थियों का तनाव दूर करने के लिए जनपद में हेल्प डेस्क का गठन किया गया है। इस हेल्प डेस्क में माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य, विषय विशेषज्ञ, अध्यापकों की एक

पूल भी गठित किया गया है ताकि विद्यार्थी संबंधित विषय विशेषज्ञों से अपनी जिज्ञासाएं शांत कर सकें। कोरोना महामारी के चलते पठन पाठन काफी प्रभावित हुआ है। इसे देखते हुए यूपी बोर्ड ने इस वर्ष भी पाठ्यक्रमों में तीस फीसद कटौती कर दी है। सभी विद्यालयों से आनलाइन व आफलाइन कक्षाएं संचालित कर कोर्स पूरा करने का निर्देश दिया गया है। जनपद के सभी विद्यालयों ने कोर्स पूरा कर लेने का दावा किया है। इसके बावजूद हाईस्कूल व इंटरमीडिएट के विद्यार्थियों की सुविधा के लिए हेल्प डेस्क गठित किया गया है। डीआइओएस डा. विनोद कुमार राय ने बताया कि तहसील स्तर पर नोडल अधिकारी भी नामित किए गए हैं। राजकीय क्वींस इंटर कालेज के प्रधानाचार्य डा. गंगाधर राय को सदर, राजकीय इंटर कालेज (जक्खिनी) के प्रधानाचार्य डा. रामाश्रय शुक्ल को राजाताालाब तथा प्रभु नारायण राजकीय इंटर कालेज (रामनगर) के प्रधानाचार्य प्रभाष कुमार झा को पिंडरा तहसील का नोडल अधिकारी नामित किया गया है। तीनों तहसील स्तर पर 12-12 विषय विशेषज्ञ शिक्षकों को जो ड़ा गया है। हाईस्कूल व इंटर के विद्यार्थी इन अध्यापकों से सोमवार से शुक्रवार दोपहर दो बजे से शाम पांच बजे तक विषयों से संबंधित प्रशन पूछ सकते हैं। सभी विद्यालयों से संबंधित तहसीलवार अध्यापकों का नाम व मोबाइल नंबरों की सूची विद्यार्थियों से साझा करने का निर्देश दिया गया ताकि विद्यार्थी हेल्प डेस्क का लाभ उठा सके।

हरदोई में तैनात डाक्टर के फर्जी कागजात पर जमानियां में चल रहा था अस्पताल

जमानियां (गाजीपुर) । स्वास्थ विभाग में नर्सिग होम के संचालन में बड़े पैमाने पर फर्जीवाडा चल रहा है। हरदोई मेडिकल कालेज में तैनात डाक्टर के नाम पर जमानियां में नर्सिग होम संचालित होने के बाद भी विभाग की नींद नहीं टूटी है। विभाग ने मुकदमा दर्ज कराने के बाद कार्रवाई की इतिश्री कर ली। रिपोर्ट दर्ज होने के दूसरे दिन अस्पताल खुला। एनएच 24 हेतिमपुर स्थित यश्वी हास्पिटल हरदोई के एक मेडिकल कालेज में तैनात शिक्षिका डा. मधुलिका गुप्ता का सर्टिफिकेट लगाकर फर्जी तरीके से संचालित किया जा रहा था। डा. मधुलिका गुप्ता ने की शिकायत पर सीएमओ ने इसकी जांच एसीएमओ डा. एसडी कुमार को सौंपी। बुधवार को डा. एसडी कुमार जांच को पहुंचे तो अस्पताल में मरीज भर्ती मिले। जांच में फर्जी ढंग से अस्पताल संचालित होते पाया गया। इस पर डा.एसडी वर्मा ने कोतवाली में अस्पताल

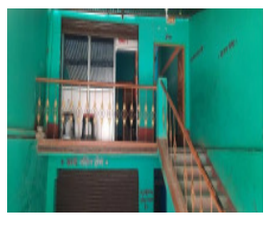

संचालक समीर के खिलाफ धोखाधड़ी का मुकदमा दर्ज कराया गया था, लेकिन मुकदमा दर्ज होने के बाद भी दूसरे दिन शुक्रवार को अस्पताल खुला रहा। संचालक समीर कुमार अस्पताल पर मौजूद रहे। अस्पताल में दो मरीज भी भर्ती थे। उधर, अस्पताल संचालक समीर कुमार ने बताया कि जब डा. मधुलिका गुप्ता वाराणसी के निजी अस्पताल में कार्य कर रही थी तो उन्होंने अपना डिग्री सीएमओ कार्यालय में रजिस्ट्रेशन के लिए दी थी। जब उनकी नौकरी किसी मेडिकल कालेज में लग गई तो बताया भी नहीं और सीएमओ से शिकायत कर गलत तरीके से मुकदमा दर्ज करा दिया। मार्च में पुनः अस्पताल का रजिस्ट्रेशन कराया जाएगा। वही एसीएमओ डा. एसडी वर्मा ने बताया कि हरदोई के मेडिकल कालेज में तैनात शिक्षिका डा. मधुलिका गुप्ता की शिकायत पर यश्वी अस्पताल संचालक के खिलाफ धोखाधड़ी का मुकदमा कोतवाली में दर्ज कराया गया है। आगे की कारवाई पुलिस को करनी है। क्षेत्रधिकारी हितेंद्र कृष्ण ने बताया कि मुकदमा दर्ज होने के बाद पुलिस केवल विवेचना करती है। विभागीय कार्रवाई स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी के स्तर से होनी है। जमानियां, दिलदारनगर, भदौरा व गहमर में स्वास्थ्य विभाग के रहमोकरम पर संचालित दर्जन भर अस्पताल मरीजों की जिदगी के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। किसी न किसी अस्पताल में आए दिन केस बिगड़ते हैं। कुछ मामलों को अस्पताल के अंदर सुलटा लिया जाता है। तो कुछ स्वास्थ्य विभाग के यहां शिकायत कर देते हैं। तो उन मामलों को स्वास्थ्य विभाग की देखरेख में मामले को सलटा लिया जाता है। निजी अस्पताल के संचालकों की ओर से हर वर्ष अस्पतालों का नाम बदलकर रजिस्ट्रेशन भी कराया जाता है। दो चार महीना में एक बार स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी अस्पतालों के निरीक्षण कर कोरम पूरा कर लौट जाते हैं।

सम्पादकीय

रूस का यूक्रेन पर हमला आने वाले दिनों में विश्व व्यवस्था को बदलने वाला साबित होगा

कोरोना महामारी से विश्व भर में लाखों लोगों की मौत और आर्थिक उठापटक के बाद से ही यह स्पष्ट हो गया था कि द्वितीय विश्वयुद्ध और उसके बाद शीत युद्ध के जटिल घटनाक्रम के जरिये अस्तित्व में आई वह वैश्विक व्यवस्था दरकने लगी है, जिसमें अमेरिका वैश्विक सुरक्षा का गारंटर हुआ करता था। जब कोरोना महामारी के रूप में फैला तब अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप सत्ता में थे। उनका बार-बार यह कहना था कि वैश्विक सुरक्षा के लिए चीन और जिहादी चरमपंथ सबसे बड़ा खतरा हैं। जब चीन की ओर से कोरोना वायरस को लेकर विश्व से जानकारी छुपाने के चलते महामारी फैली तो ट्रंप हाथ धोकर चीन की जवाबदेही तय करने के लिए उसके पीछे पड़े, परंतु इसी बीच हुए अमेरिकी चुनावों में उन्हें जो बाइडन के नेतृत्व में वामपंथी उदारवादी शक्तियों के हाथों पराजय का सामना करना पड़ा। बाइडन ने सत्ता में आते ही सारी अमेरिकी शक्ति चीन से हटाकर रूस की ओर लगा दी और द्वितीय विश्व युद्ध से भी पिछले जमाने की यूरोपीय रंजिशों को फिर से जीवित करने में लग गए।नाटो सोवियत संघ और उसके नेतृत्व वाली वारसा संधि के देशों की संयुक्त सैन्य शक्ति से मध्य यूरोप को बचाने के लिए अस्तित्व में आया था। पिछली सदी के आखिरी दशक में सोवियत संघ के विघटन के बाद से नाटो नैतिक रूप से औचित्यहीन हो गया था। अब उसके विस्तार की आवश्यकता नहीं बची थी। इसके बावजूद अमेरिका नाटो का विस्तार पूर्वी यूरोप में रूस की ओर करता ही गया। 1998 के बाद से पूर्वी यूरोप के दर्जनों देशों को नाटो का सदस्य बनाया गया। जबकि मिखाइल गोर्बाचोव को अमेरिका की ओर से यह मौखिक आश्वासन मिला था कि सोवियत संघ के विघटन के बाद नाटो का विस्तार नहीं किया जाएगा। स्पष्ट है कि इसके बाद भी नाटो का विस्तार मध्य यूरोप के ताकतवर देशों जैसे जर्मनी और पूर्वी यूरोप के छोटे देशों को अमेरिकी अंगूठे के नीचे रखने के लिए किया गया। जब पुतिन ने रूस की सत्ता संभाली तो भारी आर्थिक कर्ज से दबे रूस की कमजोर स्थिति को देखते हुए उन्होंने अमेरिका और यूरोपीय नेताओं के सामने यह प्रस्ताव रखा था कि वे यह सुनिश्चित करें कि नाटो उनके देश के लिए खतरा न बनने पाए, जो अनसुना कर दिया गया। इसके बाद दस साल तक पुतिन नाटो के रूस की ओर विस्तार पर चुप्पी साधे रहे, परंतु 2007 में म्युनिख में अपने ऐतिहासिक भाषण में उन्होंने कहा कि अमेरिका के नेतृत्व वाला एकध्रुवीय विश्व अलोकतांत्रिक है और वैश्विक सुरक्षा को खतरे में डाल रहा है। इसके बाद से पुतिन ने रूस की मजबूत होती स्थिति का लाभ उठाकर पूर्वी यूरोप और मध्य-पूर्व में अमेरिकी प्रभुत्व को चुनौती देना शुरू किया और अंततः यूक्रेन के रूसी भाषी इलाके क्रीमिया को रूस में विलय कर डाला। इस सबके बीच चीन की भारत-प्रशांत क्षेत्र में बढ़ती दादागीरी और दक्षिण चीन सागर और भारतीय इलाकों पर कब्जा जमाने की उसकी मंशा अमेरिका को जगा देने के लिए काफी होनी चाहिए थी, पर अमेरिकी राजनीतिज्ञ अपने क्षुद्र स्वार्थों में उलझे रहे। यूरोप में भी जहां अमेरिका रूसी प्रभाव को लेकर चिंतित रहा, वहीं तमाम यूरोपीय देशों पर बढ़ते चीनी प्रभाव को लेकर कभी सशंकित नहीं हुआ। रूस पर लगातार अमेरिकी दबाव का चीन ने भरपूर लाभ उठाया और अमेरिका के विरुद्ध दोनों देशों में एक प्रकार की सहमति ने जन्म ले लिया, जो तब भी नहीं थी जब दोनों देशों में कम्युनिस्ट सरकारें हुआ करती थीं। बनाने के स्थान पर शीत युद्ध के जमाने के नाटो का यूक्रेन में रूसी सीमा तक विस्तार करने की जिद ने पूरी कर दी। कुछ महीने पहले अफरातफरी में अफगानिस्तान छोड़कर कर जाती अमेरिकी सेनाओं ने यह स्पष्ट कर दिया था कि विश्व व्यवस्था में अमेरिका के दिन लद गए और अमेरिकी सैन्य प्रबंधन तंत्र अक्षमता और अव्यवस्था से ग्रस्त है।

विशेष बातचीत में भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा बोले- आतंकियों के साथ खड़े होने वालों की नीयत बताना हमारा धर्म

पूरे देश की नजर अब सिर्फ उत्तर प्रदेश पर टिकी है। चुनाव अब पूर्वांचल के उस मुहाने पर पहुंच चुका है जहां जातिगत समीकरण के प्रयोग की सफलता-असफलता पर चर्चा तेज है। चुनाव में स्थानीय मुद्दों के साथ-साथ आतंकवाद भी शामिल हो गया है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा कहते हैं- जब वह जिनन और 1947 की बात करेंगे तो भाजपा उनकी नीयत तो जनता को बताएगी ही। बहुत शांत और सरल स्वभाव के नड्डा आक्रामक होते हुए कहते हैं कि अखिलेश क्यों नहीं कहते कि सिर्फ कानून के लिहाज से काम होगा, आतंकियों पर रहम नहीं होगा। युवाओं को लेकर पार्टी की भविष्य की रणनीति, विरोधी मोर्चे की कवायद, बिहार में खटपट की अटकलों जैसे कई विषयों पर दैनिक जागरण के राष्ट्रीय ब्यूरो प्रमुख आशुतोष झा ने उनसे बातचीत की। पेश हैं इसके प्रमुख अंश- जवाब- पहले तो मैं यह कहूंगा कि दूसरे पक्ष की ओर से जो दावा हो रहा है वह वैसा ही जैसा 2017 और 2019 में भी किया गया था। अखिलेश यादव हर बार अलग अलग पार्टी के साथ जमीन बनाने की कोशिश करते हैं और फेल होते हैं। मायावती जी के साथ आए, कांग्रेस के साथ आए, इस बार रालोद के साथ खड़े हैं जिनका स्थान भी सीमित है, पार्टी भी सीमित है और क्षेत्र भी सीमित है। गणित बदलने की कोशिश होती है, लेकिन केमिस्ट्री नहीं बनती है। जो गरीब हैं जो वंचित रहा है वह अपने वोट को लेकर बहुत सतर्क है। यह मानकर चलिए कि अब वोटों के ठेकेदार खत्म हो गए हैं। वोटर अपनी सुरक्षा के प्रति सजग हो गया है। यह चुनाव आम लोगों, गरीबों के सशक्तीकरण के लिए है और इस कारण से वोटरों का रुझान भाजपा की ओर है। लोग प्रधानमंत्री के हाथों में देश को सुरक्षित मानते हैं, मोदी जी ने जो योजनाएं बनाई उसे योगी जी ने सौ फीसद गरीबों तक पहुंचाया। आंकड़े गिनाने को बहुत कुछ है और यह जनता ही कर देगी। यही प्रो इनकम्बैंसी बनकर उभरा है। सबकी केमिस्ट्री बन रही है मोदी जी के साथ, सबकी केमिस्ट्री बन रही है योगी जी के साथ। यानी हम दावा नहीं कर रहे हैं, बल्कि विश्वास के साथ कह रहे हैं। जवाब- जो लोग गए, उनका शोर दो दिन में समाप्त हो गया और आज अपनी सीटें बचाते फिर रहे हैं। जब तक वो भाजपा के साथ थे तब तक ताकतवर थे। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूं, क्योंकि उत्तर प्रदेश की जनता अपने हितों को रूप देने के लिए माध्यम भाजपा को मानती है। जैसे ही आप उससे हटे कि आपके लिए सीट बचाने की जद्दोजहद शुरू हो गई। मैं बार-बार केमिस्ट्री की बात क्यों कह रहा हूं.। ओम प्रकाश राजभर चले गए, वह तो 2019 में चले गए थे, लेकिन क्या हुआ उनका। जो हमारे साथ जुड़ता है वह मजबूत होता है। सवाल- प्रधानमंत्री मोदी अंतिम चरण के चुनाव से पहले तीन दिन वाराणसी में रुकेंगे और इसे अलग अलग तरीके से देखा जा रहा है। आप कैसे देखते हैं जवाब पीएम मोदी देश और दुनिया के लिए एक शख्सियत हैं। प्रधानमंत्री के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को निभाते हुए वह एक सांसद की जिम्मेदारी भी निभाते हैं। काशी की जनता भी इसका अहसास करती है..दो बजे रात को अगर वह निरीक्षण के लिए निकलते हैं तो इसीलिए न कि वह खुद देख सकें कि उनके संसदीय क्षेत्र में क्या हो रहा है। सवाल- आपने जीत के जितने कारण गिनाए वह सब विकास से संबंधित हैं, लेकिन अक्सर देखा जाता है कि चुनाव के नजदीक आते आते आतंकवाद का मुद्दा भी उछल जाता है। ऐसा क्यों होता है जवाब यह तो आप दूसरे पक्ष से पूछिए. भई, जिनन शब्द कौन लेकर आय किसने उखाड़ी 1947 की बातों को। यह गलती से निकला शब्द नहीं था, लेकिन जब निकला तो हम उनकी नीयत को बताएंगे, उसे नियति तक तो लेकर जाएंगे ही। आप अगर कहते हैं कि किसी जाति धर्म को लोगों को जेल से छुड़ाउंगा तो देशहित और राष्ट्रहित के लिए भाजपा बताएगी या नहीं कि जिसे छुड़ाने की बात हो रही है वह देशद्रोही है, आतंकी है। सत्ता पाने के लिए आपको देशद्रोहियों का साथ देने में कतई हिचक नहीं है। ऐसी पाटिर्यों को हम तो केवल बेनकाब कर रहे हैं। जो लोग जेल में हैं वह उन्हें साहब दिखते हैं तो समझ सकते हैं कि समाज के हितों के साथ कितना समझौता होगा। गोरखपुर ब्लास्ट, कचहरी ब्लास्ट, श्रमजीवी ब्लास्ट,

संकटमोचक ब्लास्ट..ये सब तो तब हुआ जब उनकी सरकारें थीं। 2012 में जब अखिलेश मुख्यमंत्री बने थे तो इनके केस वापस लिए थे। क्यों नहीं कहते हैं कि आतंकियों को बिल्कुल भी संरक्षण नहीं देंगे, लेकिन वह कहते हैं-10 तारीख के बाद देखेंगे, यह शब्दावली क्या बताती है। हम तो केवल उन्हें बेनकाब करते हैं और लोगों को परेशानी होने लगती है। सवाल- लेकिन ठीक चुनाव से पहले ही कननैंज मे इनकम टैक्स की कार्रवाई होती है, पंजाब में चुनाव से पहले ही मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी के रिश्तेदार के घर छापे पड़ते हैं और अब महाराष्ट्र में। यह तो विपक्षी दलों की ओर से नहीं हो रहा है जवाब- यह कोई नहीं कर रहा है, यह स्वतंत्र एजेंसियों की ओर से हो रहा है। इनका काम किसी समय से बंधा नहीं होता है। मान लीजिए कि ईडी ने केस लगाया, उसके बाद न्यायिक रिमांड को वहां लाना पड़ा, इससे समझ सकते हैं। अमेठी और रायबरेली विशेष लोगों से जुड़ा रहा था इसीलिए आपकी नजरों में विशेष होगा, हमारे लिए हर क्षेत्र बराबर है। सवाल- अकाली दल भाजपा का पुराना साथी है। क्या नतीजों के बाद फिर से रिश्ता बन सकता है। जवाब- हमने खुद को नुकसान में रखते हुए भी अकाली दल से रिश्ता निभाया है। हमारा सिद्धांत रहा है कि हम किसी का साथ नहीं छोड़ते हैं। वे हमें छोड़कर चले गए। लेकिन यह सच्चाई है कि अब भाजपा विस्तार करना चाहती है। पहली बार हम 65 से ज्यादा सीटों पर लड़े हैं। राष्ट्रवादी ताकत मजबूत हो, इसलिए हम फिर से इसे सीमित नहीं करना चाहते हैं। मुझे ऐसी कोई उम्मीद नहीं दिखती है, लेकिन आखिरी फैसला तो संसदीय बोर्ड करता है। मैंने आपको अपनी प्राथमिकता बताई कि वह है विस्तार। सवाल- उत्तराखंड में मिला या नहीं मिला। यह मुझे पता ही कि एजेंसियों को क्या इनपुट मिलता है और कैसे कार्रवाई करती है, लेकिन यह तो संभव है कि जब इन लोगों की हरकतें बढ़ती हैं तो एजेंसियों की निगाह में आते होंगे। सवाल- अमेठी और रायबरेली को लेकर कोई खास रणनीति.। जवाब- हर क्षेत्र को लेकर हमारी विशेष रणनीति होती है। करहल भी इससे बचा नहीं था और अखिलेश जी को अपने पूज्य पिताजी तो चुनाव खत्म हो चुका है और कांग्रेस ज्यादा उत्साहित दिख रही है। क्या अर्थ निकाला जाए? जवाब- हम हमेशा शांत रहते हैं, हमारे नतीजे बोलते हैं, वे लोग हमेशा अशांत रहते हैं, नतीजे उनको तकलीफ में डालते हैं। इस बार भी यही होगा। पिछली बार तो आपने देखा था कि हरीश रावत जी दो जगह से लड़े थे और हार गए थे। सवाल- तो क्या माना जाए कि इस बार अगर उत्तराखंड में आपकी सरकार बनी तो मुख्यमंत्री भी स्थायी होगा? जवाब- आप पिछले दिनों में बदले गए मुख्यमंत्री के बारे में बोल रहे हैं शायद..लेकिन यह समझ लीजिए कि भाजपा गतिशील पार्टी है। समय और परिस्थिति देखकर हम फैसले लेते हैं, युवा चेहरा भी लाते हैं। बदलाव का अर्थ अस्थिरता नहीं होता है। मैं आपको उदाहरण देता हूं, दो जगह मुख्यमंत्री बदले गए थे-पंजाब में बदलाव हुआ और पूरी कांग्रेस पार्टी अस्थिर हो गई, हमने उत्तराखंड में तीन चेहरे बदले लेकिन पार्टी स्थिर रही। फैसलों के कई आयाम होते हैं। सवाल- एक नया प्रयोग शुरू हुआ है भाजपा में, गोवा में आपने युवा मुख्यमंत्री दिया, गुजरात में पहली बार चुनकर आए व्यक्ति को मुख्यमंत्री बना दिया और उत्तराखंड में भी तुलनात्मक रूप मे युवा चेहरा दिया। क्या यही परंपरा बनने वाली है। जवाब- यह लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। मैं आपको अंदर की बात बताऊं, हमारे प्रधानमंत्री इतने सजग हैं कि जब कभी संगठन का कोई मुद्दा उनके पास रखा जाता है या फिर चुनाव समिति की बैठक होती है तो उनका पहला सवाल होता है-युवा कितने हैं, 40 से कम के कितने हैं, महिलाएं कितनी हैं, पिछड़े कितने हैं, दलित भाइयों का नंबर क्या है, नए चेहरे कितने हैं, इंजीनियरिंग, डाक्टरी, तकनीकी क्षेत्र से कोई है या नहीं..। सबका साथ सबका विकास हम केवल बोलते नहीं है, भाजपा तो संगठन में भी इसी मंत्र के साथ चलती है। वरना क्या संभव था कि 2010 में जो लोग संगठन में सचिव के रूप में थे वह आज केंद्रीय मंत्री है, जो लोग विधानसभा में 2010 में टिकट के प्रार्थी थे वह आज मुख्यमंत्री हैं। यह सब इसलिए संभव हो रहा है, क्योंकि भाजपा गतिशील है, भाजपा सही मायने में लोकतांत्रिक है और प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में युवाओं के साथ-साथ हर वर्ग का भरोसा केवल भाजपा है। जब मैंने उत्तर प्रदेश समेत दूसरे सभी राज्यों में जीत का भरोसा जताया तो उसकी जड़ नीचे है। युवाओं का जुड़ाव क्यों भाजपा से है..इसलिए यहां उन्हें देशहित, समाज हित के लिए काम करने का अवसर मिलता है। आज हमारा कोई भी जिलाध्यक्ष 45 वर्ष से ऊपर नहीं है, इसका यह अर्थ नहीं कि जो 50-55 के हैं उन्हें अवसर नहीं है। अनुभव और जोश के साथ सब मिलकर काम करते है, मोदी जी लगातार इसे बढ़ाते हैं। सवाल- राजग की एक सरकार बिहार में है लेकिन वहां भाजपा और जदयू नेताओं के बीच टकराव की स्थिति दिखती है। कई सवाल खड़े हो रहे हैं। जवाब- कुछ लोग हैं जो थोड़ी बयानबाजी करते हैं लेकिन बिहार में राजग के अंदर बहुत सामंजस्य है। नीतीश बाबू के साथ हमारे अच्छे संबंध हैं। एमएलसी के चुनाव होने वाले हैं और हम दोनों दलों के बीच पांच दस मिनट में पूरी बात हो गई। यानी समझौते के जो मूल कारण होते हैं जहां समस्या आ सकती है अगर वह पांच दस मिनट में सुलझ जाएं तो फिर इसे समस्या कैसे कहेंगे। सवाल- एक बारगी भाजपा के खिलाफ खड़े होने वाले दलों की संख्या बढ़ने लगी है। टीआरएस जैसा दल जो संसद में कई बार भाजपा के साथ खड़ा था अब वह भी विरोधी मोर्चा बनाने लगा है। कितनी बड़ी चुनौती के रूप में देखते हैं। जवाब- कोई चुनौती नहीं है। देश में दो धाराएं है, एक वह जो राष्ट्र को सामने रखकर चलता है और दूसरा वह जो स्वार्थ को। जनता तो सब कुछ समझती है। कुर्सी माध्यम है, कुर्सी लक्ष्य नहीं। जो लोग कुर्सी के लिए हमारे साथ चिपकते हैं वह देर सबेर जाएंगे ही।

आतंकवाद के खिलाफ मोदी सरकार की जीरो टालरेंस की नीति ने सेना पुलिस का मनोबल किया ऊंचा

जब देश सुरक्षित होता है, तभी वहां के लोग भी सुरक्षित होते हैं। सुरक्षा के मामले में 2014 के पहले के दौर का स्मरण करें। तब आए दिन हमारे शहरों में आतंकी हमले होते थे। जुलाई 2008 में ऐसे ही एक आतंकी हमले में अहमदाबाद में 21 जगहों पर बम विस्फोट किए गए थे। इनमें 56 लोग मारे गए थे और दो सौ से अधिक घायल हुए थे। हाल में इन विस्फोटों के लिए दोषी 38 आतंकियों को मौत और 11 को उम्रकैद की सजा सुनाई गई हैं। इनमें कई आजमगढ़ के हैं। निःसंदेह 2014 के बाद स्थिति बदली और आतंकी वारदातों में जान गंवाने वाले सशस्त्र बलों, पुलिस के जवानों और सामान्य नागरिकों की संख्या कम हुई है। यह संभव हो पाया राष्ट्रीय सुरक्षा पर राजनीतिक इच्छाशक्ति और संकल्पशक्ति के कारण। पुलिस सेवा में रहते हुए मैंने करीब से देखा है कि कैसे राजनीतिक स्वार्थ सिद्धि के लिए देश की सुरक्षा की अनदेखी की गई। जब 2012 में अखिलेश सरकार सत्ता में आई तो उसने 2007 में गोरखपुर में हुए बम धमाकों में पकड़े गए आतंकियों तारिक कासमी और खालिद मुजाहिद के मुकदमों को वापस लेने की पहल की। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने मुकदमा वापसी के आदेश पर रोक लगाते हुए सरकार को फटकार लगाई। बाद में गोरखपुर के स्पेशल जज ने आतंकी तारिक कासमी को दोषी पाया और उसे आजीवन कारावास की सजा सुनाई। यह भी ध्यान रहे कि 2013 में जब आतंकी खालिद की लू लगने से मौत हो गई तो अखिलेश सरकार ने 42 पुलिस अधिकारियों-कर्मियों पर मुकदमा दायर करा दिया। इतना ही नहीं, इस मामले की जांच सीबीआइ को दे दी गई। सीबीआइ ने प्रारंभिक जांच में ही केस को झूठा पाया। इसके बाद भी जब मार्च 2017 में भाजपा सरकार सत्ता में आई तब जाकर इस फर्जी मुकदमे का पटाक्षेप हुआ। 2014 के पहले केंद्रीय नेतृत्व भी आतंकवाद के मामले में लचीला रुख अपनाए हुए था और वह भी तब जब इंडियन मुजाहिदीन के आतंकी देश में जगह-जगह धमाके कर रहे थे। इस संगठन के कई सदस्य आजमगढ़ के थे। इस संगठन को पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी

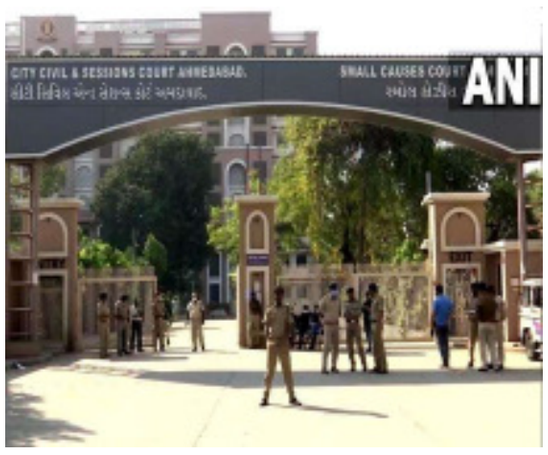

आइएसआइ और लश्कर-ए-तैयबा की भी शह मिल रही थी। इंडियन मुजाहिदीन का आजमगढ़ माड्यूल देश भर में सैकड़ों निदरेष लोगों की मौत का कारण बना। ये मौतें आतंकी हमलों में हुईं। 2008 में जब बाटला हाउस मुठभेड़ हुई तो दिग्विजय सिंह, सलमान खुर्शीद, ममता बनर्जी आदि ने उस पर सवाल उठाए। इतना ही नहीं दिग्विजय सिंह ने तो आजमगढ़ जाकर यहां तक कह दिया कि बाटला हाउस मुठभेड़ फर्जी है। इस मुठभेड़ में वीरगति को प्राप्त हुए इंस्पेक्टर मोहन चंद्र शर्मा के बारे में कहा गया कि वह तो पुलिस की गोली से मरे। 2012 में आजमगढ़ में एक चुनावी रैली में सलमान खुर्शीद ने यह कह दिया कि उन्होंने जब बाटला हाउस में मारे गए 'लड़कों' की फोटो सोनिया गांधी को दिखाई तो उनकी आंखों में आंसू छलक आए। यह किसी से छिपा नहीं कि बाद में अदालत ने इस मुठभेड़ को सही पाया। 2014 के पहले एक समस्या यह भी थी कि जब कभी पुलिस जान पर खेलकर किसी आतंकी को पकड़ती थी तो उस पर सस्ती राजनीति होने लगती थी और पकड़े गए संदिग्ध आतंकियों को निदरेष बताया जाने लगता था। जाहिर है कि इससे पुलिस का मनोबल प्रभावित होता था। इन दिनों यह मामला चर्चा में है कि अखिलेश सरकार ने किस तरह 2013 में आतंकियों के खिलाफ 14 मुकदमे वापस लेने की पहल की थी। इनमें 2008 में रामपुर में सीआरपीएफ कैंप पर हमला करने वाले आतंकी भी थे। इस हमले में सात सीआरपीएफ जवान बलिदान हुए थे। इसी तरह का एक मामला 1993 का है। 1993 में मेरठ के पीएसी कैंप में ग्रेनेड से हमला हुआ। इस हमले में एक पीएसी हवलदार ने अपने प्राण गंवाए और कई अन्य जवान घायल हुए। इस हमले के लिए जिम्मेदार आतंकी गिरफ्तार किए गए और उनके खिलाफ टाडा के तहत मुकदमा कायम हुआ, लेकिन तब बसपा के समर्थन वाली मुलायम सिंह की सरकार ने इन आतंकियों के खिलाफ दायर चार्जशीट वापस लेने का फैसला किया। जिला जज मेरठ ने इसकी अनुमति नहीं दी और ट्रायल शुरू कर दिया। बाद में इन आतंकियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। 2004 में उत्तर प्रदेश एसटीएफ के डिप्टी एसपी शैलेंद्र प्रताप सिंह ने दो सौ कारतूसों सहित सेना से चुराई हुई एलएमजी बरामद की। इस मामले में पोटा के तहत आर्म्स एक्ट के मुकदमे में मुख्तार अंसारी, मुन्नर और बाबूलाल यादव को नामजद किया गया। मुलायम सिंह सरकार को यह रास नहीं आया। इसके बाद शैलेंद्र प्रताप सिंह को इतना प्रताडित किया गया कि उन्होंने इस्तीफा दे दिया। इसके एक साल बाद नवंबर 2005 में भाजपा विधायक कृष्णानंद राय की गाजीपुर में नृशंस हत्या हुई। कृष्णानंद राय के हत्यारोपी मुख्तार अंसारी को किसका राजनीतिक संरक्षण मिलता रहा, यह किसी से छिपा नहीं। यह आम धारणा है कि राजनीतिक रसूख के कारण ही मुख्तार अंसारी कृष्णानंद राय हत्याकांड से बरी हो गया। जो भी हो, इसमें दो राय नहीं कि पहले की सरकारों के विपरीत मोदी सरकार की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति बेहद स्पष्ट है। उसे देश की सुरक्षा के साथ कोई समझौता मंजूर नहीं। चाहे वह बाहरी हो या आंतरिक, हर मोर्चे पर राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत बनाया गया है। सेना, पुलिस, सुरक्षा एजेंसियों को पूरी छूट मिली है। आतंकवाद के खिलाफ मोदी सरकार की जीरो टालरेंस की नीति और सेना-पुलिस के साथ अन्य सुरक्षा एजेंसियों के हाथ खोलने से उनका मनोबल ऊंचा हुआ है। वास्तव में इसी कारण नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद आतंकी घटनाएं निमन्तर स्तर पर है और उग्रवाद, नक्सलवाद भी नियंत्रण में है।

यूक्रेन में जारी सुरक्षा का संकट और इस संदर्भ में संयुक्त राष्ट्र की प्रासंगिकता

रूस और अमेरिका के वर्चस्व की लड़ाई में यूक्रेन दो पाटों के बीच घुन की तरह पिस रहा है। सबसे बड़ी बात है कि जिस संयुक्त राष्ट्र को वैश्विक संकट के दौरान उचित हस्तक्षेप के लिए अस्तित्व में लाया गया था, वह महाशक्तियों के समक्ष बौना दिखाई दे रहा है। इस मायने में उसकी प्रासंगिकता पर सवाल उठना स्वाभाविक है। जबकि रूस की सेना ने यूक्रेन की राजधानी कीव को चारों तरफ से घेर लिया है और हो सकता है कि आज यानी शनिवार तक वह उसे अपने कब्जे में ले भी ले। लाचारी की स्थिति में आ चुके यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदोमीर जेलेंसकी को शुक्रवार की सुबह कहना पड़ा कि यदि 96 घंटे के भीतर मदद नहीं मिली

तो आगे वे नहीं लड़ पाएंगे, इसलिए विश्व उनकी मदद करे। लेकिन अमेरिका समेत सभी यूरोपीय देशों ने सीधी सैन्य सहायता देने से मना कर दिया है। यूक्रेन के राष्ट्रपति की गुहार का असर संयुक्त राष्ट्र पर भी नहीं हो रहा है। किसी प्रकार के प्रत्यक्ष हस्तक्षेप करने में अक्षम संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरस ने यूक्रेन पर हमलों की निंदा तो की है, लेकिन हस्तक्षेप कर शांति के कोई उपाय नहीं कर पाने में निराशा ही जताई है। गुटेरस का कहना है कि दुनिया हाल के वर्षों में वैश्विक शांति और सुरक्षा को लेकर सबसे बड़े संकट का सामना कर रही है। उन्होंने रूस के दखल को यूक्रेन की संप्रभुता और अखंडता के लिए दोषी ठहराया। साथ ही ताजा घटनाक्रम को मिंस्क समझौते के उल्लंघन के लिए बड़ा झटका करार दिया है। अतएव इन कानूनों को पालन कराने का दायित्व संभालने वाला संयुक्त राष्ट्र क्यों हाथ मलते दिखाई दे रहा है, यह चिंतनीय पहलू है। संयुक्त राष्ट्र को आने वाली पीढ़ियों को उत्तर देना होगा कि जब फैसले लेने का समय था और जिन पर विश्व को दिशा देने का दायित्व था, वे विकसित देश या अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं क्या कर रही थी यदि संयुक्त राष्ट्र को खुद को प्रासंगिक बनाए रखना है तो उसे अपना प्रभाव दिखाना होगा और विश्वसनीयता को बढ़ाना होगा। आज संयुक्त राष्ट्र पर कई तरह के सवाल उठ रहे हैं। अफगानिस्तान पर संकट, दुनिया में चल रहे छद्म युद्ध (प्राक्सी वार), वैश्विक आतंकवाद और कोरोना वायरस की उत्पत्ति को लेकर भी संयुक्त राष्ट्र एवं विश्व स्वास्थ्य संगठन ने आज तक आशंकाएं दूर नहीं की है यदि यह वैश्विक संस्था अपने भीतर समयानुकूल सुधार नहीं लाती है तो कालांतर में महत्वहीन होती चली जाएगी और फिर इसके सदस्य देशों को इसकी जरूरत ही नहीं रह जाएगी। भारत जैसे देश को संयुक्त राष्ट्र की स्थायी सदस्यता से बाहर रखते हुए इस संस्था ने जता दिया है कि यहां चंद अलोकतांत्रिक या तानाशाह की भूमिका में आ चुके देशों की ही तूती बोलती है। यूक्रेन के सिलसिले में भी यही मानसिकता साफ दिखाई दे रही है। उल्लेखनीय है कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शांतिप्रिय देशों के संगठन के रूप में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का गठन हुआ था। इसका मुख्य उद्देश्य भविष्य की पीढ़ियों को युद्ध की विभीषिका और आतंकवाद से सुरक्षित रखना था। इसके सदस्य देशों में अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस और चीन को स्थायी सदस्यता प्राप्त है। याद रहे चीन जवाहरलाल नेहरू की अनुकंपा से ही सुरक्षा परिषद का सदस्य बना था। जबकि उस समय अमेरिका ने सुझाया था कि चीन को संयुक्त राष्ट्र में नहीं लिया जाए और भारत को सुरक्षा परिषद की सदस्यता दी जाए। लेकिन अपने उद्देष्य में परिषद को पूर्णतः सफलता नहीं मिली। भारत का दो बार पाकिस्तान और एक बार चीन से युद्ध हो चुका है। इराक और अफगानिस्तान, अमेरिका और रूस के जबरन दखल के चलते युद्ध की ऐसी विभीषिका के ऐसे शिकार हुए कि आज तक उबर नहीं पाए हैं। तालिबान के सत्ता में आने के बाद अफगानिस्तान में किस बेरहमी से विरोधियों और स्त्रियों को दंडित किया जा रहा है, यह किसी से छिपा नहीं रह गया है उत्तर कोरिया और पाकिस्तान बेखौफ परमाणु युद्ध की धमकी देते रहते हैं। दुनिया में फैल चुके इस्लामिक आतंकवाद पर अंकुश नहीं लग पा रहा है। साम्राज्यवादी नीतियों के क्रियान्वयन में लगा चीन किसी वैश्विक पंचायत के आदेश को नहीं मानता है। इसका उदाहरण मसूद अजहर जैसे खूंखार आतंकियों को अंतरराष्ट्रीय आतंकी घोषित करने पर चीन का बार-बार वीटो का इस्तेमाल करना है। जबकि भारत विश्व में शांति स्थापित करने के अभियानों में मुख्य भूमिका निर्वाह करता रहा है। वर्ष 1945 में परिषद के अस्तित्व में आने से लेकर अब तक दुनिया बड़े परिवर्तनों की वाहक बन चुकी है। इसीलिए भारत लंबे समय से परिषद के पुनर्गठन का प्रशन उसकी बैठकों में उठाता रहा है। कालांतर में इसका प्रभाव यह पड़ा कि संयुक्त राष्ट्र के अन्य सदस्य देश भी इस प्रशन की कड़ी के साझेदार बनते चले गए। परिषद के स्थायी व वीटोधारी देशों में अमेरिका, रूस और ब्रिटेन भी अपना मौखिक समर्थन इस प्रशन के पक्ष में देते रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र के 193 सदस्य देशों में से दो तिहाई से भी अधिक देशों ने सुधार और विस्तार के लिखित प्रस्ताव को मंजूरी 2015 में दे दी है। इस मंजूरी के चलते अब यह प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र के एजेंडे का महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया है। संयुक्त राष्ट्र के नेतृत्व में विश्व स्वास्थ्य संगठन, अंतरराष्ट्रीय न्यायालय, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, यूनिसेफ और शांति सेना जैसे संगठन काम करते हैं। लेकिन चंद देशों की ताकत के आगे ये संगठन नतमस्तक होते दिखाई देते हैं। इसीलिए शांति सेना की विश्व में बढ़ते सैनिक संघर्षों के बीच निर्णायक भूमिका दिखाई नहीं दे रही है। फिर भी संयुक्त राष्ट्र के शांति रक्षा अभियानों में शांतिरक्षक बलों ने नागरिकों की रक्षा के लिए प्राण न्यौछावर किए हैं। अंतरराष्ट्रीय न्यायालय जरूर युद्ध में अत्याचारों से जुड़े कई दशकों पुराने वैश्विक विवादों में न्याय देता दिख जाता है। परंतु विश्व में आर्थिक और सामाजिक उद्देश्य से बनाए गए तमाम वैश्विक संगठन भी आज लाचार दिख रहे हैं। काबुल पर तालिबानी कब्जे के बाद से अफगानिस्तान में शरणार्थियों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। यही हालात कल यूक्रेन में पैदा हो सकते है। इस बारे में पूरी दुनिया को विचार करना चाहिए।

डिग्री कॉलेज में 205 विद्यार्थियों ने दी परीक्षा

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। सेक्टर-39 स्थित डिग्री कॉलेज में शुक्रवार को दो पलियों में 205 विद्यार्थियों ने परंपरागत विषम सेमेस्टर की परीक्षा दी। प्रोसेफर शालिनी सिंह ने बताया कि प्रथम पाली में एलएलबी पांचवें सेमेस्टर एमएससी तृतीय, एम कॉम तृतीय, के 176 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी, जबकि चार अनुपस्थित रहे। वहीं, दूसरी पाली में एमए तृतीय सेमेस्टर की परीक्षाएं हुई। सभी परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी। बता दें कि राजकीय डिग्री कॉलेज में आईएमए व एशियन लॉ कॉलेज के परीक्षार्थी भी परीक्षा दे रहे हैं। जिले में परीक्षा आठ केंद्र पर हो रही है।

चक्रवर्ती हवा से बारिश हुई

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। चक्रवाती हवा में जमाव के कारण नोएडा में शुक्रवार देर शाम बारिश हुई। इससे लोगों को फिर से ठंड का एहसास हुआ । इससे प्रदूषण के स्तर में गिरावट आई। शुक्रवार को भी नोएडा का एक्यूआई 268 तो ग्रेटर नोएडा का 308 दर्ज हुआ।शुक्रवार को अधिकतम तापमान 28 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ, जो फरवरी में दूसरी बार सबसे ज्यादा गर्म दिन की श्रेणी में दर्ज हुआ है। दिन में धूप व गर्मी से राहत पाने के लिए लोगों ने पंखे का सहारा लेना भी शुरू कर दिया है। उधर, मौसम में बदलाव के कारण अस्पतालों में मरीजों की भीड़ भी बढ़नी शुरू हो गई है।मौसम विशेषज्ञ महेश पलावत ने बताया कि पश्चिमी विक्षोभ के चलते रात में बूंदाबांदी हुई। उन्होंने कहा अब मौसम साफ रहेगा। होली से पहले अधिकतम तापमान 30 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचने की उम्मीद है। हवा की गति मंद होने के कारण आगे चलकर वायु प्रदूषण के स्तर में भी बढ़ोतरी होगी। इसका लोगों की सेहत पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा जिला अस्पताल के चिकित्सक डॉ. विकास खैरिया ने बताया कि मौसम में बदलाव के कारण इन दिनों मरीजों की संख्या बढ़ गई है। सबसे ज्यादा बच्चे व बुजुर्गों पर मौसम की मार पड़ रही है। आने वाले दिनों में मरीजों की संख्या अधिक बढ़ सकती है। खानपान को बेहतर कर शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाने के साथ ही लोगों को ठंडी चीजों से परहेज करने की सलाह दी जा रही है।

विदेशी इंजीनियर संभालेंगे टावर गिराने की कमान

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। सुपरटेक एमरॉल्ड कोर्ट सोसाइटी में बने अवैध ट्विन टावर विदेशी इंजीनियरों की निगरानी में गिराए जाएंगे। इसके लिए दक्षिण अफ्रीका के इंजीनियर नोएडा पहुंच गए हैं। शनिवार को वे साइट पर पहुंचकर कमान संभाल लेंगे। वहीं दूसरी ओर ब्लास्ट डिजाइन रिपोर्ट को लेकर सीबीआरआई का जवाब शुक्रवार को नहीं आ सका। शनिवार को रिपोर्ट आ सकती है।ट्विन टावर की ब्लास्ट डिजाइन रिपोर्ट को सीबीआरआई अभी देख रहा है। डिजाइन में एडिफिस एजेंसी की तरफ से ये बताया गया है कि किस तरह विस्फोटक के जरिए ट्विन टावर ढहाए जाएंगे। दोनों ही टावर टूटने के बाद सेक्टर-93 से एक्सप्रेस-वे की तरफ जाने वाली सड़क और एटीएस विलेज सोसाइटी के बीच में मलबा गिरेगा। टुकड़ों में यह मलबा झरने से गिरने वाले पानी की तरह गिरते हुए दिखाई देगा। एजेंसी के इंजीनियरों का दावा है कि कंट्रोल ब्लास्ट ये टावर टूटेंगे। इसके बाद मलबा भी तय की गई जगह में ही गिरेगा। यह हर संभव कोशिश की जाएगी कि किसी भी तरह मलबा एमरालड कोर्ट सोसाइटी के टावर नंबर-1 की तरफ न जाने पाए। एजेंसी ने इस ब्लास्ट की डिजाइन की ड्राइंग भी अपने रिपोर्ट में लगाई है। पिछले दिनों हुए प्रजेंटेशन में भी यह ड्राइंग दिखाई जा चुकी है। इससे ये अनुमान है कि डिजाइन पर सीबीआरआई की कोई आपत्ति नहीं आएगी। फिर भी प्राधिकरण व एजेंसी दोनों सीबीआरआई की रिपोर्ट का इंतजार कर रहे हैं वहीं दूसरी तरफ तैयारी के लिए शुक्रवार शाम को एडिफिस एजेंसी की सहयोगी दक्षिण अफ्रीका की जेट डिमोलेशन एजेंसी के एक्सपर्ट इंजीनियरों की टीम नोएडा पहुंच गई है। यह इंजीनियर शनिवार को साइट पर जाकर निरीक्षण करेंगे।

सिलाई प्रशिक्षण केंद्र पर महिलाओं को दिए प्रमाण पत्र

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। सेक्टर-72 सर्फाबाद गांव में सोनिया कोहली महिला सिलाई प्रशिक्षण केंद्र पर शुक्रवार को महिला प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण प्रमाण पत्र दिए गए। इस केंद्र में करीब 25 महिला प्रशिक्षुओं ने छह महीने का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

नवरतन संस्था के अध्यक्ष अशोक श्रीवास्तव ने सभी महिलाओं को प्रमाण-पत्र प्रदान किए। कार्यक्रम का संचालन केंद्र की संचालिका व प्रशिक्षक प्रमिला पाण्डेय ने किया

ग्रेटर नोएडा में लावारिस कुत्तों का पहला नसबंदी केंद्र शुरू , कुत्तों की नसबंदी के लिए नंबर जारी

ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने स्वर्णनगरी में बनाया है नसबंदी केंद्र नई संस्था ने लावारिस कुत्तों की नसबंदी की जिम्मदारी संभाली नसबंदी के बाद पहचान के लिए कुत्ते के गले में पहनाया जाएगा पट्टा

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। ग्रेटर नोएडा में लावारिस कुत्तों की बढ़ती आबादी को नियंत्रित करने और निवासियों को परेशानी

को दूर करने के लिए प्राधिकरण ने बृहस्पतिवार को नई पहल की है। ग्रेटर नोएडा के सेक्टर स्वर्णनगरी में लावारिस कुत्तों का नसबंदी केंद्र शुरू कर दिया है। सबसे पहले ग्रेटर नोएडा के सेक्टर ओमीक्रॉन टू के निवासियों ने अपने यहां के लावारिस कुत्तों की नसबंदी कराने के लिए पैसे जमा करा दिए हैं। यहां की एसोसिएशन ने 250 रुपये प्रति कुत्ते के हिसाब से 2500 रुपये जमा कराए हैं। हालांकि प्रति डॉगी 1000 रुपये का खर्च आएगा। शेष खर्च ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण वहन करेगा। ह्यूमेन वेलफेयर नाम की संस्था को यह जिम्मेदारी दी गई है। नसबंदी के बाद कुत्ते के गले में पट्टा पहनाया जाएगा। साथ ही कान पर कट भी लगा दिया जाएगा। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के सीईओ नरेंद्र भूषण के निर्देश पर जनस्वास्थ्य विभाग ने स्वर्णनगरी में कुत्तों के नसबंदी का केंद्र बना दिया है। साथ ही कुत्तों की नसबंदी के लिए ह्यूमेन वेलफेयर सोसाइटी से करार किया है। यही संस्था कुत्तों को पकड़कर लाएगी और उनकी नसबंदी करेगी। एक कुत्ते की नसबंदी पर 1000 हजार रुपये का खर्च आएगा। प्रति कुत्ते के हिसाब से 250 रुपये सेक्टरवासियों या सोसाइटीवासियों को वहन करना पड़ेगा। शेष 750 रुपये ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण वहन करेगा। जिस भी सेक्टर या सोसाइटी की आरडब्लूयूए को अपने यहां के कुत्तों की नसबंदी करानी है वह प्रति कुत्ते के हिसाब से 250 रुपये संस्था के खाते में जमा करा सकते हैं। संस्था के प्रतिनिधि कुत्तों को पकड़कर लाएंगे। उनकी नसबंदी करेंगे और फिर उनको वहीं पर छोड़ आएंगे, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट के ऐनीमल बर्थ कंट्रोल (एबीसी) रूल के अनुसार जिस कुत्ते को जहां से पकड़ा जाएगा, नसबंदी के बाद उसे वहीं छोड़ना होगा। बृहस्पतिवार को डॉग स्टरलाइजेशन सेंटर (कुत्ता नसबंदी केंद्र) की शुरुआत के मौके पर ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के जनस्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ प्रबंधक सलिल यादव ने बताया कि यह स्टरलाइजेशन सेंटर है। यहां पर कुत्तों की सिर्फ नसंबदी की जाएगी। इस सेंटर में 53 कैनल्स बनाए गए हैं, जिसमें नसबंदी के बाद पांच दिन के लिए कुत्तों को रखा जाएगा। उनको एंटी रेबीज इंजेक्शन भी लगाया जाएगा। उसके बाद उन्हें जहां से लाया गया था, वहीं पर वापस छोड़ दिया जाएगा। जिस सेक्टर या सोसाइटी की आरडब्लूयूए का पैसा पहले जमा होगा, वहां के कुत्तों की नसबंदी पहले की जाएगी। उन्होंने बताया कि इस सेंटर में ऑपरेशन रूम व वेटिंग एरिया भी बनाया गया है। सेंटर में कुत्तों की देखरेख के लिए 24 घंटे कर्मचारी तैनात रहेंगे। ऑपरेशन रूम में एसी, फ्रिज व आरओ की व्यवस्था की गई है। इस केंद्र को शुरू करने के मौके पर प्रबंधक वैभव नागर व जितेंद्र यादव, वैटनिरी डॉक्टर प्रेम चंद्र, स्मार्ट सैचुरी की फाउंडर कावेरी राणा, ह्यमेन वेलफेयर के प्रतिनिधि व आरडब्लूयूए के पदाधिकारी मौजूद रहे। आरडब्लूयूए के पदाधिकारियों ने भी इसकी सराहना की। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के सीईओ नरेंद्र भूषण ने इस पहल के लिए जनस्वास्थ्य विभाग की सराहना की। ग्रेटर नोएडावासियों से लावारिस कुत्तों की नसबंदी कराने के लिए आगे आने की अपील की है। कुत्तों की नसबंदी के लिए इस नंबर पर करें कॉल ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने कुत्तों की नसबंदी कराने के लिए मोबाइल नंबर-7838565456 जारी किया है। इस पर कॉल करके नसबंदी कराने की सूचना दी जा सकती है। सेक्टरवासी या सोसाइटी के निवासी ह्यूमेन वेलफेयर सोसाइटी के बैंक खाते (संख्या -67760170087, आईएफएसी कोड-आईसीआईसी 0006776, आईसीआईसीआईबैंक) में प्रति कुत्ते के हिसाब से 250 रुपये जमा करा दें। संस्था की टीम मौके पर जाकर कुत्तों को पकड़कर लाएगी। उनकी नसबंदी के बाद वापस छोड़ आएगी।

नीतीश कुमार के मंच पर 'विधायकजी' की बेइज्जती, बेगूसराय में सीएम ने खुद ठीक की अफसरों की गलता

पटना (बेगूसराय)। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार समाज सुधार यात्रा के क्रम में शनिवार को बेगूसराय पहुंचे। उन्होंने यहां जीविका दीदियों के साथ शराबबंदी, बाल विवाह और दहेज उन्मूलन जैसे विषयों पर संवाद किया। इस दौरान अधिकारियों की अनदेखी से सीएम का एक दावा अगले ही दिन फेल होता दिखा। दरअसल, एनडीए विधान मंडल दल की बैठक में शुक्रवार को ही हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा ने अफसरों द्वारा जनप्रतिनिधियों की अनदेखी का मसला उठाया था। इसके बाद मुख्यमंत्री ने कहा था कि अब ऐसी शिकायत नहीं होने दी जाएगी। लेकिन, बेगूसराय में मुख्यमंत्री की सभा में ठीक इसके उलट हो गया। यहां मंच पर बैठे विधायकजी पर किसी ने ध्यान तक नहीं दिया। हालांकि कार्यक्रम खत्म होने से पहले

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों की गलती खुद ही सुधार दी। सीएम के इस कार्यक्रम में बतौर जनप्रतिनिधि बखरी के सीपीआइ विधायक सूर्यकांत पासवान भी मौजूद थे। लेकिन उनको मंच पर बैठने की जगह मिलने के बावजूद काफी असहज महसूस करना पड़ा। दरअसल, हर अतिथि ने सभा को संबोधित करने के दौरान मंच पर बैठे करीब-करीब हर जनप्रतिनिधि का नाम लिया, लेकिन किसी ने सीपीआइ विधायक का नाम नहीं लिया। इससे पहले डीएम ने भी विधायक की उपेक्षा कर दी। दरअसल, डीएम ने मंच पर बैठे सभी विधायकों, विधान पार्षदों और अन्य अतिथियों को पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया, लेकिन सीपीआइ विधायक को उन्होंने भी छोड़ दिया। आपको यह भी बता दें कि कार्यक्रम में बखरी विधायक को छोड़कर विपक्षी दलों का कोई बड़ा नेता शामिल नहीं हुआ। कार्यक्रम के आखिर में मुख्यमंत्री का संबोधन हुआ तो उन्होंने एक-एक कर सभी विधायक, विधान पार्षद और मंत्रियों के अलावा पार्टियों के पदाधिकारियों को भी नाम लेकर सम्मान दिया। उन्होंने सभी जनप्रतिनिधियों और नेताओं का नाम लेने के बाद ही वरिष्ठता क्रम के अनुसार अधिकारियों का नाम लेना शुरू किया।

आखिर रूस ने क्यों यूक्रेन पर क्यों किया हमला क्या है इसके पीछे पुतिन की मंशा, विस्तार से जानें

नई दिल्ली । रूस और यूक्रेन का विवाद अब एक युद्ध का रूप ले चुका है। पूरी दुनिया की नजरें इन दोनों देशों के अलावा यूरोप और अमेरिका पर भी लगी हुई है। लेकिन क्या आप रूस के यूक्रेन पर हमले की असल वजह के बारे में जानते है। यदि नहीं तो आज हम इसके बारे में आपको बता देते है। इससे पहले अआपको बता देते है कि रूस के विघटन के बाद जो देश अलग हुए थे उनमें यूक्रेन भी एक था। रूस के साथ में उस वक?त क्रीमिया भी था जिसको वर्ष 2014 में रूस ने आजाद कर अपने नियंत्रण में ले लिया था। इसके अलावा यूक्रेन के डोनबास, लुहास्क और डोनेस्तक में रूसी समर्थकों बहुसंख्यक है। यूक्रेन के बाहर की बात करें तो बेलारूस, जार्जिया पूरी तरह से रूस के साथ है। इसका अर्थ ये भी है कि यूक्रेन रूस से पूरी तरह से घिरा हुआ है। अब हम उन कारणों की बात करते है जिसकी वजह से रूस को यूक्रेन पर हमले का कदम उठाना पड़ा है। इसकी सबसे बड़ी वजह अमेरिका द्वारा यूक्रेन को नाटो संगठन में शामिल करने की कवायद है। अमेरिका के वर्चस?व वाले इस संगठन में 30 देश शामिल है जिनमें से अधिकतर यूरोप के ही है। हालांकि इसमें सबसे अधिक जवान अमेरिका के ही है। रूस पर दबाव बनाने और अपने पुराने विवादों के

कारण अमेरिका लगातार इस तरह की कवायद करता रहा है। अमेरिका पहले से ही रूस पर प्रतिबंध लगाकर उसको दबाव में लाने की कवायद कर चुका है। हालांकि उसकी ये चाल अब तक काम नहीं आई थी। अब वो यूक्रेन के सहारे इस काम को करना चाहता है। रूस की चिंता ये है कि यदि यूक्रेन नाटो के साथ चला जाता है तो उसकी सेना और उसके हथियारों के दम पर अमेरिका उसको नुकसान पहुंचाने में आशिंक रूप से सफल हो सकता है। इस हमले की दूसरी वजह अमेरिका और पश्चिमी-यूरोपीय देशों का नार्ड स्ट्रीम 2 पाइपलाइन पर रोक लगाना भी शामिल है। आपको बता दें कि रूस ने इस परियोजना पर अरबों डालर का खर्च किया है। रूस इसके जरिये फ्रांस, जर्मनी समेत समूचे यूरोप में गैस और तेल की सप्लाई करना चाहता है। इससे पहले ये सप्लाई जिस पाइपलाइन के जरिए होती थी वो यूक्रेन से जाती थी। इसके लिए रूस हर वर्ष लाखों डालर यूक्रेन को अदा करता था। नई पाइपलाइन के बन जाने से यूक्रेन की कमाई खत्म हो जाएगी। यूक्रेन के रूस से अलगाव की एक बड़ी वजह में ये भी शामिल है। तीसरी वजह ये है कि रूस नहीं चाहता है यूक्रेन किसी भी तरह से अमेरिका के साथ जाए। इसकी एक बड़ी वजह ये भी है कि रूस का यूक्रेन से भावनात्मक रिश्ता है। रूस की नींव यूक्रेन की धरती से ही रखी गई थी। रूस की पहचान यूराल पर्वतश्रंख्ला भी यूक्रेन से ही होकर गुजरती है। अमेरिका और रूस के बीच का विवाद काफी लंबे समय से है। शीत युद्ध के बाद भी स्थितियां बदली नहीं हैं। वहीं दूसरी तरफ रूस की शक्ति को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। रूस केवल इतना ही चाहता है उसका मान कायम रहे और उसको बदनाम न किया जाए।

विदेश सचिव बोले- यूक्रेन में जारी संकट से निपटने के लिए उठाए गए कई कदम, भारतीय नागरिकों की सुरक्षा हमारी प्राथमिकता

नई दिल्ली। यूक्रेन पर रूसी सेना के हमले के बाद वहां फंसे भारतीयों को निकालने के लिए विदेश मंत्रालय सक्रिय हो गया है। विदेश सचिव हर्षवर्धन श्रृंगला ने गुरुवार को कहा कि हमारी प्राथमिकता यूक्रेन में फंसे भारतीयों की सुरक्षित वापसी है। स्थिति की समीक्षा के लिए प्रधानमंत्री मोदी की अध्यक्षता में सुरक्षा मामलों की कैबिनेट कमेटी की एक बैठक हुई है। प्रधानमंत्री ने इस बैठक में स्पष्ट तौर पर कहा है कि सरकार की प्राथमिकता यूक्रेन में भारतीय नागरिकों को सुरक्षित वापस लाना है। विदेश सचिव ने कहा कि यूक्रेन में हमारा दूतावास अभी भी काम कर रहा है। हम अपने छात्रों को सुरक्षा मुहैया कराने के लिए विश्वविद्यालयों, स्टूडेंट कान्ट्रैक्टर से संपर्क बनाए रखा है। यही नहीं भारतीयों की सुरक्षा के लिए दूतावास की ओर से कई सलाह जारी की गई हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने भी विदेश मंत्रालय से कहा है कि वह यूक्रेन में फंसे नागरिकों की मदद के लिए हर संभव कोशिशें करे।विदेश सचिव हर्षवर्धन श्रृंगला ने यह भी कहा कि यूक्रेन में आपात स्थितियों से निपटने के लिए कई कदम उठाए जा चुके हैं। हमने इस पर काफी पहले से काम शुरू कर दिया था। करीब एक महीने पहले यूक्रेन में भारतीय नागरिकों का पंजीकरण शुरू किया गया था। यूक्रेन में लगभग 20 हजार भारतीय नागरिक थे लेकिन पिछले कुछ दिनों में चार हजार भारतीय यूक्रेन से लौट चुके हैं। फिलहाल दिल्ली स्थित विदेश मंत्रालय के कंट्रोल रूम को 980 काल और 850 ईमेल मिले हैं विदेश सचिव हर्ष श्रृंगला ने आश्वस्त करते हुए कहा कि यूक्रेन में फंसे सभी भारतीयों को सुरक्षित वापस लाया जाएगा। उन्होंने बताया कि यूक्रेन से सटे चार देशों पोलैंड, रोमानिया, स्लोवाकिया और हंगरी के रास्ते भारतीय विद्यार्थिन्यों और दूसरे नागरिकों को निकालने पर

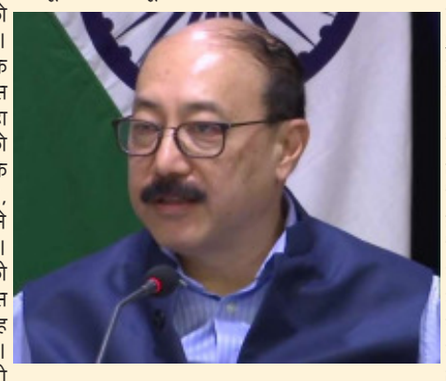

काम शुरू हो गया है। इन देशों से अलग-अलग 10 भारतीय राजनयिकों की टीम यूक्रेन के लिए रवाना हो चुकी है। हंगरी स्थित भारतीय दूतावास कर्मिन्यों का एक दल इस उद्देश्य से यूक्रेन की सीमा से सटे जोहांवी नाम की जगह पर भेजा गया है विदेश सचिव हर्ष श्रृंगला ने कहा कि पोलैंड एवं रोमानिया की यूक्रेन से लगी सीमा पर भी भारतीय नागरिकों की सुविधा के लिए केंद्र बनाया जा रहा है। जबकि यूक्रेन की सीमा के भीतर भी दो सेवा केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं ताकि जो नागरिक इन पड़ोसी देशों के जरिये बाहर जाना चाहते हैं, उन्हें सुविधा हो। यूक्रेन में तकरीबन 20 हजार भारतीय नागरिक और विद्यार्थी थे जिनमें से चार हजार पिछले 10 दिनों में वहां से निकल चुके हैं।विदेश सचिव हर्षवर्धन श्रृंगला ने बताया कि विदेश मंत्री एस. जयशंकर की आज यूक्रेन के विदेश मंत्री के साथ बात होने की उम्मीद है। जहां तक तमाम मुल्कों की ओर से रूस पर लगाए गए प्रतिबंधों का सवाल है तो हमें देखना होगा कि इन प्रतिबंधों का हमारे हितों पर क्या प्रभाव पड़ेगा। विदेश सचिव स्पष्ट किया कि हमें इस बात को तो स्वीकार करना ही होगा कि किसी भी प्रतिबंध का हमारे संबंधों पर प्रभाव पड़ेगा विदेश सचिव हर्षवर्धन श्रृंगला ने यह भी कहा कि विदेश मंत्री पोलैंड, रोमानिया, स्लोवाकिया, हंगरी के विदेश मंत्रियों से भी बात करेंगे इस बीच समाचार एजेंसी पीटीआइ की रिपोर्ट के मुताबिक हंगरी में भारतीय दूतावास ने एक टीम को यूक्रेन में फंसे भारतीयों को निकालने में मदद करने के लिए भेजा है। यह टीम जोहायी सीमा चौकी पर भेजी गई है। मालूम हो कि हंगरी की सीमा यूक्रेन से लगी हुई है। भारतीयों को सड़क मार्ग से पड़ोसी मुल्कों तक पहुंचाने जैसे विकल्पों पर भी विचार किया जा सकता है।

बिहार में मौसम के लिए आज भी येलो अलर्ट, जानें कब बंद होगा बारिश और ओले गिरने का सिलसिला

पटना । बिहार में बंगाल की खाड़ी से आ ही नमी युक्त पूर्वी हवा के प्रभाव से मौसम में बदलाव देखने को मिल रहा है। मौसम विज्ञान केंद्र पटना के अनुसार अगले 24 घंटों के दौरान उत्तर-पश्चिम, उत्तर-मध्य, दक्षिण-मध्य भाग के पटना समेत प्रदेश के अलग-अलग स्थानों पर एवं दक्षिण पूर्व भाग के कुछ स्थानों पर हल्के से मध्यम स्तर की बारिश का पूर्वानुमान है। वहीं प्रदेश के उत्तर-पश्चिम, उत्तर-मध्य, दक्षिण-मध्य भाग के कुछ स्थानों पर मेघ गर्जन के साथ ओलावृष्टि हो सकती है। इसे देखते हुए मौसम विज्ञान केंद्र की ओर से 'यलो-अलर्ट' जारी किया गया है। मेघ गर्जन व बिजली चमकने को लेकर मौसम विज्ञान केंद्र ने लोगों को सुरक्षित स्थान पर रहने की सलाह दी है। शुक्रवार को पटना व आसपास इलाकों में बादल छाए रहे, वहीं पिछले 24 घंटों के दौरान प्रदेश के भोजपुर, लखीसराय, नौहट्टा, औरंगाबाद, शेरघाटी, नवादा में हल्की बारिश दर्ज की गई। वहीं प्रदेश के दक्षिण पश्चिम भाग में मेघ गर्जन के साथ बिजली चमकी। मौसम विज्ञानी की मानें तो 24 घंटों के बाद प्रदेश का मौसम सामान्य होने के साथ तापमान में दो से तीन डिग्री की वृद्धि होगी। एक मार्च यानी शिवरात्रि तक मौसम सामान्य हो जाएगा। पिछले 24 घंटों के दौरान छपरा का न्यूनतम तापमान 13.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।पंजाब से लेकर बंगाल की खाड़ी तक चक्रवातीय संचरण बनने के कारण राजधानी समेत प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में अगले 72 घंटे में भारी बारिश हो सकती है। इसको लेकर मौसम विभाग ने लोगों से सतर्क रहने

की अपील की है। उत्तर बिहार के जिलों के लिए येलो एवं ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। इन इलाकों में तेज आंधी, वज्रपात की संभावना है। इधर राज्य के कई जिलों में शुक्रवार को रुक-रुककर बारिश होती रही। राजधानी में शुक्रवार को 19 मिलीमीटर बारिश रिकार्ड की गई। पिछले चौबीस घंटे में बाल्मीकिनगर में 80, चेनारी में 70, इंद्रपुरी में 50 मिलीमीटर बारिश रिकार्ड की गई। बारिश के मद्देनजर मौसम विज्ञानियों ने शनिवार के लिए राज्य में येलो अलर्ट जारी कर दिया है। पटना मौसम विज्ञान केंद्र के निदेशक विवेक सिन्हा का कहना है कि वर्तमान में पंजाब से लेकर बंगाल की खाड़ी तक एक चक्रवातीय संचरण बना हुआ है। इसके अलावा स्थानीय कारणों से भी प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में बारिश होती रही। वहीं बांका में सबसे अधिकतम तापमान 30.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। जबकि पटना का न्यूनतम तापमान 16.0 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। पिछले 24 घंटों के दौरान प्रदेश के न्यूनतम तापमान में आंशिक वृद्धि दर्ज की गई। राजधानी दो डिग्री की वृद्धि के साथ 16.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। जबकि गया के न्यूनतम तापमान, सामान्य से तीन डिग्री की वृद्धि के साथ 16.0 डिग्री रहा।

राशिफल

मेष-:आत्मविश्वास के साथ नए व्यावसायिक कार्यों को पूर्ण करेंगे व पारिवारिक विवादों का हल करेंगे। कठिन परिस्थितियों व द्वंद्व में फंसने पर अंतर्मन में ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित होगी।

वृष-:तनावपूर्ण परिस्थितियों में समझौते व शांति का मार्ग निकलेगा। घर व कार्यस्थल पर स्नेह व सौहार्द रहेगा। व्यावसायिक साझेदारी मजबूत होगी।

मिथुन-:परिस्थितियों से पराजित व मानसिक तनाव महसूस करेंगे। निजी व व्यावसायिक जीवन में विकल्पों के मध्य दिल व दिमाग विपरीत दिशा में खींचेंगे। निरर्थक प्रयासों से निराशा होगी।

कर्क-:घर व आफिस की सामान्य दिनचर्या बोझिल प्रतीत होंगे। उसमें परिवर्तन लाने का प्रयास करेंगे। किसी भी प्रकार की क्षति या असफलता को लेकर व्यथित न हों।

सिंह-:घर व कार्यस्थल पर चीजें सुचारू गति से आगे बढ़ेंगी। आपके गरिमामय व्यक्तित्व को प्रशंसा मिलेगी। एक वयोवृद्ध व्यक्ति अविश्वसनीय साबित हो सकता ह

कन्या-: जीवन में सकारात्मक परिवर्तन होंगे। निजी संबंधों में सहयोग व सौहार्द रहेगा, किंतु व्यापार में लाभ-हानि का सामना करना पड़ सकता है।

तुला-:मुखौटों व बचाव के प्रयासों को ठुकराते हुए कठोरता से सत्य को इंगित करेंगे। आत्मविश्वास से परिपूर्ण व वैचारिक रूप से स्पष्ट रहेंगे।

वृश्चिक-: व्यावसायिक मामलों में आत्मविश्वास के साथ लिए गए निणय्य लाभप्रद साबित होंगे। निजी संबंधों में स्वतंत्रता को महत्व देंगे। व्यावसायिक जीवन में रचनात्मकता व मौलिकता का प्रदर्शन करेंगे।

धनु-:यथार्थवादी व व्यावहारिक रहते हुए एक समय पर एक कदम बढ़ाएंगे। भावनात्मक जुड़ाव निरर्थक व तकलीफदेह साबित होगा।दीर्घकालिक प्रतिबद्धताओं को महत्व दें।

मकर-:कठिन परिश्रम से व्यावसयिक कार्य पूर्ण होंगे। वित्तीय मामले हल होंगे व तनाव से मुक्ति मिलेगी। कार्यस्थल पर चतुर प्रयासों से नकारात्मक तत्व सामने आएंगे।

कुंभ-:निजी जीवन में आनंद रहेगा। साथी संग प्रेम के पल साझा करेंगे। व्यावसायिक जीवन में मुखर व निष्ठावान रहते हुए प्रशंसा अर्जित करेंगे। बीमारी से उबरेंगे व स्फूर्त रहेंगे।

मीन-:निजी संबंधों में प्रेम व सौहार्द रहेगा। सामाजिक जीवन व्यस्त व थकानभरा रहेगा। व्यावसायिक जीवन में चीजें सुचारू गति से आगे बढ़ेंगी। आवभगत के दौरान अपव्यय से बचें।

चुनावी महापर्व में मतदान कर निभाएंगे अहम भूमिका

सोनभद्र। लार्ड बुद्धा इंफॉर्मेशन टेकनेलॉजी इंस्टीट्यूट में युवा मतदाता जागरूकता अभियान का कार्यक्रम गुरुवार को आयोजित किया गया।

इसमें संस्थान में आवासीय सिलाई प्रशिक्षण प्राप्त कर रही छात्राएं व योगा थेरेपी की प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर प्रतिभाग किया। कार्यक्रम के दौरान छात्राओं ने सामूहिक रूप से यह शपथ लिया कि 7 मार्च को जिले में सातवें चरण के चुनाव में हम युवा मतदाता इस महापर्व में अपनी अहम भूमिका निभाएंगे। खुद मतदान करेंगे और दूसरों को भी मतदान के प्रति जागरूक करेंगे। घर परिवार और समाज के हर व्यक्ति को मतदान कराने का काम करेंगे। इस कार्यक्रम में प्रतिभाग करने वाले युवाओं मतदान करने के दौरान मुख्य रूप से शिक्षा- रोजगार- सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए युवा अपना मतदान करेगा। संस्थान के डायरेक्टर चंद्रेश कुमार एवं सहकर्मी सतीश कननैजिया, संदीप कुमार, राज कुमार वर्मा, योगी संकटमोचन, श्वेता, खुशबू, दीपशिखा, पूनम, दिव्या, सरिता सिंह समेत शिक्षक मौजूद रहे।

ढ़ाई वर्ष से बंद वाराणसी-शक्तिनगर इंटरसिटी चलाएं जाने की मांग

अनपरा (सोनभद्र)। शक्तिनगर से वाराणसी तक चलने वाली इंटरसिटी एक्सप्रेस गत नवंबर वर्ष 2019 से बंद चल रही है। जिससें ऊर्जांचलवासियों को आवागमन में भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। शुरूआती दौर में इंटरसिटी को भारी कोहरे व लेट-लतीफी के चलते वर्ष 2019 में बंद किया गया था। उसके बाद से रेलवे दोहरीकरण, विद्युतीकरण आदि का हवाला देकर इंटरसिटी को बंद रखा गया। ऊर्जांचल से केवल एकमात्र यहीं एक ट्रेन थी, जो वाराणसी से जोड़ती थी। ट्रेन का संचालन बंद किए जाने से विवश होकर क्षेत्रवासी निजी वाहन या रोड़वेज बस में चार गुना अधिक किराया देकर यात्रा करने को विवश हैं। ऊर्जांचल से रेलवे विभाग को प्रतिदिन करोड़ों रूपये का राजस्व कोल व राख परिवहन से आता है। फिर भी यहां के रहवासियों की सुविधा को दरकिनार कर केवल प्रदूषण में जीने के लिए छोड़ दिया गया है। जब भी इस क्षेत्र में रेलवे के उच्चधिकारियों का आवागमन होता है तब यहां के रहवासी उन्हें ज्ञापन सौंप ट्रेन की सुविधा मुहैया कराएं जाने की मांग करते हैं। संबंधित अधिकारियों द्वारा कभी मेमू ट्रेन चलाने तो कभी जल्द ही बंद ट्रेनों का संचालन शुरू किए जाने का आश्वासन देते रहें है। ट्रेन की असुविधा से आजिज क्षेत्र के रहवासियों ने रेलवे के उच्चाधिकारियों का ध्यान इस ओर आकृष्ट करातें हुए बंद ट्रेनो का संचालन शुरू कराएं जाने की मांग की है।

सरकार बनने पर सभी वायदे पूरे करेगी कांग्रेस

शक्तिनगर (सोनभद्र)। पीड़ब्लूयूडी मोड राजीव गांधी मार्केट में कांग्रेस की सभा बुधवार की रात हुई। इसमें छत्तीसगढ़ के खाद्य एवं रसद मंत्री अमरजीत भगत ने कहा कि यूपी में कांग्रेस सरकार बनी तो महिलाओं के लिए किए गए सारे वायदे पूरे किये जाएंगे। पार्टी की नेता प्रियंका गांधी ने बेरोजगारों से लेकर किसानों तक की बेहतरी के लिए घोषणा की है। कांग्रेस सरकार बनने पर किसानों का कर्ज प्राथमिकता के आधार पर माफ किया जाएगा। छत्तीसगढ़ के मनेंद्रगढ़ के विधायक डा. विनय जायसवाल ने कहा कि भाजपा जुमलेबाजों की सरकार है। इस दौरान बसंती पनिका मौजूद रहीं।

ओबरा सी की पहली इकाई में कई परीक्षण शुरू

ओबरा (सोनभद्र)। निर्माणाधीन ओबरा सी से जल्द उत्पादन शुरू होने के संकेत दिखने लगे है। 660 मेगावाट की पहली इकाई का आक्जलरी बायलर लाइटप पूरा कर लिया गया है। तय लक्ष्य के तहत आगामी 31 मार्च को बायलर लाइटप किया जाना है। जिसको देखते हुए तमाम तकनीकी परीक्षण किए जा रहे हैं। पिछले कुछ दिनों के दौरान हुए परीक्षण की तेज गूंज 20 किलोमीटर दूर तक सुनाई दी। खासकर ओबरा कालोनी सहित बाजार क्षेत्र में इस शोर की जमकर चर्चा रही। बहरहाल सबकुछ ठीक रहा तो नए वित्त वर्ष में ओबरा सी ग्रिड से जुड़ जाएगी। साथ ही मई में व्यावसायिक उत्पादन भी शुरू हो जाएगा। कोरोना और मानसून सहित तमाम तकनीकी समस्याओं के कारण ओबरा सी के निर्माण में एक वर्ष से ज्यादा की देरी हो चुकी है। इससे पहले अगस्त 2021 में 660 मेगावाट वाली दोनों इकाइयों के स्टार्टअप पावर हेतु ओबरा परियोजना के बी ताप गृह के स्विच यार्ड से नवनिर्मित 400 केवी पारेषण लाइन को सफलतापूर्वक चार्ज कर दिया गया था। स्टार्टअप पावर हेतु पारेषण लाइन का निर्माण उत्तर प्रदेश पावर ट्रांसमिशन कारपोरेशन द्वारा किया गया है। इसके अलावा 660 मेगावाट वाली पहली इकाई के बायलर का हाइड्रो टेस्ट पिछले वर्ष ही किया गया था। इसके अलावा 275 मीटर ऊंची चिमनी के 269.48 मीटर कंक्रीट के बाहरी आवरण को तैयार करने में सफलता मिली थी। 660-660 मेगावाट की दोनों इकाइयों के लिए बनी चिमनी के अंदरूनी हिस्से में आधुनिक तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है।

दो छात्राओं को ट्रक ने मारी टक्कर, एक रेफर

ओबरा (सोनभद्र)। जुगैल थानांतर्गत आधा दर्जन बालू खदानों के कारण चोपन-भरहरी मार्ग पर बढ़े खतरे की प्रत्यक्षता सामने आने लगी है। खासकर इस मार्ग के पास मौजूद स्कूलों के बच्चों के लिए खतरनाक स्थिति पैदा हो गयी है। गुरुवार सुबह राजकीय कन्या विद्यालय गोठानी में चोपन-भरहरी मार्ग से परीक्षा देने जा रही साइकिल सवार दो छात्राओं को ट्रक ने टक्कर मार दी। टक्कर मारने के बाद ट्रक मौके से फरार हो गई। विजुल नदी पर बने पुल के पास बालू लेने जा रही ट्रक ने दोनों को धक्का मारा। साइकिल से जा रही कक्षा नौ की मनौती पुत्री राजू निवासी चंदौली तथा कक्षा 10 की अंतु पुत्री सुरज निवासी कुसपरवां ट्रक के धक्के से गंभीर रूप से घायल हो गई। टक्कर के दौरान ही उक्त ट्रक के पीछे ही बड़गवां स्वास्थ्य केंद्र जा रही एंबुलेंस ने तत्काल दोनों घायल छात्राओं को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चोपन पहुंचाया। जहां हालत खराब होने पर अंतु को ट्रामा सेंटर वाराणसी भेज दिया गया। वहीं मनौती का उपचार किया जा रहा है। घटना के बाद आस पास के रहवासियों सहित स्कूली बच्चों में भारी नाराजगी पैदा हो गई। घटना की सूचना पर ओबरा पुलिस क्षेत्राधिकारी शंकर प्रसाद एवं धीरेंद्र प्रताप चौधरी ने मौके पर पहुंच कर हालत काबू में किया। प्रत्यक्षदशिर्यों के सहयोग से पुलिस ने कई बालू खदानों पर फरार ट्रक को लेकर खोजबीन की। जिसमें एक बालू खदान से उक्त ट्रक को खोज निकाला गया। ट्रक को बरामद कर उसे जुगैल थाना ले जाया गया। खदान मालिकों द्वारा घायल छात्राओं के उपचार का जिम्मा उठाते हुए आर्थिक मदद की गई है।

टाप बाक्स टैक्स की दरों संग प्रक्रिया को सरल बनाने की पहल करे सरकार

मीरजापुर। मतदान की तारीख नजदीक आने के साथ ही दैनिक जागरण की ओर से चलाए जा रहे मतदाता जागरूकता अभियान में मतदान का संकल्प लेने वालों का कारवां बढ़ता जा रहा है। अभियान में विभिन्न सामाजिक व शैक्षणिक

संस्थानों के साथ व्यापारी भी शामिल हैं। नई सरकार चुनने के लिए व्यापारियों में सात मार्च को होने वाले मतदान को लेकर काफी उत्साह है। उनका कहना है कि सरकार को टैक्स की दरों में कमी के साथ ही प्रक्रिया को सरल बनाने की जरूरत है। बुधवार को दैनिक जागरण के मतदाता जागरूकता अभियान के साथ उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल के व्यापारियों ने सामूहिक रूप से शपथ ली। कहा कि व्यापारी वर्ग मतदान में पीछे नहीं रहेगा। कम मतदान हमारे शान के खिलाफ है। दैनिक जागरण का यह अभियान निश्चित तौर पर मतदान का ग्राफ बढ़ाने में कारगर साबित होगा। हम और हमारे परिवार के सदस्य बढ़-चढ़कर मतदान में भाग लेंगे। लोकतंत्र की मजबूती के लिए उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल ने व्यापारियों के साथ चुनावी चर्चा भी की। विभिन्न समस्याओं, सास्थ्य, शिक्षा, रोजगार व भ्रष्टाचार आदि मुद्दों के साथ हक की भी आवाज उठाई। अध्यक्ष शत्रुघन केशरी ने कहा कि मतदान हर नागरिक का लोकतांत्रिक हक और फर्ज है। इस हक को अदा करने में कोताही नहीं करना चाहिए। शैलेंद्र अग्रहरि ने कहा कि व्यापारी वर्ग के टैक्स से सरकार चलती है। व्यापारी के खून-पसीने की कमाई से सरकार का खजाना भरता है। चुनाव जीतने के बाद जनप्रतिनिधि साल दर साल जनता को अपने कार्यों का लेखा-जोखा दें तो चुनाव के समय सड़क पर उतरकर वोट मांगने की जरूरत ही न पड़े। व्यापारी दुर्गा प्रसाद चौधरी ने कहा कि यह अत्यंत्र दुःखद है कि अब भी 60 प्रतिशत से अधिक मतदान नहीं पाता। मताधिकार का प्रयोग न करने वाले मतदाता को सरकार पर सवाल उठाने या आलोचना करने का अधिकार नहीं है। शिवकुमार मुंदड़ा ने कहा कि देश तरक्की तभी करेगा, हर वोटर जब वोट करेगा। जयप्रकाश सेठ ने कहा कि वोट की ताकत से ही लोकतंत्र मजबूत होता है। संजय गुप्ता ने कहा कि लोकतंत्र में पूर्ण आस्था रखते हुए सभी को अपने मताधिकार का प्रयोग करना चाहिए। राजेंद्र अग्रवाल ने कहा कि उत्तर प्रदेश के विकास के लिए सभी मतदान अवश्य करें, जिससे सही प्रत्याशी का चयन हो सके। आशुतोष सोनी ने कहा कि जाति, धर्म से ऊपर उठकर मतदान करें। जो समस्याओं का समाधान करने का प्रयास करे ऐसा प्रतिनिधि होना चाहिए। रामबाबू कसेरा ने कहा कि जाति-धर्म के नाम पर बांटने वालों का पूर्णतया बहिष्कार करना चाहिए। पननलाल बुंदेला ने कहा कि रोजगारपरक योजना, किसान, व्यापारी, मजदूर के लिए ठोस मुद्दों पर बात करने वाला कोई राजनीतिक दल नहीं है। संजय कपूर व चंदन राठौर ने कहा कि टैक्स की दरें जब कम होंगी तो सरकार को राजस्व ज्यादा प्राप्त होगा। भ्रष्टाचार कम होगा। टैक्स की नीतियां भी सरल होनी चाहिए। इससे व्यापारियों की परेशानी दूर जाएगी। धीरेंद्र प्रताप जायसवाल ने कहा कि जिस तरह सरकार कर्मचारियों के लिए पेंशन की व्यवस्था की है, ठीक उसी प्रकार व्यापारियों के लिए भी होनी चाहिए। इनकम टैक्स जमा करने वाले व्यापारियों को भी इसका लाभ मिले। व्यापारियों ने नोटबंदी व जीएसटी पर भी सवाल उठाया। कहा कि इससे व्यापारी दिग्भ्रमित है। लोगों से अपील किया कि ऐसे जनप्रतिनिधि चुनें जो हमारी बात प्रमुखता व प्रखरता के साथ सदन में रखे। जाति-धर्म, संप्रदाय से ऊपर उठकर विकासोनमुखी सरकार के लिए मतदान करें।

अंगूठा न लगवाने पर किसानों ने किया विरोध प्रदर्शन

सोनभद्र। बृहस्पतिवार को कलेक्ट्रेट परिसर में घोरावल तहसील के किसानों ने विरोध प्रदर्शन किया और नारेबाजी की। आरोप लगाया कि क्रय केंद्रों पर धान तो क्रय कर लिया गया लेकिन अब तक अंगूठा नहीं लगवाया गया। इससे किसानों के धान का भुगतान भी नहीं हो सका है। इसको लेकर किसानों में असंतोष है। प्रदर्शन कर रहे किसानों ने बताया कि घोरावल परगना बड़हर के ओबरा डीह साधन सहकारी समिति पर दर्जनों किसानों का धान विक्रय किया गया है। धान विक्रय के बाद तमाम किसानों का अंगूठा नहीं लगाया गया है। 20 जनवरी से 27 जनवरी तक किसी का भी अंगूठा नहीं लगाया गया है। किसानों ने बताया कि किसी किसान के बहन की शादी तो किसी

को कर्ज चुकाने के लिए धन की जरूरत है लेकिन किसी का भी कार्य नहीं हो रहा है। किसानों का 850 कुंतल अभी धान का तौल हो चुका है। किसानों का आरोप है कि विभागीय कतिपय अधिकारियों, कर्मचारियों द्वारा अंगूठा लगवाने के लिए रुपये की मांग की जा रही है। किसानों ने चेताया कि यदि उनके धान का भुगतान नहीं किया गया तो वे आंदोलन करने के लिए बाध्य होंगे। किसानों ने डीएम का ध्यान इस ओर आकृष्ट कराते हुए संबंधित किसानों का अंगूठा लगाकर भुगतान कराने की मांग की है। इस मौके पर धनंजय सिंह, जगमोहन सिंह, जनार्दन, रामा सिंह, लाल बहादुर, मनीष कुमार, मनोज कुमार, अमरेश कुमार सहित दर्जनों किसान मौजूद रहे।

ऑनलाइन परमिट कि ओटीपी ना आने से खनन क्षेत्र में रहा सन्नाटा

(आधुनिक समाचार सेवा)
अनिल कुमार अग्रहरी

डाला (सोनभद्र)। बिल्ली मारकुंडी खनन क्षेत्र के पत्थर खदानों की आनलाइन परमिट की ओटीपी बंद हो गई है। इससे शुक्रवार से बिल्ली मारकुंडी के पत्थर खदानों में ब्लास्टिग एवं खनन कार्य पर पूर्णतया रोक लग गई हैं। जिसके कारण खनन क्षेत्र में पूरी तरह सननटा पसरा हुआ है। खनन कार्य में लगे टीपर कंप्रेसर मशीने आदि जहां तहां खड़ी पड़ी हैं। वहीं दैनिक मजदूर नै दिनों से बेकार होकर बैठे हैं। इससे प्रतिदिन प्रदेश सरकार के करोड़ो रूपये का राजस्व प्रभावित हो रहा है। क्षेत्र का पत्थर खनन उद्योग हजारों लोगों को रोजगार देने के साथ ही प्रदेश सरकार के राजस्व वृद्धि में अहम भूमिका निभाता है। इसके संचालन से जनपद ही नहीं प्रदेश के विभिन्न जिलो में गिट्टी-भस्सी की आपूर्ति होती है, जो सरकार के निर्माण सम्बंधित विकास कार्ये की अहम कड़ी से जुड़ा है। विकास को गति प्रदान करने वाला खनन उद्योग पर आए दिन संकट मंडराते रहते है। इसके कारण खनन उद्योग प्रभावित होता रहता है। बिल्ली मारकुंडी के पत्थर खदानों की आनलाइन परमिट की निकासी ओटीपी बंद होने से , जिसके कारण खदानों में ब्लास्टिग व खनन कार्य पूरी तरह बंद कर दिया गया। इससे खदानों में सननटा पसरा हुआ है। खदानों के खनन कार्य में लगने कंप्रेसर मशीन, टीपर आदि खामोश पड़ा हुआ है। वही हजारों की संख्या में लगे दैनिक मजदूर बेकार हो गये हैं। बगैर सूचना दिए ही अनिश्चितता के बादल छा गये हैं। इसको लेकर खदान संचालक भी संशय में पड़े हैं। ओटीपी बंद होने का कारण भी स्पष्ट नहीं हो सका है। खनन कार्य से जुड़े लोगों ने बताया कि 17 फरवरी से ही खदानों में अधिकारियों की टीम आने की सूचना से खनन कार्य को बंद कर दिया गया है।

किसानों ने गोदाम में जड़ा ताला, की नारेबाजी

मीरजापुर। क्रय केंद्र से अचानक मशीन मंगवा ली गई, जबकि आधा दर्जन किसानों की खरीद कर ली गई थी, लेकिन अंगूठा नहीं लग सका था। क्षेत्र के पुनीत कुमार, केवला प्रसाद, गंगेश्वर प्रसाद, शीतला प्रसाद, चंद्रकला, भगवानदास आदि किसानों ने आरोप लगाया कि सोमवार को उनके खाते में 14 सौ रुपये प्रति क्विंटल दर से भुगतान भेजा गया है, जबकि केंद्र प्रभारी द्वारा सरजू-52 धान में चावल का फीसद कम पड़ने के नाम पर पांच किलो प्रति क्विंटल की कटौती भी की गई थी। इतना ही नहीं 20 रुपये क्विंटल की दर से इसकी तौलवाई भी दी गई थी। इसके बावजूद जहां 1920 की दर से भुगतान होना था वहां मात्र 1400 रुपये की दर से खाते में रुपये भेजे गए है। इसके चलते गोदाम में ताला जड़ा गया। किसान अरविद कुमार मौर्य ने बताया कि मां चंद्रकला के नाम धान बेच दिया, केंद्र प्रभारी सविनय सिंह को कटौती से लेकर तौलाई भी दे दिया गया। इसके बाद भी भुगतान खाते में 1400 के दर से आया है। इसलिए इस तरह का निर्णय लेना पड़ा। गंगेश्वर प्रसाद, पुनीत कुमार, भगवानदास आदि ने भी आरोप लगाया कि मीरजापुर और सोनभद्र के लिए नियम दो लागू हुए। सोनभद्र में कम से कम 100 क्विंटल की खरीद हुई और मीरजापुर में 60 क्विंटल की ही खरीद की गई। जनपद के 22 केंद्र एकाएक बंद किए गए। इसमें पथरौर भी था। केंद्र प्रभारी को स्थिति से अवगत कराना था, लेकिन वह नहीं किया। अब तो बाजार में 1900 के दर से चावल मिल रहा है तो धान का रेट 1920 कौन देगा। -शैलेश कुमार सिंह, प्रबंधक धान खरीद।

मतदान करने के लिए बाइक रैली व पदयात्रा कर लोगों को जागरूक किया

मीरजापुर। जनपद के विभिन्न ब्लाकों के कर्मियों ने बुधवार को मतदान फीसद बढ़ाने के साथ अधिक से अधिक मतदान करने के लिए बाइक रैली व पदयात्रा कर लोगों को जागरूक किया। ब्लाक कर्मियों ने गांव-गांव भ्रमण कर लोगों को अच्छी सरकार व अच्छे जनप्रतिनिधि के चुनाव के लिए लोकतंत्र के महापर्व पर बढ़-चढ़ कर मतदान करने की अपील का बीडीओ रविद्र कुमार सिंह ने सुरहा ग्राम पंचायत स्थित पंचायत भवन के पास से मतदाता जागरूकता बाइक रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। ब्लाक कर्मियों ने बाइक रैली में भाग लिया एवं लोगों को सात मार्च को सारे काम छोड़कर पहले मतदान करने की अपील की। रैली पूरे गांव का भ्रमण कर पंचायत भवन परिसर में आकर समाप्त हुई। बीडीओ ने कहा कि लोकतंत्र को मजबूत बनाने की जिम्मेदारी हम सब लोगों की है। एडीओ पंचायत छोटेलाल, ग्राम प्रधान तेतरा देवी, कन्हैयालाल बिद, अशोक कुमार आदि रहे। हलिया : ब्लाक मुख्यालय से बीडीओ विजय कुमार ने रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। सगरा, सोनगढा, मनिगढा, मतवार आदि गांवों में मतदान फीसद 50 प्रतिशत ही था। इन गांवों में मतदाता जागरूकता रैली निकालकर मतदाताओं को अधिक से अधिक मतदान के लिए प्रेरित किया गया। इसके पूर्व सगरा प्राथमिक विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में बीडीओ ने मतदाताओं को जागरूक बढ चढकर मतदान में हिस्सा लेने की अपील की। सहायक विकास अधिकारी पंचायत अरुण कुमार, एडीओ एसटी मनोहर लाल, वरिष्ठ लिपिक राकेश शुक्ल, सचिव विजयपाल मिश्रा, शिवशंकर सिंह, सत्येंद्र कुमार, जयशंकर शर्मा रहे। चील्ह : कोन विकास खंड क्षेत्र में मतदाता जागरूकता रैली निकालकर लोगों को मतदान करने के लिए प्रेरित किया गया। क्षेत्र के जगदीशपुर, तिलठी, भटेवरा, पखवैया, अनुरुद्धपूर पूरब पट्टी, गोबरहा, मल्लेपुर, चेकसारी में मतदान 50 प्रतिशत के नीचे रहता है। इसको देखते हुए बीडीओ कोन शिवनरायन सिंह के नेतृत्व में विशाल मतदाता जागरूकता रैली निकाली गई। रैली ब्लाक मुख्यालय से चलकर मलाधरपुर, मझिगवां, तिलठी, पखवैया, मिश्रधाप, चेतगंज, अनुरुद्धपुर पश्चिम पट्टी व पूरब पट्टी होते हुए ब्लाक पहुंचकर समाप्त हुआ। इस मौके पर अशोक कुमार श्रीवास्तव सहायक बीडीओ कृषि, हरिशंकर पांडेय सहायक विकास अधिकारी पंचायत, रंजीत कुमार सहायक विकास अधिकारी समाज कल्याण, बृजेश सिंह, मंगल सिंह आदि रहे।

प्रेक्षक ने जाना बूथों का हाल, जरूरतों को परखा

मीरजापुर। विधानसभा चुनाव को सकुशल एवं आदर्श आचार संहिता के तहत संपन्न कराने के लिए बुधवार को प्रेक्षकों ने अपने-अपने विधानसभा क्षेत्रों के बूथों का निरीक्षण कर कमियों को दूर करने के लिए संबंधित को निर्देशित किया। चेताया कि मतदान के दिन दिव्यांग व वृद्धजनों के लिए खासतौर से व्यवस्था हो, जैसे रैंप व व्हीलचेयर जरूरी है। पटेहरा : मड़िहान विधानसभा क्षेत्र के दर्जनभर बूथों के साथ पटेहरा क्षेत्र के दो दर्जन बूथों का निरीक्षण छत्तीसगढ़ से आए प्रेक्षक पी दयानंद ने कर व्यवस्था को देखा। बूथ पर उपस्थित बीएलओ से पिछले एमपी व एमएलए चुनाव में पड़े मत प्रतिशत की जानकारी ली। कुबरी पटेहरा कला के बूथ संख्या 25 व 26 में प्रकाश, शौचालय, पेयजल, लाइट, डस्टबिन, थर्मल स्कैनर आदि व्यवस्था दुरुस्त रखने के लिए उद्यान अधिकारी मेवाराम व मड़िहान नायब तहसीलदार विदूनंदन सिंह को कहा। पटेहरा के बीएलओ जगदीश चंद श्रीवास्तव व गीतादेवी से बच्चों की उपस्थिति से लेकर विद्यालय की व्यवस्था की जानकारी ली चील्ह कोन क्षेत्र के चील्ह चौराहा पर व्यय प्रेक्षक ने उड़नदस्ता टीम को आवश्यक निर्देश दिए। प्रेक्षक प्रशांत कुमार जो राजस्थान कैडर के आईएएस अधिकारी है, उन्हें जनपद में व्यय प्रेक्षक के रूप में भेजा गया है। उन्होंने चील्ह चौराहे पर टीम को कहा कि वाहनों की जांच की जाए। कोई भी आपत्तिजनक सामग्री लेकर पार न कर सके, इस पर पैनी नजर रखी जाए। चौराहा पर बैरेकेडिग कर वाहनों की जांच करने के लिए निर्देश दिए। गैपुरा : भाजपा के प्रचार वाहन (एलईडी) को विध्याचल क्षेत्र के सगरा के समीप प्रेक्षक एम भल्लार ने रोक कर आदेश मांगा। मौके पर चालक आलोक चंद्र एवं आपरेटर शैलेंद्र शुक्ला ने अनुमति पत्र नहीं दिखा पाए। मोबाइल पर दिखाने का प्रयास किया परन्तु प्रेक्षक संतुष्ट नहीं हुए और प्रचार वाहन को गैपुरा पुलिस चौकी में खड़ा करा दिया। इंस्पेक्टर विध्याचल नीरज पाठक ने बताया कि वाहन का अनुमति पत्र है, लेकिन मौके पर चालक नहीं दिखा पाया। इसीलिए वाहन को रोका गया था, किंतु अनुमति मेरे पास आ गया है, जिसको जल्द ही प्रेक्षक के पास भेज कर प्रचार वाहन को छोड़ दिया जाएगा।

अपनी ही कक्षा के बच्चों को पढ़ाते दिखी छात्रा

सोनभद्र। विधानसभा चुनाव व शिक्षकों के चल रहे प्रशिक्षण से परिषदीय स्कूलों में शिक्षकों की हो रही कमी से शिक्षण व्यवस्था चुनौती साबित हो रही है। बावजूद इसके शिक्षकों की कमी को विद्यालय के छात्र दूर करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ रहे हैं। विद्यालय के छात्र खुद ही अपनी कक्षा के बच्चों को पढ़ाने में लग जा रहे है चथमिक विद्यालय पड़रीपान में गुरुवार को कुछ ऐसा ही नजर आया। विद्यालय में छात्र तो पढ़ते हुए मिले, लेकिन कोई अध्यापक वहां नजर नहीं आया। बाहर बरामदे में एक बालिका कक्षा 4 के छात्रों को हिन्दी विषय को पढ़ाते हुए दिखी। उसके पढ़ाने का तरीका किसी शिक्षक से कम न था। देखते ही देखते उसने बोर्ड पर प्रशनें के उत्तर को भी लिख डाला। इसके लिए उसे कुर्सी पर चढ़ना पड़ा। प्राथमिक विद्यालय पड़रीपान 73 बच्चे नामांकित है और यहां पर एक प्रधानाध्यापक, एक सहायक अध्यापिका और एक शिक्षामित्र तैनात हैं। सहायक अध्यापिका मातृत्व अवकाश पर चल रही थी और 24 तारीख को शिक्षामित्र की इलेक्शन ड्यूटी थी।

विधानसभा चुनाव कराने के लिए प्रशिक्षित किए गए कार्मिक

मीरजापुर। विधानसभा सामान्य निर्वाचन 2022 में लगाए गए पीठासीन, मतदान अधिकारी प्रथम, द्वितीय व तृतीय कर्मचारियों का प्रशिक्षण बुधवार से आरंभ हुआ। जिला मजिस्ट्रेट प्रवीण कुमार लक्षकार ने निर्वाचन प्रक्रिया का प्रशिक्षण दिया। इस दौरान निर्वाचन प्रक्रिया, ईवीएम का सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया गया। इसके साथ ही सभी अध्ययन सामग्री, कागजात की जानकारी दी। राजकीय इंटर कालेज में 24, 25 व 26 फरवरी को दो पालियों में प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रशिक्षण के दौरान कोविड-19 से बचाव के मददनेजर शारीरिक दूरी बनाने संग मास्क व सैनेटाइजर का प्रयोग अनिवार्य था। सीडीओ व प्रभारी अधिकारी कार्मिक श्रीलक्ष्मी वीएस ने ईवीएम की जानकारी दी। कहा कि चुनाव कराने के लिए राजकीय पालिटेकिन्क कालेज बथुआ से पोलिग पार्टियों को रवाना किया जाएगा, चुनाव बाद ईवीएम व मतदान सामग्री वहीं जमा कराया जाएगा। मतदान आगामी सात मार्च को सुबह सात बजे से शाम छह बजे तक होगा। राजकीय इंटर कालेज में 24 फरवरी को पहली पाली में 651 से 975 तथा दूसरी पाली में 976 से 1300 तक, 25 फरवरी को पहली पाली में 1301 से 1625 तक तथा दूसरी पाली में 1626 से 1950 तक की पार्टी को प्रशिक्षण दिया जाएगा। वहीं 26 फरवरी को पहली पाली में 1951 से 2275 तथा दूसरी पाली में 2276 से 2498 तक के पार्टियों के कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। चुनाव में लगाए गए 9072 कार्मिक -जिले में 15309 पुरुष और 8499 महिला सहित कुल 23808 कार्मिक है। इसमें से 9072 कार्मिकों की आवश्यकता चुनाव में पड़ेगी। साथ ही 10 फीसद अर्थात 907 कर्मचारियों को रिजर्व में रखा जाएगा। विधानसभा चुनाव में 9979 कर्मचारियों की आवश्यकता पड़ेगी। विधानसभा सामान्य निर्वाचन के लिए कर्मचारियों को बुधवार को प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण के दौरान कर्मचारियों को कोविड-19 से बचाव के लिए स्वास्थ्य कर्मचारियों द्वारा बूस्टर डोज लगाया गया। कर्मचारियों को मतदान के दौरान कोविड-19 से बचाव के लिए शारीरिक दूरी बनाने, मास्क लगाने और समय-समय पर सैनिटाइज करने की भी हिदायत दी गई। विधानसभा चुनाव में ड्यूटी करने वाले कर्मचारियों ने भी बुधवार को पोस्टल मतदान के माध्यम से मताधिकार का प्रयोग किया। राजकीय इंटर कालेज में कर्मचारियों के लिए पोस्टल मतदान की व्यवस्था की गई थी। कर्मचारियों ने शारीरिक दूरी बनाते हुए अपने मताधिकार का प्रयोग किया। विधानसभा सामान्य निर्वाचन 2022 के तहत कलेक्ट्रेट सभागार में बुधवार को प्रेक्षकों की देखरेख में डीएम सभागार में ईवीएम व वीवी पैट का दूसरा रैंडमाइजेशन किया गया। प्रेक्षक विधानसभा छानबे अनुसुआ दत्ता बरूआ, मीरजापुर एम वल्लालर, मझवा मोनिका मलिक, चुनार विजय पाल सिंह, मड़िहान पी दयानंद रहे। उप जिला निर्वाचन अधिकारी शिव प्रताप शुक्ल ने बताया कि 07 मार्च 2022 को जनपद मतदान प्रक्रिया संपन्न कराया जाएगा। ईवीएम मशीन व वीवी पैट का प्रत्याशियों व उनके प्रतिनिधियों के सामने दूसरा रैंडमाइजेशन का कार्य संपन्न कराया गया।

बेटी को खोने के बाद भी नहीं टूटा ये क्रिकेटर और जड़ दिया शतक

नई दिल्ली। किसी भी क्रिकेटर के लिए क्रिकेट उनके जीवन में क्या मायने रखता है ये समझना शायद आम लोगों के बस की बात नहीं है। लेकिन आए दिन ऐसी घटना होती है जिससे किसी खिलाड़ी के लिए उसके जीवन में खेल का क्या महत्व है पता चलता है। ऐसी ही घटना बड़ौदा के रणजी खिलाड़ी विष्णु सोलंकी के साथ हुई जिन्होंने हाल ही में अपनी बेटी को खोया और बावजूद इसके अपनी टीम के लिए मैदान में उतरे लेकिन विष्णु सोलंकी ने चंडीगढ़ के खिलाफ शानदार शतकीय पारी खेल कर बता दिया कि मुश्किल परिस्थितियों में भी वो क्रिकेट के प्रति समर्पित हैं। उनके इस शतकीय पारी के दम पर चंडीगढ़ की टीम ने तीसरे दिन खबर लिखे जाने तक 500 से ज्यादा रन बना लिए हैं। 5वें नंबर पर बल्लेबाजी करने आए सोलंकी ने अपनी टीम को दूसरे दिन ही मजबूत स्थिति में पहुंचा दिया था। सोलंकी ने 165 गेंदों पर 104 रन की पारी खेली थी जिसमें 12 चौके शामिल थे। सोलंकी के इस बल्लेबाजी की चर्चा हर तरफ इसलिए भी हो रही है क्योंकि किसी भी खिलाड़ी के लिए यह आसान नहीं है कि घर में इतनी बड़ी घटना होने के

बाद भी वो इस तरह खेल पाए। उनकी इस पारी की चर्चा सोशल मीडिया पर खूब हो रही है। सौराष्ट्र के विकेटकीपर बल्लेबाज शेलडन जैक्शन ने ट्विट कर लिखा है कि उनकी नजर में विष्णु सबसे मजबूत खिलाड़ी हैं। 35 साल के जैक्शन ने लिखा है कि विष्णु सोलंकी और उनके परिवार को मेरा सलाम, किसी भी खिलाड़ी के लिए ये आसान नहीं है।

टी20 सीरीज से बाहर हुआ ये बल्लेबाज मयंक अग्रवाल को मिला मौका

नई दिल्ली। दूसरे टी20 से पहले भारतीय टीम को रितुराज गायकवाड़ के रूप में एक झटका लगा है और वो चोट के कारण सीरीज से बाहर हो गए है। टीम में उनकी जगह मयंक अग्रवाल को शामिल कर लिया गया है जो धर्मशाला पहुंच गए हैं। श्रीलंका के खिलाफ तीन मैचों की सीरीज में भारत फिलहाल 1-0 से आगे है। भारतीय टीम प्रबंधन ने गायकवाड़ पर लखनऊ में पहले मैच से पहले एक प्रेस रिलीज जारी की थी जिसमें रितुराज के बारे में जानकारी दी गई थी। रितुराज अपनी दाहिनी कलाई में दर्द के कारण चयन के लिए उपलब्ध नहीं हो पाए थे। भारतीय टीम की प्रवक्ता की तरफ से एक बयान जारी कर कहा गया है कि फिलहाल बीसीसीआई की मेडिकल टीम उनकी जांच कर रही है। रितुराज की जगह लेने मयंक अग्रवाल बेहद शार्ट नोटिस पर धर्मशाला पहुंत गए हैं। बीसीसीई की सूत्रों की त?फ से कहा गया है कि फिलहाल वो क्वरंटाइन में थे औ? ऐसी स्थिति में उन्हें टीम के साथ जोड़ना थोड़ा मुश्किल था। भारतीय क्रिकेट टीम की बात करें तो रितुराज तीसरे ऐसे खिलाड़ी हैं जो इंजरी के कारण टीम से बाहर हुए हैं। इससे पहले दीपक चाहर और सूर्यकुमार यादव चोट की वजह से टी20 सीरीज से बाहर हो चुके है। ये दोनों खिलाड़ी कोलकाता में वेस्टइंडीज के खिलाफ खेलते हुए चोटिल हो गए थे। चयन समिति ने उनकी जगह किसी खिलाड़ी को शामिल नहीं किया था क्योंकि 18 सदस्यीय टीम की घोषणा हुई थी। लेकिन रितुराज गायकवाड़ के बाहर होने के बाद चयनकर्ता किसी तरह की जोखिम नहीं लेना चाहते हैं। इस बीच टीम इंडिया के लिए अच्छी खबर यह है कि आर अश्विन जिनके फिटनेस को लेकर कहा गया था कि अगर वो फिट होते हैं तो पहले टेस्ट में उपलब्ध रहेंगे पहला टेस्ट खेल सकते हैं। आपको बता दें कि 2 टेस्ट मैचों की सीरीज का पहला मैच 4 मार्च से मोहाली में शुरू होगा भारत के लिए टी20 के संभावित खिलाड़ियों में रोहित शर्मा(कप्तान), श्रेयस अय्यर, संजू सैमसन, ईशान किशन(विकेटकीपर), वैंकेटेश अय्यर, दीपक हुड्डा, रविंद्र जडेजा, युवेंद्र चहल, रवि विशनेई, कुलदीप यादव, मोहम्मद सिराज, भुवनेश्वर कुमार, हर्षल पटेल, जसप्रीत बुमराह(उप कप्तान), आवेश खान और मयंक अग्रवाल।

सुरक्षा परिषद में भारत ने रूस के खिलाफ प्रस्ताव पर वोट क्यों नहीं किया

नई दिल्ली। यूक्रेन पर रूसी हमले का आज तीसरा दिन है। रूस की सेना ने यूक्रेन के कई जगहों और सैन्य ठिकानों पर हमला किया है। कई सैन्य ठिकानों को तबाह कर दिया है। उधर, दोनों देशों के बीच युद्ध विराम के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में यूक्रेन पर हमले के निंदा प्रस्ताव पर रूस ने वीटो पावर का इस्तेमाल किया है। बता दें कि रूस सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य है। खास बात यह है कि भारत, चीन और यूएई ने मतदान में हिस्सा नहीं लिया। सवाल यह है कि रूस और यूक्रेन पर भारत ने मतदान में हिस्सा क्यों नहीं लिया इसके पीछे बड़ी वजह क्या है आइए जानते हैं कि इस पर विशेषज्ञों की क्या राय है 1- प्रो हर्ष वी पंत ने कहा कि रूस और यूक्रेन संघर्ष में भारतीय विदेश नीति का दृष्टिकोण साफ है।भारत का मत है कि सभी विवादित मुद्दों को बातचीत के जरिए ही सुलझाया जाना चाहिए। सुरक्षा परिषद में भारत का यही दृष्टिकोण दिखा। भारत ने सुरक्षा परिषद में बहुत सधी हुई टिप्पणी की है। भारत का मत है कि सभी सदस्य देशों को सकारात्मक तरीके से आगे बढ़ने के लिए संयुक्त राष्ट्र के नियमों एवं सिद्धांतों का सम्मान करना चाहिए। भारत का मत है कि आपसी मतभेदों और विवादों को निपटाने के लिए संवाद ही एकमात्र जरिया है। भारत ने दुनिया के सबसे बड़े सुरक्षा परिषद के मंच पर बड़ी सहजता से यह बात रखी की किसी भी विवादित मसले का हल युद्ध नहीं हो सकता है। संवाद के जरिए ही विवादों को निपटाया जाना चाहिए। 2- प्रो पंत ने कहा कि आजादी के बाद भारत की विदेश नीति सदैव से गुटनिरपेक्ष सिद्धांतों पर टिकी रही है। यह शीत युद्ध का दौर था। उन्होंने कहा कि दुनिया में शीत युद्ध की समाप्ति के बाद भी भारत इस नीति पर कायम है।

श्रीलंका के दूसरे टी20 के रोमांच का उठाना है मजा तो उठाएं ये तरीका

नई दिल्ली। भारतीय टीम शनिवार से श्रीलंका के खिलाफ टी20 सीरीज की के दूसरे मुकाबले में खेलने उतरेगी। पहला मैच जीतकर तीन मैचों की सीरीज में भारत 1-0 से आगे है। अब सीरीज का दूसरा मुकाबला जीतकर टीम सीरीज को अपने नाम करने के इरादे से उतरेगी। पिछली सीरीज में वेस्टइंडीज का क्लीन स्वीप करने के बाद टीम ने नंबर एक की कुर्सी हासिल की है। पहले मुकाबले में कप्तान रोहित शर्मा ने इशान किशन के साथ पारी की शुरुआत की थी। संजू सैमसन को प्लेइंग इलेवन में मौका दिया गया था। दोनों टीमों के बीच खेले जाने वाले दूसरे मुकाबले से पहले जान लीजिए इस मैच से जुड़ी सारी अहम बातें। भारत और श्रीलंका के बीच सीरीज का दूसरा टी20 मुकाबला 26 फरवरी शनिवार को खेला जाएगा। भारत और श्रीलंका के बीच दूसरा टी20 धर्मशाला के हिमाचल प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम में खेला जाएगा। कितने बजे खेला जाएगा भारत और श्रीलंका के बीच दूसरा टी20 मैच भारत और श्रीलंका के बीच दूसरा टी20 भारतीय समय के मुताबिक शाम 7.00 बजे शुरू होगा। कितने बजे होगा भारत और श्रीलंका के बीच दूसरे टी20 मैच में टास भारत और श्रीलंका के बीच मुकाबले में टास मैच से आधे घंटे 6.30 बजे किया जाएगा। कहां देखा जा सकेगा भारत और श्रीलंका के बीच दूसरे टी20 का सीधा प्रसारण भारत और वेस्टइंडीज के बीच होने वाले दूसरे टी20 का सीधा प्रसारण स्टार नेटवर्क के स्पोर्ट्स चैनल पर देखा जा सकेगा। स्टार स्पोर्ट्स, स्टार स्पोर्ट्स एचडी, स्टार स्पोर्ट्स 1 और स्टार स्पोर्ट्स 1 एचडी पर देखा जा सकेगा। मैच की लाइव स्ट्रीमिंग हाट स्टार पर देख सकते हैं। इसके अलावा मैच से जुड़ी पल पल की खबर के लिए दैनिक जागरण वेबसाइट पर जा सकते है।

रोहित शर्मा एक साथ तोड़ सकते हैं कोहली के अलावा केन व इयोन मोर्गन का यह रिकार्ड

नई दिल्ली। श्रीलंका के खिलाफ तीन मैचों की टी20 सीरीज के दूसरे मैच में जब भारतीय कप्तान रोहित शर्मा धर्मशाला में मैदान पर उतरेंगे तो वो कई रिकार्ड्स उनके निशाने पर होंगे। रोहित शर्मा ने पहले मैच में 44 रन की पारी खेली थी और टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज बन गए थे। अब दूसरे मुकाबले में उनके निशाने पर विराट कोहली और केन विलियमसन व इयोन मोर्गन का ये रिकार्ड होगा। रोहित शर्मा ने टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में अब तक 292 चौके लगाए हैं तो वहीं विराट कोहली के नाम पर अब तक 298 चौके दर्ज हैं। रोहित शर्मा अगर दूसरे मैच में 7 चौके लगा देते हैं तो वो विराट कोहली को पीछे छोड़ देंगे साथ ही अगर वो 8 चौके लगा देते हैं तो वो भारत की तरफ से टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में 300 चौके पूरे करने वाले पहले बल्लेबाज बन जाएंगे जबकि वो ऐसा करने वाले दूसरे दुनिया के दूसरे बल्लेबाज बन जाएंगे। टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में 300 चौके पूरे करने वाले दुनिया के पहले बल्लेबाज आयरलैंड के पाल स्टारलिंग हैं और उन्होंने अब तक कुल 319 रन बनाएंगे। इसके अलावा रोहित शर्मा की कप्तानी में भारतीय टीम ने अब तक अपनी धरती पर कुल 15 मैच जीते हैं। भारत ने उनकी कप्तानी में घरेलू मैदान पर कुल 16 मैच खेले हैं जिसमें इस टीम को 15 जीत मिली है। अगर रोहित शर्मा की कप्तानी में भारत ने अगले मैच में श्रीलंका के खिलाफ जीत दर्ज कर लिया तो वो एक साथ न्यूजीलैंड के कप्तान केन विलियमसन और इंग्लैंड के कप्तान इयोन मोर्गन का रिकार्ड तोड़ देंगे। दरअसल केन और मोर्गन ने अपनी धरती पर अब तक 15-15 टी20 मैच जीते है। अब रोहित इस मैच में जीत दर्ज करते ही केन और मोर्गन से आगे निकल जाएंगे।

धर्मशाला में टी20 सीरीज सील के इरादे से उतरेगी टीम इंडिया, श्रीलंका करेगी वापसी की कोशिश

धर्मशाला। श्रीलंका के खिलाफ टी-20 सीरीज के पहले मैच में बड़े अंतर से जीत दर्ज करने के बाद भारतीय टीम के हौसले बुलंद हैं। ऐसे में रोहित शर्मा की अगुआई वाली टीम चाहेगी कि शनिवार को सीरीज के दूसरे मैच में ही सीरीज अपने नाम कर ले। लगातार प्रयोगों का क्रम जारी रखते हुए भारतीय टीम अच्छा प्रदर्शन कर रही है। पिछले साल टी-20 विश्व कप में शुरू में बाहर हो जाने के बाद भारत को दृष्टिकोण में बदलाव करने के लिए मजबूर होना पड़ा है और शायद इसी कारण कप्तान रोहित और कोच राहुल द्रविड़ ने युवा खिलाड़ियों को मौका दिया और यह एक बदली हुई टीम नजर आने लगी है। अक्टूबर-नवंबर में होने वाले टी-20 विश्व कप में अभी समय है, लेकिन रोहित की अगुआई वाली इस टीम में युवा खिलाड़ी लय पकड़ने लगे है जो कि भारत के लिए अच्छे संकेत है। वेस्टइंडीज के खिलाफ रन बनाने के लिए जूझने वाले युवा सलामी बल्लेबाज इशान किशन ने श्रीलंका के खिलाफ पहले मैच में बड़ी पारी खेल कर आत्मविश्वास हासिल कर लिया है। यदि रुतुराज गायकवाड़ की कलाई में चोट नहीं लगती तो वह किशन के साथ पारी का आगाज कर सकते थे और ऐसे में रोहित मध्यक्रम में उतरते जैसा कि उन्होंने वेस्टइंडीज के खिलाफ किया था। यदि गायकवाड़ फिट होकर वापसी करते है तो रोहित शनिवार को फिर से मध्यक्रम में उतर सकते हैं। रोहित अच्छी लय में दिख रहे है और उन्होंने पहले मैच में 44 रन की अच्छी पारी खेली थी। विराट कोहली को विश्राम दिए जाने के बाद रोहित ने पहले मैच के बाद संकेत दिए कि रवींद्र जडेजा ऊपरीक्रम में ही बल्लेबाजी करेंगे क्योंकि टीम प्रबंधन उनके इस हुनर का ज्यादा से ज्यादा फायदा उठाना चाहता है। टीम में वापसी करने वाले संजू सैमसन को पहले मैच में बल्लेबाजी का मौका नहीं मिला और यदि उन्हें धर्मशाला में अवसर मिलता है तो वह उसका पूरा फायदा उठाना चाहेंगे। भारत की गेंदबाजी भी सही राह पर है और उसने पहले मैच में दीपक हुड्डा सहित सात विकल्प आजमाए। वेंकटेश अय्यर खर्चीले साबित हुए, लेकिन उन्होंने दो विकेट निकाले। दूसरी तरफ श्रीलंका को अगर भारत का 10 मैचों से चला आ रहा विजय अभियान रोकना है तो उसे इसके लिए खास प्रयास करने होंगे। शीर्षक्रम के नहीं चल पाने तथा मुख्य स्पिनरों महेश तीक्षणा और वानिंदु हसरंगा की अनुपस्थिति में उसकी टीम पहले से ही जूझती आ रही है। लखनऊ की तुलना में धर्मशाला में रात को अधिक ठंड रहने की संभावना है। खिलाड़ियों को ऐसे में परिस्थितियों में ढलने में दिक्कत आ सकती है। धर्मशाला स्टेडियम में कप्तान रोहित शर्मा शतक लगा चुके है। वर्ष 2015 में दक्षिण अफ्रीका की टीम के साथ हुए टी-20 मैच में रोहित ने 106 रन बनाए थे, लेकिन टीम वह मैच हार गई थी। रोहित धर्मशाला में पांचवां अंतरराष्ट्रीय मैच खेलेंगे।

रूस के आगे सरेंडर करेंगे यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की पूरी दुनिया को है इस सवाल के जवाब का इंतजार

नई दिल्ली। रूस और यूक्रेन के बीच छिड़ी जंग अब एक निर्णायक मुकाम पर आती दिखाई दे रही है। रूस की सेना तेजी से कीव में आगे बढ़ रही है। रूस ने ये भी साफ कर दिया है कि उसका मकसद अब कीव पर नियंत्रण करना और मौजूदा सरकार को हटाना है। वहीं रूस ने दूसरे देशों को भी स्पष्ट शब्दों में इस मामले में रुकावट न बनने की चेतावनी दी है। हालांकि यूक्रेन इस विवाद में पहले ही खुद को अकेला बता चुका है। एक बयान में यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदोमीर जेलेंस्की ने कहा है कि उन्हें विश्व ने अकेला छोड़ दिया है। जानकार मानते है कि यूक्रेन पर रूस के कब्जे के बेहद खास मायने है। जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी के

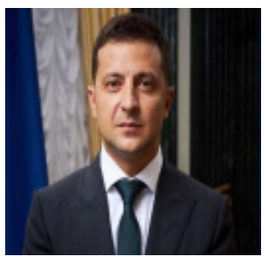

प्रोफेसर संजय पांडे का कहना कीव को रूस द्वारा अपने नियंत्रण में लेने का अर्थ यूक्रेन पर कब्जा करने जैसा ही होगा। उनका ये भी कहना है कि कीव रूस की पहचान से जुड़ा है, जिसको वो कभी भी छोड़ना या फिर अपने से अलग नहीं करना चाहता है। रूस कीव को अपना स्प्रीच्वल सेंटर मानता है। अपने एक आर्टिकल में राष्ट्रपति पुतिन ने यूक्रेन को रूस से जोड़ते हुए लिखा है उनका इसके साथ नैसर्गिक, सांस्कृतिक रिश्ता है। हालांकि दो दिन पहले ही उन्होंने अपने बयान में कहा था कि यूक्रेन का कभी कोई स्वतंत्र असतित्व रहा ही नहीं है। न ही वो कभी स्वतंत्र राज्य था। इससे ये भी स्पष्ट होता है कि वो आने वाले समय में यूक्रेन को एक आजाद राष्ट्र की मान्यता भी नहीं देने वाले है। कीव या यूक्रेन पर नियंत्रण रूस के लिए अब एक साख का प्रश्न भी बन चुका है। बता दें कि रूस ने बेहद स्पष्ट शब्दों में यूक्रेन से सरेंडर करने को कहा है। इस संबंध में किए गए एक सवाल के जवाब में प्रोफेसर पांडे ने नहीं कहेंगे। इसको दूसरा ही नाम दिया जाएगा। हालांकि जेलेंस्की ये भी कह चुके है कि वो रूस का डटकर मुकाबला करेंगे और देश भी नहीं छोड़ेंगे। जेलेंस्की की पुतिन को की गई फोन काल के बारे में पूछे एक सवाल के जवाब में प्रोफेसर पांड ने कहा कि उन्हें इस बात का आभास हो गया होगा कि रूस की मंशा क्या है।

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

भारत सरकार की कौशल विकास योजना में अगस्त 2021 से प्रारम्भ हो रहे सत्र के लिए निम्नलिखित ट्रेडों में दाखिले के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित
ट्रेड प्रवेश योग्यता तथा प्रस्तुत विभिन्न पाठ्यक्रमों की अवधि इस प्रकार है-

क0सं0	ट्रेड का नाम	ट्रेड की अवधि	योग्यता
1.	कोपा	1 वर्ष	12वीं पास
2.	फिटर	2 वर्ष	10वीं पास
3.	बेसिक कम्प्युटिंग	6 माह	साक्षर
4.	डाटा इंट्री ऑपरेटर	6 माह	10वीं पास
5.	फायर प्रिवेन्शन एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी	6 माह	8वीं पास
6.	सेक्योरिटी सर्विस	6 माह	8वीं पास
7.	कम्प्यूटर हार्डवेयर एण्ड एसेम्बली	1 वर्ष	10वीं पास
8.	सर्टिफिकेट इन कम्प्युटर एप्लीकेशन	1 वर्ष	10वीं पास
9.	इलेक्ट्रिकल टेक्निशियन्स	1 वर्ष	8वीं पास
10.	रेफरिजरेटर एण्ड एयर कन्डिसनिंग	1 वर्ष	8वीं पास
11.	योगा असिस्टेन्ट	1 वर्ष	10वीं पास
12.	वेल्डिंग टेक्नोलॉजी	1 वर्ष	8वीं पास
13.	कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स	1 वर्ष	10वीं पास

1.प्रमाण पत्रः- सफल प्रशिक्षणार्थियों को भारत सरकार द्वारा प्रमाणपत्र दिए जाते है, जो केंन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार के अधीनस्थ पद एवं सेवा में भर्ती के लिए मान्य है। **2.चयन की प्रक्रियाः-** इस वर्ष कोविड-19 महामारी के चलते सभी सीटों पर दाखिले पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर किये जायेंगे। **3.आयु सीमाः-** उम्मीदवारों की आयु 1 अगस्त 2021 को न्यूनतम 14 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। **4.आवेदन कैसे करेः-** आवेदन फॉर्म संस्थान की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन भरे जा सकते है तथा संस्थान के कार्यालय से निःशुल्क भी प्राप्त किया जा सकता है। **5.**आवेदन फॉर्म भरते समय पंजीकरण शुल्क रूपये 2665/- का भी देय होगा। **6.कक्षायें/उपस्थितिः-** छात्रों की उपस्थिति में दो भाग शामिल है- थ्योरी क्लास और ट्रेनिंग इस वर्ष कोविड-19 स्थिति के कारण सभी छात्र संस्थान द्वारा आयोजित ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेंगे तथा उसके लिए संस्थान में छात्रों की भौतिक उपस्थिती की अनिवार्यता नहीं है, जब तक कोविड-19 की वर्तमान स्थिति समाप्त नहीं हो जाती है। प्रशिक्षण के लिए छात्रो को प्रधानाचार्य की अनुमति के साथ, अपने सम्बंधित मूल स्थानों पर प्रशिक्षण पूरा करने की अनुमति है। परीक्षा के समय छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य होगी। **7.छात्रवृत्तिः-** दाखिले के उपरांत शुल्क प्रतिपूर्ति के लिए सभी ट्रेडों में आरक्षित श्रेणी के अभ्यर्थी, जिनके पास आय प्रमाण पत्र एवं सम्बन्धित दस्तावेज मौजूद हो वे सभी भारत सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं में आवेदन कर सकते है। **8.** अधिक जानकारी के लिए संस्थान की वेबसाइटः- **www.nainiiti.com** देखें। **9.दाखिले की अंतिम तिथिः-** **28 फरवरी 2022**

सम्पर्क सूत्र :- 0532-2695959, 9415608710, 9807278552, 9415608790

शाहिद कपूर की बर्थडे पार्टी में इतनी महंगी सैंडल पहनकर पहुंचीं कियारा आडवाणी, इस कीमत में एक बाइक खरीद लेंगे आप

नई दिल्ली। शाहिद कपूर ने बीती शाम अपने बर्थडे का शानदार जश्न मनाया। इस मौके पर उनके भाई ईशान खट्टर ने अपने करीबी दोस्तों और परिवार के सदस्यों के लिए एक ग्रैंड पार्टी रखी। शाहिद, उनकी पत्नी मीरा राजपूत, उनके बच्चों मिशा और जैन ने पार्टी में काफी धूम मचाई। इस मौके पर ईशान खट्टर ने अपनी स्पेशल फ्रेंड अनन्या पांडे को भी न्यौता दिया था। ईशान की स्पेशल फ्रेंड एक्ट्रेस अनन्या पांडे और शाहिद कपूर की कबीर सिंह की को-स्टार कियारा आडवाणी भी इस पार्टी में शामिल हुईं। अनन्या जहां मिनी ड्रेस में अपने हुसन के जलवे बिखेर रहीं थीं, वहीं कियारा अपने खास दोस्त सिद्धार्थ मल्होत्रा के साथ सिजलिंग लुक में नजर आईं। सिद्धार्थ और कियारा एक साथ एक ही कार में पहुंचे थे। जहां उन्होंने पैपराजी के लिए पोज भी किया। पार्टी के लिए, सिद्धार्थ ने इसे एक प्लेड शर्ट और ट्राउजर में कैजुअल रखा, जबकि उनके साथ कियारा डीप नेकलाइन ड्रेस में काफी स्टनिंग लग रहीं थीं। कियारा व्हाइट लेस वाली ड्रेस में नजर आईं, जिसमें डीप नेकलाइन इसे और खूबसूरत बना रही थी।उन्होंने इसे ओवरसाइज़्ड डेनिम ब्लेजर और एम्बेलिश्ड शूज के साथ पेयर किया। डबल क्रिस्टल बो शूज कथित तौर पर सेलिब्रिटी के पसंदीदा ब्रांड मच एंड मच के हैं। ब्रांड की आधिकारिक

साइट के अनुसार, इसकी कीमत 88,145.06 रुपए है। शाहिद कपूर ने 25 फरवरी को अपना 41वां जन्मदिन मनाया। देशभर से फैन्स उन्हें सोशल मीडिया पर बधाइयां मिलीं। इस स्पेशल मौके पर मीरा ने अपने पति के बर्थडे पर एक खास पोस्ट किया। उन्होंने 3 तस्वीरें शेयर की। एक में शाहिद कपूर समंदर किनारे खड़े हैं। उन्होंने व्हाइट टीशर्ट के साथ ग्रे जैकेट पहना है। दूसरी तस्वीर में शाहिद कूल लुक में हैं और बीच किनारे हैं। वहीं आखिरी तस्वीर में मीरा और शाहिद हैं। दोनों रेत पर लेटे हुए हैं। इसी दौरान मीरा सेल्फी ले रही हैं।

अमिताभ बच्चन के नाती अगस्त्य नंदा इस. फिल्म से कर रहे हैं डेब्यू सुहाना खान संग बनेगी जोड़ी

नई दिल्ली। फिल्मी गलियारों में खबर है कि अमिताभ बच्चन के नाती अगस्त्य नंदा जल्द ही बॉलीवुड में डेब्यू करने वाले हैं। कुछ दिनों पहले ही अगस्त्य नंदा और शाहरुख खान की बेटी सुहाना खान को फिल्म मेकर जोया अख्तर के ऑफिस से निकलते देखा गया था। रिपोर्ट्स है कि जोया अख्तर 'द आर्चीज' नाम की फिल्म बना रहीं हैं। इस फिल्म में अगस्त्य नंदा और सुहाना खान और खुशी कपूर लीड रोल करते नजर आने वाले हैं। इंडिया टुडे की रिपोर्ट्स के अनुसार अगस्त्य नंदा, जोया की फिल्म में आर्ची का रोल निभाने वाले हैं। फिल्म से जुड़े एक सूत्र ने खुलासा किया कि, 'श्वेता बच्चन नंदा के बेटे अगस्त्य नंदा, जोया अख्तर की फिल्म में आर्ची का रोल करेंगे। इसमें शाह रुख खान की बेटी सुहाना खान भी नजर आएंगी। इन दोनों के अलावा गैर फिल्मी बैकग्राउंड के बच्चे भी फिल्म का हिस्सा होंगे। जोया अख्तर ने इस फिल्म के लिए कई यंग लड़के और लड़कियों का ऑडिशन लिया। जहां तक अगस्त्य की बात है, वह एक्टिंग सीख रहे है। रिपोर्ट्स में ये भी दावा किया गया है कि सुहाना खान पर फिल्म के मेकर्स अलग-अलग लुक्स ट्राई कर रहे है। याद दिला दें कि कुछ दिनों पहले ही सुहाना खान रेड साड़ी में नई आई थीं। सुहाना का ये लुक सोशल मीडिया पर काफी वायरल हुआ था। अब सूत्र ने इस बात की पुष्टि की है कि यह सुहाना की फिल्म 'द आर्चीज' के लिए तैयारी में से एक था। फिल्म में सुहाना, इंडियन और वेस्टर्न दोनों लुक्स में दिखाई देने वाली। बता दें, अमिताभ बच्चन की नातिन नव्या नवेली नंदा पहले ही साफ कर चुकीं हैं कि उनको एक्टिंग में कोई दिलचस्पी नहीं है। वो अपना फैमिली विजनेस ही संभालती हैं। वहीं इसके उलट अगस्त्य को फिल्मों और एक्टिंग में खूब रुचि है और इसके लिए तैयारी भी कर रहे हैं। इससे पहले खबर आई थी कि फिल्म से श्रीदेवी और बोनी कपूर की छोटी बेटी खुशी कपूर भी डेब्यू करेंगी।

'तारक मेहता' की 'सोनू' ने बेहद छोटी पैंट पहन दोस्त संग शेयर की ऐसी तस्वीर

नई दिल्ली। सब टीवी पर आने वाला कॉमेडी शोज 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' में बतौर बाल कलाकार नजर आ चुकीं 'सोनू भिडे' यानी निधि भानुशाली को आज भी दर्शक काफी पसंद करते हैं। निधि को दर्शकों ने छोटे से बड़ा होते देखा है। आज भले ही निधि से एक्टिंग से दूरी बना ली हो लेकिन सोशल मीडिया पर वह हमेशा ही फैंस के साथ जुड़ी रहती हैं। फिलहाल निधि एडवेंचरस लाइफ को एंजॉय कर रहीं हैं। वह अक्सर ही अपने ट्रिप की तस्वीरें और वीडियोज शेयर कर फैंस को नई-नई जगहों की जानकारी देती हैं। इसी बीच निधि ने अपने एडवेंचर ट्रिप के दौरान की एक तस्वीर शेयर की है जो काफी चर्चा में बनीं हुई है।

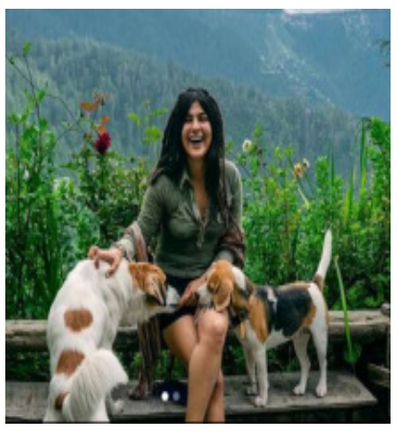

इस तस्वीर में निधि का बिकिनी अवतार चर्चा में बना हुआ है। यहां देखें तस्वीर निधि भानुशाली ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर अपनी एक लेटेस्ट तस्वीर शेयर की है। इस तस्वीर में वह अकेली नहीं बल्कि उनके साथ उनका दोस्त भी नजर आ रहा है। तस्वीर में निधि समंदर कि किनारो नजर आ रही है। फोटो में आप देख सकते हैं कि निधि ब्लू कलर की टीशर्ट के साथ शॉर्ट्स पहने दिख रही है। वहीं उनका दोस्त भी सेम टीशर्ट में नजर आ रहा है। दोनों समंदर में उतरने के लिए पूरी तरह से तैयार नजर आ रहे हैं। इस तस्वीर को शेयर करते हुए निधि ने कैप्शन में लिखा, 'समर स्वैग।हमेशा की तरह ही निध भानुशाली की इस तस्वीर को फैंस काफी पसंद कर रहे हैं। इस पर कमेंट कर लगातार फैंस अपनी प्रतिक्रिया तो दे ही रहे हैं। साथ ही निधि के लुक और स्टाइल की तराफी कर रहे हैं। इस पर कमेंट करते हुए एक यूजर ने लिखा, 'सोनू बेटा मस्ती नहीं करना।' वहीं तो एक लिखता है, 'भाई बहन की सुंदर जोड़ी।' तो एक लिखता है, 'भिड़े की संस्कारी बेटी बॉलीवुड अभिनेता ऋतिक रोशन उन स्टार्स में से है जो प्रोफेशनल लाइफ के कहीं से कहीं ज्यादा अपनी निजी जिंदगी को लेकर चर्चा में रहते हैं। इन दिनों ऋतिक एक्ट्रेस-सिंगर सबा आजाद को डेट करने की खबरों को लेकर खूब सुर्खियां में हैं। हाल ही में दोनों को मुंबई में डिनर डेट पर देखा गया। इसके अलावा ऋतिक के चाचा राजेश रोशन ने परिवार के सदस्यों के साथ तस्वीर शेयर की थी जिसमें सबा नजर आई। वहीं अब पहली बार ऋतिक ने सबा की एक तस्वीर पोस्ट की है जिसके बाद उनके रिश्ते को लेकर चर्चाएं और भी तेजी हो गई है।

अजय देवगन के साथ काम करने पर नर्वस थीं राशि खन्ना, 'रूद्र- द ऐज ऑफ डार्कनेस' से कर रहीं ओटीटी डेब्यू

नई दिल्ली। जॉन अब्राहम की मद्रास कैफे से 2013 में बॉलीवुड डेब्यू करने के बाद राशि खनन अब रूद्र- द ऐज ऑफ डार्कनेस वेब सीरीज से हिंदी सिनेमा में लौटी है। हालांकि, इस बार पर्दा बड़ा नहीं, सबसे छोटा है। राशि की वापसी अजय देवगन के साथ हुई है और ओटीटी स्पेस में उनका डेब्यू भी। अजय के साथ सीरीज में काम करने का अनुभव राशि ने साझा करते हुए बताया कि वो पहले बहुत नर्वस थीं, मगर शूटिंग के दौरान अजय का दूसरा ही रूप सामने आया। राशि कहती हैं- ईमानदारी से कहूं तो मैं उनके साथ काम करने को लेकर बहुत नर्वस थी। लेकिन, जब उनसे मुलाकात हुई तो महसूस किया कि वो बेहद विनम्र इंसान हैं। उनके साथ बातचीत करना बड़ा आसान है। मैं अपने किरदार को निभाने में जितना भी कामयाब हुई, वो उनकी और हमारे निर्देशक की वजह से। अजय सर बहुत सपोर्टिव रहे और मुझे सहज महसूस करवाते रहे। कुछ दृश्य मैं उनकी मदद

के बिना नहीं कर सकती थी। खासकर, मेरा इंट्रोडक्शन सीन। वो बहुत अनुभवी हैं और उनसे कैमरा एंगल, भावनाओं का इजहार या सहजता के साथ परफॉर्म करना जैसी बहुत-सी बातें सीखीं। राशि इसके बाद राज एंड डीके की वेब सीरीज में भी फीमेल लीड रोल में दिखेंगी, जिसमें वो शाहिद कपूर के साथ हैं। यह सीरीज भी इसी साल रिलीज होने वाली है। रूद्र- द ऐज ऑफ डार्कनेस एक क्राइम-थ्रिलर सीरीज है, जिसे राजेश मापूसकर ने निर्देशित किया है। सीरीज 4 मार्च को डिजने प्लस हॉटस्टार पर हिंदी के अलवा मराठी, तमिल, तेलुगु, कनन्ड़, मलयालम और बंगाली भाषाओं में रिलीज की जाएगी। सीरीज का निर्माण अप्लॉज एंटरटेनमेंट और बीबीसी स्टूडियो ने किया है। रूद्र, बीबीसी के ही शो लूथर का अडेप्टेशन है। सीरीज में अजय एक अंडर कवर है। में 6 एपिसोड्स है। अजय का भी यह बतौर एक्टर डिजिटल डेब्यू है। सीरीज में एशा देओल, अतुल कुलकर्णी, अश्विनी कालसेकर, तरुण गहलौत, आशीष विद्यार्थी और सत्यदीप मिश्रा प्रमुख किरदार निभा रहे है।

मलाइका अरोड़ा ने फरहान-शिबानी की पार्टी से शेयर की शाह रुख खान की बेटी सुहाना की ऐसी तस्वीर, कहा बेबी डॉल अब बड़ी हो गई

नई दिल्ली। फरहान अख्तर और शिबानी दांडेकर की शादी के बाद हाल ही में प्रड्यूसर रितेश सिधवानी ने शानदार पार्टी रखी। इस पार्टी में बीटाउनके कई सितारों ने अपनी मौजूदगी दर्ज कराई। पार्टी में करिश्मा कपूर, करीना कपूर, मलाइका अरोड़ा, दीपिका पादुकोण, अनन्या पांडे, सिद्धांत चतुर्वेदी, सुहाना खान, गौरी खान ने अपने ग्लैमरस अंदाज से हर किसी का ध्यान अपनी ओर खींचा। लेकिन इसी बीच मलाइका अरोड़ा ने शाह रुख खान की लाडली यानी सुहाना खान की एक खास तस्वीर शेयर की है। इस तस्वीर में सुहान खान का पोज देने का अंदाज आपको भी दीवाना बना देगा। यहां देखें तस्वीर में दूसरों को बाहर निकालने की उम्मीद करती हैं। एकता कपूर निर्मित शो का प्रीमियर 27 फरवरी को हो रहा है, जिसे भारतीय दर्शक ऑल्ट बालाजी और एमएक्स प्लेयर पर मुफ्त देख सकते है। इसमें 16 कॉन्ट्रोवर्शियल सेलेब्रिटीज को सुविधाओं के बिना महीनों तक जेल में रखा जाएगा। दर्शकों को प्रतियोगियों के साथ सीधे बातचीत करने की भी अनुमति मिलेगी। बाकी बचे हुए सुपर-कॉन्ट्रोवर्शियल सेलिब्रिटी प्रतियोगियों को जल्द ही दर्शकों के सामने पेश किया जाएगा, जो पहली बार उनके साथ बातचीत भी कर सकते है और शो का एक हिस्सा बन सकते है।

एक्ट्रेस मलाइका अरोड़ा ने अपने इंस्टाग्राम स्टोरी पर दो तस्वीरें पोस्ट की है। इन तस्वीरों में सुहान खान के साथ अनन्या पांडे और शनाया कपूर नजर आ रही है। इस फोटो में तीनों गर्ल्स का पोज देने का अंदाज बेहद ही कातिलाना नजर आ रहा है। इन तस्वीरों को शेयर करते हुए मलाइका ने लिखा, 'बेबी डॉल्स अब बड़ी हो गई।' इस तस्वीर को इंटरनेट पर काफी पसंद किया जा रहा है। आपको बता दें कि फरहान अख्तर और शिबानी दांडेकर की पार्टी को लेकर सुहाना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। इस वीडियो में आप देख सकते है कि सुहाना जैसे ही अपनी गाड़ी से निकलती हैं। पैपराजी उन्हें अपने कैमरे में कैद करने की ओढ में लग जाते हैं। इस दौरान सुहान ने बेहद ही हॉट सी ब्लैक कलर की ऑफ शोल्डर वनपीस ड्रेस पहने नजर आ रही हैं। वहीं हेयरस्टाइल की बात करें तो सुआन ने हाई पोनी की है। जो उनकी ड्रेस पर काफी सूट कर रहा है। इसके साथ ही उन्होंने हाथ में सिलवर कलर का क्लच लिया हुआ है।

अफेयर की खबरों के बीच ऋतिक रोशन ने पहली बार शेयर की रूमर्ड गर्लफ्रेंड सबा आजाद की खास तस्वीर लिखा ये मैसेज

नई दिल्ली। बॉलीवुड अभिनेता ऋतिक रोशन उन स्टार्स में से है जो प्रोफेशनल लाइफ के कहीं से कहीं ज्यादा अपनी निजी जिंदगी को लेकर चर्चा में रहते हैं। इन दिनों ऋतिक एक्ट्रेस-सिंगर सबा आजाद को डेट करने की खबरों को लेकर खूब सुर्खियां में हैं। हाल ही में दोनों को मुंबई में डिनर डेट पर देखा गया। इसके अलावा ऋतिक के चाचा राजेश रोशन ने परिवार के सदस्यों के साथ तस्वीर शेयर की थी जिसमें सबा नजर आई। वहीं अब पहली बार ऋतिक ने सबा की एक तस्वीर पोस्ट की है जिसके बाद उनके रिश्ते को लेकर चर्चाएं और भी तेजी हो गई है। ऋतिक रोशन ने अपने इंस्टाग्राम स्टोरी पर सबा आजाद की एक तस्वीर शेयर की है। इस तस्वीर में सबा के साथ दिग्गज कलाकार नसीरुद्दीन शाह के बेटे इमाद शाह भी नजर आ रहे है। यह तस्वीर सबा और इमाद के इलेक्ट्रो-फंक बैंड मैडबॉय/मिंक का है। सबा का ये प्रोग्राम शुक्रवार की रात को पुणे में हुआ था। इस प्रोग्राम में सबा ने परफॉर्मेंस दी थी। बस सबा और इमाद का उत्साह बढ़ाते हुए ऋतिक ने इसके साथ कैप्शन में लिखा- 'कमाल कर दो तुम लोग।' अब ऋतिक भले ही सबा से अपने रिश्ते पर कुछ ना कहें लेकिन उनके इस पोस्ट के बाद फैन्स एक बार फिर से चर्चाएं करने लगे है। आपको बता दें कि सबा आजाद बॉलीवुड की कई फिल्मों में नजर आ चुकी हैं। उन्होंने साल 2008 में फिल्म 'दिल कबड्डी' से अपना करियर शुरू किया था। इसके बाद सबा आजाद को 2011 में आई फिल्म 'मुझसे फ्रेंडशिप करोगे' में देखा गया था। वह पिछली साल फिल्म 'फील्स लाइक इश्क' में नजर का चुकी हैं। सबा आजाद अभिनेत्री होने के साथ-साथ इलेक्ट्रॉनिक म्यूजिक बैंड का हिस्सा भी हैं, जिसे इमाद शाह चलाते हैं। दोनों कई सालों से साथ संगीत बना रहे हैं। सबा खान जल्द वेब सीरीज 'रॉकेट बॉयज' में भी नजर आने वाली है। इस वेब सीरीज में उनके अलावा जीम सर्भ, इस्वास्क सिंह और रेजिना कैसैंड्रा की अहम भूमिका में होंगे।

कंगना रनोट के रिएलिटी शो में अब होगा दंग लॉक-अप में पहुंचीं रेस्लिंग चैंपियन बबीता फोगाट

नई दिल्ली। कंगना रनोट के रिएलिटी शो लॉक-अप में अब रेस्लिंग चैम्पियन बबीता फोगाट ने एंट्री ली है। बबीता कंगना की जेल में पहुंचने वाली चौथी कंटेस्टेंट हैं। इससे पहले टीवी एक्ट्रेस निशा रावल, स्टैंड अप कॉमेडियन मुनव्वर फारुकी और पूनम पांडेय जेल में पहुंच चुके हैं। बबीता फोगट ने 2014 के कॉमनवेल्थ गेम्स में महिला कुश्ती में भारत को पहला स्वर्ण पदक दिलाया था। 2018 कॉमनवेल्थ गेम्स, 2010 कॉमनवेल्थ गेम्स में सिल्वर मेडल और 2012 विश्व कुश्ती चैंपियनशिप में ब्रॉन्ज मैडल जीता और बाद में 2019 में राजनीति में कदम रखा। आमिर खान की फिल्म दंगल में बबीता फोगाट का किरदार सान्या मल्होत्रा ने निभाया था, जबकि बड़ी बहन गीता फोगाट के रोल में फातिमा सना शेख थीं।

यह फिल्म इन दोनों के पिता महावीर फोगाट के अपनी बेटियों को कुश्ती चैम्पियन बनाने के संघर्ष और जज्बे पर आधारित थी। आमिर खान महावीर फोगाट के किरदार में थे। प्रोमो में भी बबीता यही कर रही हैं कि मुझ पर बनी फिल्म तो सबने देखी। अब इस रिएलिटी शो में दंगल करने आ रही हैं। बबीता फोगट ने कहा- ठमैं 'लॉक अप' जैसे शो में आने के लिए बहुत उत्साहित हूं, क्योंकि मैंने कभी ऐसा शो नहीं किया है, जो 24 घंटे तक लाइव हो। इस शो से लोगों को पता चलेगा कि मैं क्या हूं। पहले दर्शक मुझे फिल्म 'दंगल' से जानते हैं। इसलिए, अब लोगों को मेरे वास्तविक व्यक्तित्व, मेरी पसंद और ना पसंद का पता चलेगा। लॉक अप की नई कैदी के रूप में बबीता स्ट्रियोटाइप को खत्म करने, दबाव में पकड़ बनाने और फाइनल की दौड़

आलिया भट्ट की फिल्म को मिली अच्छी शुरुआत पहले दिन कमाए इतने करोड़

नई दिल्ली। आलिया भट्ट की मोस्ट अवेटेड फिल्म गंगूबाई काठियावाड़ी आखिरकार सिनेमाघरों में रिलीज हो चुकी है। इस पीरियड ड्रामा में अपने आपको फिट करने के लिए आलिया भट्ट ने कोई कसर नहीं छोड़ी और हुआ भी यहीं, सोशल मीडिया पर लोगों के रिएक्शन से लगता है कि आलिया अपनी धाक कायम करने में सफल रहीं हैं। हालांकि यह फिल्म कई कारणों से विवादों में भी रही है। गंगूबाई काठियावाड़ी के पहले दिन की प्रतिक्रिया के बारे में बात करते हुए, फिल्म ने सुबह के शो में अच्छी शुरुआत की है, जिसमें मुंबई सबसे अच्छा है। दरअसल, आर्थिक राजधानी में कई स्टेशनों पर आलिया भट्ट की इस फिल्म को, रणवीर सिंह की 83 से बेहतर ओपनिंग मिली है। बॉक्स ऑफिस इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार, गंगूबाई काठियावाड़ी ने लगभग 25 प्रतिशत की ओपनिंग ली है, जो महामारी संकट के बीच नए प्रतिबंधों को देखते हुए काफी अच्छा है। परिदृश्य को देखते हुए, फिल्म को पहले से लगभग 8-9 करोड़ रुपए की कमाई की उम्मीद है। अभी तक शाम और रात के कलेक्शन की रिपोर्ट का इंतजार है, अगर शाम और रात के शो में भी इसे देखने के लिए भीड़ अमड़ती है तो हमें कलेक्शन में बढ़ौतरी देखने को मिलेगी। फिल्म की बात करें तो इसका निर्देशन संजय लीला भंसाली ने किया है, जिन्हें हम दिल दे चुके सनम, देवदास, पद्मावत, बाजीराव मस्तानी और अन्य जैसी फिल्में बनाने के लिए जाना जाता है।

आलिया भट्ट के अलावा, फिल्म में अजय देवगन, विजय राज, शांतनु माहेश्वरी और सीमा पाहवा भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं। यह फिल्म हुसैन जैदी की नॉवेल माफिया क्वींस ऑफ मुंबई पर आधारित है। फिल्म को आंध्र प्रदेश और तेलंगाना राज्यों में डब तेलुगु संस्करण में भी रिलीज़ किया गया है, लेकिन पवन कल्याण और राणा दग्गुबाती स्टारर भीमला नायक की रिलीज़ के कारण आलिया की फिल्म को कड़ी टक्कर मिल रही है। बता दें कि भीमला नायक ने बॉक्स ऑफिस पर शानदार शुरुआत की है।

बेतरतीब 'स्पीड ब्रकरों' ने बिगाड़ी रोमांच की डगर पर 'डागर' की रफ्तार

नई दिल्ली। लव हॉस्टल की कहानी हरियाणा के कस्बाई इलाके में स्थापित एक ऐसे समाज का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें सामाजिक मान्यताएं, सही या गलत से परे, पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्थानांतरित होते हुए मन-मस्तिष्क में इतने गहरे तक धंस जाती है कि बालों की सफेदी और बच्चों का लाड-प्यार भी इसे ओवरलैप नहीं कर पाता और इन मान्यताओं की खाई में डूबे इंसान के सामने जब जिंदगी कोई अप्रिय घटना लेकर आती है तो उससे एक 'डागर' पैदा होता है, जो फिल्म में बॉबी देओल का किरदार है। लव हॉस्टल दो अलग मजहबों के प्रेमियों को लेकर ऐसी ही सामाजिक मान्यता और पूर्वाग्रह का खूनी चेहरा भी है, जहां रिश्ते-नाते, आपसी संबंध और

बच्चों के लिए ममता तक दम तोड़ देती है। इस दिखावे के ढेर पर अगर कुछ बचता है तो वो अपने समाज में सिर नीचा ना होने का मिथ्या दंभ, जो बच्चों की बलि चढ़ाने से भी बाज नहीं आता। खाप के बीच अपना तमाशा ना बने, इसलिए उन बच्चों को तमाशा पूरी दुनिया में बना दिया जाए, जिन्हें कभी दुनिया की बुरी नजर से बचाने के लिए खुद ढाल बने रहे। एक बेहतरीन विचार से जन्मी कहानी लव हॉस्टल एक्जीक्यूशन के स्तर पर कमजोर नजर आती है। लव हॉस्टल रोमांच के हाइवे पर दौड़ती एक ऐसी कहानी है, जहां अचानक आने वाले स्पीड ब्रेकर रफ्तार का मजा किरकिरा करते रहते हैं। एक स्पीड ब्रेकर गुजरने के बाद एक शानदार सफर की उम्मीद जगती है, मगर कुछ दूर चलते ही फिर कोई स्पीड ब्रेकर आ जाता है और कहानी की गाड़ी डगमग होने लगती है। इस गाड़ी को बीच-बीच में संभालने का काम बॉबी देओल के किरदार डागर ने किया है। एक निदर्यी और भाव शून्य हत्यारे के किरदार को बॉबी के चेहरे पर मेकअप की गाढ़ी परत और खिचड़ी दाढ़ी, बालों और पहनावे ने एक रहस्मयी गहराई दी है। ऐसे किरदारों में बॉबी को देखने के दर्शक आदी नहीं है और यही लव हॉस्टल का सबसे बड़ा आकर्षण है।

सांसद नुसरत जहां ने जालीदार टॉप में फ्लॉन्ट किया

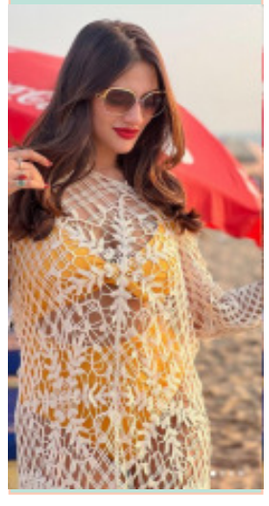

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. दीपक अरोरा द्वारा
श्री आधुनिक प्रिन्टर्स एण्ड पैकेजर्स प्रा.लि.
1-मिर्जापुर रोड नैनी प्रयागराज उ.प्र. 211008 से मुद्रित एवं एम2ए/25एडीए कालोनी नैनी प्रयागराज 211008 (उ.प्र.) से प्रकाशित
सम्पादक:-डा. दीपक अरोरा
मो0न0 09415608783
RNI No. UPHIN/2012/41154
डाक पंजीयन नं. 99/2018-20
website:www.adhuniksamachar.com

नोट:- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।